आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जनवरी, 2012 ★ माघ, 2068

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

अहिंसा तीर्थ
एक संस्कार केंद्र

"मांसाहार मानवजाति पर कलंक है।
मांस जमीनसे या झाड पर नहीं पैदा होता।
निर्दोष बेजबान प्राणियों की हत्या से
मांस तयार होता है। ऐसे पाप कार्य से
लोगों को बचाओ।"

शाकाहार प्रसारक एवं गोपालक मा. श्री. रतनलालजी बाफना द्वारा निर्मित जलगाँव का अहिंसा तीर्थ शाकाहार प्रचार-प्रसार के लिये समूचा समर्पित है। यहाँ का यूटर्न म्युझियम देखकर आजतक लाखों लोगोंने मांसांहार त्यागा है। यह प्राणियों की मुक भावनाओं तथा उनकी असीम यातनाओं को बखुबी प्रदर्शित करता है

आपका अहिंसा तीर्थ में स्वागत है।

आप जैन है, शाकाहार का प्रसार करो
सच्चे महावीर बनो, धर्म का नाम उँचा करो ।

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रवर्तक

रतनलाल सी. बाफना
गो सेवा अनुसंधान केंद्र
गोशालाही नहीं एक संस्कार केंद्र

अहिंसा तीर्थ, कुसूंबा, जळगांव. फोन : 2213415, 2270125 • www.ahimsatirth.com

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

ताणि ठाणाणि गच्छंति,
सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा,
जे संति परिनिव्वुडा।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.28

हो भिक्षाजीवी या गृहस्थ,
उपशान्त-हृदय जो होते हैं।
संयम-तप-साधन करके वे,
उन स्थानों में जाते हैं।।

जनवरी, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
माघ, 2068

वर्ष 69 अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भ्रष्टाचार पर विचार (2)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	स्वाध्याय करें, सतत आगे बढ़ें	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.	11
	पराधीनता की वेदना में स्वाधीनता की सम्भावना	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	16
	व्रत-प्रत्याख्यान से दृढ़ता एवं शान्ति	-साध्वी श्री मुदितप्रभा जी	25
अध्यात्म -	तृष्णा की गुलामी और उससे मुक्ति	-श्री सत्यनारायण गोयन्का	28
संगोष्ठी आलेख -	भ्रष्टाचार का निवारण:मूल्यपरक शिक्षा से	-डॉ. विनीत कोठारी	32
	युवापीढ़ी में संस्कार-निर्माण आवश्यक	-श्री रमेश कुमार जैन	35
	आध्यात्मिक उन्नयन के आधार	-डॉ. महावीरराज गेलड़ा	40
	समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार : कारण और निवारण	-श्री परशुराम दवे 'कुसुम'	44
	व्रतों के पालन में भ्रष्टता	-श्री सम्पतराज चौधरी	52
	बच्चों में नैतिकता का बोध	-डॉ. दिलीप धींग	67
	सूचना का अधिकार : भ्रष्टाचार-निरोध और सुशासन	-श्री चतरसिंह मेहता	76
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (3)	-*Prof. Sagarmal Jain*	61
नारी-स्तम्भ-	जैन धर्म में नारी का गरिमामय स्थान	-श्री दुलीचन्द जैन	83
पद्य-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(10)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	88
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (73)	-श्री धर्मचन्द जैन	93
युवा-स्तम्भ-	Happy New Year का संदेश	-श्री पवन कुमार जैन	96
बाल-स्तम्भ -	न्यायप्रिय राजा धर्मशील	-श्री एन.एस.आर.मूर्ति	100
कविता/गीत-	लक्ष्य को है पा जाना	-श्री दिलीप जैन	24
	जब जब भ्रष्टाचार बढ़ा है	-श्री अनिल अनवर	27
	गुरुवर आपको है वन्दन	-श्रीमती कमला सुराणा	66
	हर किसी की ज़िन्दगी में अमन चैन हो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	87
	हास्य-व्यंग्य क्षणिकाएँ	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	104
विचार-	हम भोजन में जूठा नहीं छोड़ते	-श्री आर.प्रसन्नचंद चोरडिया	99
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (22)	-संकलित	105
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		107
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		120

सम्पादकीय

भ्रष्टाचार पर विचार (2)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में जोधपुर में नवम्बर माह में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी से सम्बद्ध कतिपय आलेख दिसम्बर 2011 के जिनवाणी अंक में प्रकाशित हुए हैं। कुछ आलेख इस अंक में भी दिए जा रहे हैं। पूर्व आलेखों को पढ़कर पाठकों ने हमें सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ भी प्रेषित की हैं।

वस्तुतः भ्रष्टाचार से सभी दुःखी हैं। किन्तु उसकी चिकित्सा का सबल प्रयत्न स्वयं से ही प्रारम्भ हो सकता है। दूसरों के द्वारा कृत भ्रष्ट आचरण तो हमें अप्रिय लगता है, किन्तु अपने द्वारा किए गए भ्रष्ट आचरण के प्रति अपनी दृष्टि ही नहीं जाती। यदि जाती भी है तो भ्रष्ट आचरण से प्रतीत लाभ के समक्ष वह दृष्टि कमजोर पड़ जाती है। इसलिए हम अपना भ्रष्टाचार दूर करने में सफल नहीं हो पाते हैं। जो स्वयं का भ्रष्टाचार मिटाने में समर्थ नहीं होता वह दूसरों के भ्रष्टाचार को दूर करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता है।

कई बार लोग कहते हैं कि सज्जनों की निष्क्रियता दुर्जनों की अपराध प्रवृत्ति को बढ़ाने में सहायक है। दुर्जन संगठित हैं एवं सज्जनों का ऐसा कोई संगठन नहीं है जो समाज में पनप रही बुराइयों पर नियन्त्रण कर सके। वास्तव में सज्जन स्वयं की बुराइयों को दूर करने के लिए तो सक्रिय रहते हैं, किन्तु दूसरों के जीवन में वे दखल करना उचित नहीं मानते। भारतीय आध्यात्मिक दृष्टि का यह प्रभाव है। जहाँ भी आध्यात्मिकता की बात होती है वहाँ आत्मगत दोषों के निवारण का प्राधान्य रहता है, दूसरों के दोषों को देखना एवं दूसरों की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करना उचित नहीं माना जाता। इसलिए दुर्जनों पर नियन्त्रण प्रशासन करता है। सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों को दण्ड देने का कार्य प्रशासन का होता है, क्योंकि दुर्जन सज्जनों के वश में नहीं आते हैं और सज्जन वैसा प्रयत्न भी नहीं करते हैं। किन्तु यह भी सच है कि यदि सदाचारियों एवं सज्जनों का प्रभाव बढ़ जाय तो दुराचारी या दुर्जन उनसे कन्नी काटने लगते हैं। वे सज्जनों से आँख

मिलाने में भी संकोच का अनुभव करते हैं। वे सज्जनों को कमजोर मानकर उनको दबाने या उन पर शासन करने का प्रयत्न तभी करते हैं जब उन्हें यह लगे कि उनकी गलत प्रवृत्ति से भी सज्जन भय खाते हैं। जो डरता है, दुनिया में उसे डराया जाता है। इसी नीति से दुर्जन सज्जनों को डराते रहते हैं और अपनी असत्प्रवृत्तियों का पोषण करते रहते हैं। सज्जन मन-मसोस कर सब कुछ सहन करते रहते हैं। क्योंकि सहनशीलता को भी तो अपने यहाँ धर्म कहा गया है। सज्जन से आशय यहाँ उन लोगों से है जो स्वयं भ्रष्टाचार नहीं करते, दूसरों का बुरा नहीं चाहते तथा न ही ऐसा आचरण करते हैं, जिससे दूसरों का शोषण हो। दुर्जन व्यक्ति से आशय भ्रष्टाचारी होकर दूसरों को तंग करने वाले से हैं।

दुर्जनों को संगठन स्वार्थपरक होता है। वे मिलकर शोषण करतें हैं अथवा अनीति से धनार्जन करने के साथ दूसरों को ठगने का कार्य करते है। इस संगठन में स्वार्थ पूरा न होने पर विघटन की संभावना अवश्य रहती है। इसलिए वे एक-दूसरे से शंकाशील दृष्टि भी रखते हैं। यह शंका उनके जीवन को निश्चिन्त नहीं बनाती। वे अपराध एवं दुराचार करके सुखी नहीं हो सकते। उन्हें सदैव अपने प्रतिद्वन्द्वी से भय रहता है। दूसरी बात यह भी है कि सारे दुर्जन संगठित नहीं होते। ये अपनी क्रियाओं को गोपनीय रखकर चलते हैं, इसलिए आवश्यक नहीं कि वे संगठित हों। दुर्जनता उनका स्वभाव बन जाती है और उसका कारण उनके गलत विचार हैं। विचार के अनुसार ही आचरण होता है। दुर्जनों के विचारों का परिमार्जन सज्जनों की संगति से, सत्संग से अथवा स्वाध्याय से हो सकता है। किन्तु वे इन सबसे दूर ही रहते हैं। कुछ दुर्जन सत्संग और स्वाध्याय से परिवर्तित भी हुए हैं। किन्तु उनके चित्त को बदलना अत्यन्त कठिन है।

यह सज्जनों का ही सौजन्य है कि वे दुर्जनों का निर्वाह करके चलते हैं। सज्जनों के सहयोग पर ही दुर्जनों का जीवन टिका है। फिर भी सज्जनों के द्वारा कृत सहयोग को दुर्जन भूल जाते हैं एवं उन्हीं को अपने दुराचार का शिकार बनाते हैं और दुर्जनों की बाह्य सफलता के कारण सज्जन भ्रमित हो जाते हैं एवं उनसे पंगा मोल लेना उचित नहीं मानते। इसे सज्जनों की दुर्बलता कहा जा सकता है। उनके पास सदाचार एवं नैतिक मूल्यों का बल है, जिसका प्रभाव न्यूनाधिक रूप में दुर्जनों पर पड़ना सम्भव है। इसलिए सज्जनों को सक्रिय होने की आवश्यकता है। सही जीवन-मूल्यों का प्रचार-प्रसार उनका कार्य है। कई

संस्थाएँ इस क्षेत्र में कार्य करती भी हैं, तथापि इसे और गति दिए जाने की आवश्यकता है। सज्जनों की एकता का बल दुराचार या भ्रष्टाचार को समाप्त करने में महती भूमिका का निर्वाह कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि भ्रष्टाचारी का समाज में सम्मान करना बन्द कर दिया जाए तथा सदाचारी को प्रशंसित किया जाए। मंचों पर शोभा सदाचार की हो, भ्रष्टाचार की नहीं। यह सज्जनों की एकता एवं सक्रियता का एक सहज सम्भव सकारात्मक रूप है।

सम्प्रति भ्रष्टाचार के विरोधी स्वर गूँज रहे हैं। इस माहौल से भ्रष्टाचारी आतंकित हैं एवं ईमानदारी से जीवन-यापन करने वालों को कुछ नई आशा की किरण मिल रही है। सूचना का अधिकार भी इसमें सहयोगी बना है। आज कोई भी व्यक्ति सरकारी कार्यालय में इस अधिकार के अन्तर्गत विशिष्ट जानकारी प्राप्त कर सकता है, जिससे अवरुद्ध उचित कार्य सम्पन्न हो रहे हैं तथा सरकारी तन्त्र सही ढंग से काम करने के प्रति गतिशील हुआ है। गलत कार्य करने से सरकारी अधिकारी हाथ खींचने लगे हैं। जन लोकपाल बिल जब कानून के रूप में आ जायेगा तो इसका भी कुछ सकारात्मक प्रभाव दिखाई देगा।

भ्रष्टाचार निवारण में प्रत्येक व्यक्ति का एक महत्त्वपूर्ण योगदान यह हो सकता है कि वह अर्थ की शुचिता के महत्त्व को समझकर जीवन में उसे समुचित स्थान दे। अर्थ की शुचिता परम शुचिता है। बाह्य शुद्धि उसके समक्ष कोई महत्त्व नहीं रखती। जैन दर्शन में श्रावक बनने की भूमिका में मार्गानुसारी के जो 35 गुण बताए गए हैं, उनमें न्यायसम्पन्न विभव सर्वाधिक आवश्यक एवं प्रथम गुण है। न्याय नीति से धनार्जन से जो शान्ति एवं संतोष की प्राप्ति होती है वह अनीति से अर्जित धन से कदापि नहीं। अनीति से अर्जित धन मनुष्य में दुर्गुणों को पनपने की उपजाऊ भूमि का काम करता है। धन जीवन का एक साधन है, साध्य नहीं। उसके लिए जीवन को बर्बाद नहीं किया जा सकता। अर्थ की शुचिता पर प्रायः सभी धर्म-दर्शन बल देते रहे हैं। मनुस्मृति में कहा गया है-

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।-मनुस्मृति, 5.106

जैन, बौद्ध, ईसाई और इस्लाम धर्म भी आजीविका की शुद्धि पर बल देते हैं। किन्तु एक विचारणीय बिन्दु यह है कि धन की प्राप्ति को भारतीय परम्परा में पुण्य के साथ जोड़ दिया गया है। भ्रष्टाचार की अभिवृद्धि में यह भारतीय मान्यता भी सहायक सिद्ध हुई है। इस मान्यता के कारण अनीति से

धनार्जन को भी लोग पुण्य का फल मानने लगे हैं। लोग यह भूल गये कि धन का अर्जन हमें मात्र न्याय-नीति से ही करना है। चोरी जब पाप है तो उसके द्वारा कमाया गया धन पुण्य का फल कैसे हो सकता है? उद्यम अथवा पुरुषार्थ आजीविका के लिए भी आवश्यक है, किन्तु उद्यम करने पर भी किसी को फल मिलता है और किसी को नहीं। इसलिए कहा जाता है कि पुण्य का योग होने पर फल की प्राप्ति होती है। पुण्यहीन को श्रम करने पर भी अभीष्ट की प्राप्ति नहीं होती। पुण्य का अर्जन व्यक्ति के व्यवहार और सद्गुणों से होता है। जितना सोच निर्मल होगा एवं व्यवहार सुन्दर होगा उतना ही पुण्य अभिवृद्ध होगा।

निर्धन हो या धनवान सबको सोच निर्मल करने की आवश्यकता है। निर्धन के मस्तिष्क में भी धन की महिमा है एवं वह धनिकों से ईर्ष्या और द्वेष करता रहता है। धनिकों द्वारा किया गया प्रदर्शन उसे रास नहीं आता। धनिक जब उसका सहयोग करते हैं तो उसे अच्छा लगता है। किन्तु निर्धन की योग्यता का अभिवर्द्धन आवश्यक है। शिक्षा उसका एक बड़ा माध्यम है। नैतिक मूल्यों के साथ मिली हुई शिक्षा जीवन को नई दिशा प्रदान करती है। मात्र अर्थ सहयोग से काम नहीं चलता। उदाहरणार्थ सरकार के द्वारा अनुसूचित जाति-जनजाति के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है, किन्तु अधिकांश छात्र अध्ययन में उसका सदुपयोग नहीं करते। उस छात्रवृत्ति का अन्य कार्यों में उपयोग कर लेते हैं एवं योग्यता जहाँ की तहाँ बनी रहती है। मानव की यह प्रवृत्ति तभी बदल सकती है जब उसका सोच उच्च हो। निर्धन को ऊँचा उठाने के लिए पहले उसे मदिरा के कीचड़ से निकालना होगा, धूम्रपान के धुएँ से दूर करना होगा, स्वाभिमानता पूर्वक धन अर्जित करने का पाठ पढ़ाना होगा। अर्थ सहयोग की योजनाएँ तभी कारगर सिद्ध हो सकेंगी और यह कार्य मात्र सरकार के द्वारा पूर्ण होने योग्य नहीं है। इसमें समाजसेवियों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है।

भ्रष्टाचार निवारण हेतु बाह्य और आभ्यन्तर दोनों उपायों की आवश्यकता है। बाह्य उपाय व्यवस्था बनाए रखने के लिए उपयोगी है तथा आभ्यन्तर उपाय भीतरी तृष्णा पर लगाम लगाने के लिए आवश्यक है। भीतर की समझ ज्यों-ज्यों बढ़ेगी त्यों-त्यों आम जनता यह समझेगी कि बाह्य चकाचौंध की अपेक्षा नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से युक्त जीवन अधिक महत्त्वपूर्ण एवं संतोषप्रद होता है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

समाधारणता की त्रिसूत्री

प्र. मणसमाहरणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

उ. मणसमाहरणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाण-पज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च निज्जरेइ।।

प्र. वयसमाहरणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

उ. वय-समाहरणयाए णं वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहेइ। वय-साहारण-दंसण-पज्जवे विसोहेत्ता सुलह-बोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लह-बोहियत्तं निज्जरेइ।।

प्र. काय-समाहरणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?

उ. काय-समाहरणयाए णं चरित्त-पज्जवे विसोहेइ। चरित्त पज्जवे विसोहेत्ता अहक्खाय-चरित्तं विसोहेइ। अहक्खाय-चरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ-पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ।।

अर्थः-

प्र. भगवन्! मनःसमाधारणता से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उ. मन की समाधारणता से जीव एकाग्रता प्राप्त करता है। एकाग्रता प्राप्त करके ज्ञान-पर्यवों को प्राप्त करता है। ज्ञान-पर्यवों को प्राप्त करके वह सम्यक्त्व को विशुद्ध करता है और मिथ्यात्व की निर्जरा करता है।

प्र. भगवन्! वचन-समाधारणता से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उ. वचन की समाधारणता से जीव साधारण वाणी के (कथनयोग्य पदार्थ विषयक) विषयभूत दर्शन के पर्यायों को विशुद्ध करता है। वाणी के विषयभूत दर्शन के पर्यायों को विशुद्ध करके वह सुलभ-बोधिता को प्राप्त करता है और दुर्लभ-बोधिता की निर्जरा करता है।

प्र. भगवन्! काय की समाधारणता से जीव को क्या प्राप्त होता है?

उ. काय-समाधारणता से चारित्र के पर्यायों को विशुद्ध करता है। चारित्र पर्यायों को विशुद्ध करके वह यथाख्यात चारित्र की विशुद्धि द्वारा केवली में विद्यमान चार वेदनीयादि अघाती कर्मों का क्षय करता है, तदनन्तर वह यथाख्यात चारित्र की विशुद्धि करके केवली में विद्यमान चार (वेदनीयादि अघाती) कर्मों का क्षय करता है और मुक्त हो जाता है। परिनिर्वाण को प्राप्त होता है और समस्त दुःखों का अन्त कर देता है।

-उत्तराध्ययन सूत्र, उनतीसवाँ अध्ययन : सम्यक्त्व पराक्रम, सूत्र-56-58

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

आध्यात्मिकता और व्रत-नियम

- आज के युग की यह विशेषता और विचित्र प्रवृत्ति है कि मनुष्य भूल करने पर भी अपनी गलती को मानने के लिए तैयार नहीं होता, दूसरों के सामने तो हरगिज नहीं। यहाँ तक कि बहुत से लोग तो दोष स्वीकार करना मानसिक दुर्बलता मानते हैं। भूल को स्वीकार न करना ही आज के मानव का सँबसे बड़ा दुर्गुण है, दोष है। इस दोष को, दुर्गुण को निकालने का, दूर करने का अमोघ साधन है- आध्यात्मिक ज्ञान। जब मनुष्य अपनी आत्मा का ज्ञान करने की ओर उन्मुख होता है तो वह स्वयं ही, बिना किसी दबाव के, अपने दोषों को स्वीकार करता है और उन्हें निकाल फेंकता है।
- ज्ञान जब मन में, अपने सही रूप में प्रगट हो जाता है तब आदमी पैसे को साधारण चीज़ समझकर चलता है। वह सोचता है कि पैसा अलग चीज़ है और हमारा ज्ञान गुण अलग है। पैसा नाशवान है और ज्ञान शाश्वत है।
- कोई कितना ही बड़े से बड़ा सम्पत्ति वाला क्यों न हो, शरीर छूटने के साथ ही उसका अरबों-खरबों का धन यहीं धरा रह जाता है, पर-भव में वह किंचित्मात्र भी साथ नहीं चलता। एक पैसा भी साथ नहीं जाता, सब यहीं रह जाता है। इसी तरह एक आदमी सामायिक करता है, रात्रि भोजन नहीं करने का नियम ले रखा है, शीलव्रत का खंध लिया है- ये नियम कब तक रहेंगे? ये नियम भी शरीर छूटने के साथ ही छूट जाते हैं। देह छूटने के साथ धन भी छूट गया और व्रत-नियम भी छूट गये। किन्तु एक फर्क है, वह यह कि धन छूटने के साथ ही धन का जो सुख था, आनंद था, वह सुख भी यहीं छूट गया, पर व्रत-नियम के पालन से जो पुण्य-लाभ संचित किया है, वह परलोक में भी साथ चलेगा। व्रत तो इसी जन्म तक रहे, लेकिन व्रत-पालन का लाभ, उससे उपार्जित किया हुआ पुण्य परलोक में भी उसके साथ चलेगा। व्रत-नियमों से उसकी आत्मा की जो शक्ति बढ़ी है, वह परलोक में भी साथ रहेगी।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

स्वाध्याय करें, सतत आगे बढ़ें

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा 12 सितम्बर, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में फरमाए गए प्रवचन का संपादन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने किया। **-सम्पादक**

षट्काय के जीवों को अभय प्रदान कर अभयदयाणं पद को सुशोभित करने वाले अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात्, विवेक के माध्यम से जीवों पर करुणा करने की सतत प्रेरणा प्रदान करने वाले जीवनदाता, संयम प्रदाता, अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन के पश्चात्...।

बन्धुओं!

अनुभूत सत्य है कि आटे के लोभ में आकर मछली कांटे में फंस जाती है। रूप का दीवाना बनकर पतंगा आग में अपने प्राण झोंक देता है। शब्दों की प्रियता में आसक्त होकर लम्बी कूच करने वाला हिरण पाश में बंध जाता है और उसके प्राण पंखेरू उड़ जाते हैं। विशाल काय कहलाने वाला, मदोन्मत्त स्वभाव वाला हाथी काम-राग में ऐसा आसक्त बनता है कि वह मारा जाता है। ये बातें आपके अनुभव में हैं। प्रश्न यह होता है कि ये सारे फंसने वाले प्राणी बुद्धि से विफल कहलाते हैं, तिर्यञ्च प्राणी हैं जिनके पास सोचने-समझने की क्षमता कम है। आश्चर्य तो यह है- मननशील कहलाने वाला मानव जो बुद्धि का निधान कहलाता है, होशियार माना जाता है, वह क्यों भटक रहा है? मूर्ख गड्ढ़े में गिर जाय तो आश्चर्य नहीं। जिनके आँखों की रोशनी नहीं है, अंधे हैं वे गड्ढ़े में गिर सकते हैं। लेकिन जिसकी दोनों आँखें ठीक हैं, चश्मा लगा हुआ है वह यदि गड्ढ़े में गिरता है तो क्या कहना? कोई अंधा गिर जाय तो आसपास खड़े लोग कहेंगे उस बिचारे के नज़र नहीं है, वह अंधा है।

जो बुद्धि के सागर कहलाते हैं, अपने-आपको समझदार मानते हैं वे यदि गड्ढ़े में गिरें तो? आप अपने आपको समझदार मानते हैं या भोले? महाराज रे खने तो अल्ला री गाय हैं। शेर-हिरण साथ पानी पी रहे हैं, शांति के देवता और

भगवान के उपासक हैं और यहाँ से जाते ही कलह करें, झगड़ा हो तो सुनने वालों को आश्चर्य होता है कि धर्म-स्थान में शान्त रहने वाले बाहर क्यों उछल रहे हैं? मैंने पूछा- आप समझदार हैं या भोले? आप भोले तो नहीं हैं। जो अपने-आपको भोला मानता है कहना होगा वह सबसे ज्यादा होशियार हैं। आप कभी भोले बन जाते हैं कभी होशियार। देना हो तो भोले और लेना हो तो होशियार। समझदार कहलाने वाले अपने-आपको भोला कहें तो? आज सब अपने-आपको डेढ़ होशियार समझते हैं। आज जगह-जगह झगड़ा क्यों हो रहा है? स्थान-स्थान पर कलह का वातावरण क्यों बन रहा है? आज जिस किसी से पूछो तो जबाब मिलता है- मैं किसी से कम नहीं। मैं क्यूँ सुणां? मैं किसी की सुनने वाला नहीं।

गुरुदेव फरमाते हैं- आपका और हमारा जीव कभी पृथ्वीकाय में था। अप्काय में भी था। यहाँ तो एक कहे, चार सुणावे। आज सुनने की क्षमता नहीं रही। मैं क्यूँ सुणां? रोटी घर री खावां। आप घर की रोटी खाते हैं वह तो ठीक है, पर कलह और झगड़े का वातावरण होगा तो लोग अंगुली निर्देश करते हैं। हमें मानव जन्म मिला, उत्तम कुल मिला, उत्तम धर्म मिला, सदुरु का सान्निध्य मिला तो हम ऐसी साधना करें जिससे हमें भव-भव में भटकना न पड़े।

अठे आवे जणे सब भोला है, शांति के देवता हैं। कीड़ी दिख जाय तो हाथ में पूँजनी लेकर हटाते हैं। अठे कीड़ियों की दया पाले और बारे जाय तो.....?

कहाँ हमारा जीवन है? कहते क्या हैं, करते क्या हैं? जब तक कथनी-करनी में एकरूपता नहीं आयेगी तब तक हमारा कल्याण हुआ नहीं और कल्याण होने वाला भी नहीं है। अठे कोई सुणाय दे तो, सुणने वाला मोटा है। सुनते सब हैं। यहाँ का उपदेश साथ लेकर जाने वाले कितने हैं? व्याख्यान सुणने आवै, व्याख्यान सुणे और अठे इज बैठको झटकने जावे।

यहाँ आने वाले जो भी साधना करते हैं उसका असर बाहर नज़र आना चाहिये। घर-दुकान-संघ-समाज में जायें या परिवार में रहें तो यहाँ का सुना उपदेश कहीं पर क्यों न चले जायं, रहना चाहिये। अगर ऐसा नहीं तो लोग कहेंगे- आंरो जीवन देखो, रोज व्याख्यान सुणे, महाराज रा भक्त कहलावे, पर इनका जीवन वैसा का वैसा है। कभी बेटा गलती करे तो बाप का नाम समुज्ज्वल होने के बजाय बाप को भी सुनना पड़ता है। आप गुरु के भक्त हैं और बोलने का विवेक नहीं तो? लोग कहेंगे- आचार्य भगवन्त विराज रहे हैं, भक्तों में क्या हो रहा है?

हम अपने-आपको शान्त बनाएँ यह पहली जरूरत है।

हम कहेंगे कुछ, करेंगे कुछ तो सबसे पहले आत्मसमाधि नहीं रहेगी। एक भाई साहब हाथ में आग रो गोलो लेयने कहे कि इसे मैं सामने वाले पर फेंकूँगा। आग के गोले से अगला तो जलेगा जब जलेगा, वह जले या नहीं, खुद के हाथ तो जलेंगे ही। कांच के महल में रहने वाला दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंकता। आगमवाणी कह रही है- अपने आपको बदलो। पर आज अपने आपको बदलने या परिष्कृत करने के बजाय कहते हैं- क्या करें, जमाना ही ऐसा है। अरे भाई! जमाने को क्यों दोष दे रहे हो? दोष में तो हम रहे हुए हैं। आज भी ऐसे लोग हैं जो हजारों सुनने के बाद जबाब तक नहीं देते।

समझदार, बुद्धि के निधान कहलाने वाले मानव अनन्त काल से संसार में क्यों भटक रहे हैं? एक बात निवेदन कर दूँ कि जीव का स्वभाव भटकने का नहीं है। जीव का स्वभाव ऊर्ध्वगमन का है। भटकने-अटकने और चौरासी के चक्कर खाने की जरूरत नहीं। भटकने का कारण क्या है? अनुभवी कह रहे हैं- पाये हुए का जो उपयोग नहीं करता उसे भटकना पड़ता है। जो साधन-सामग्री पुण्यवानी से मिलाई, उसका उपयोग नहीं किया, इसीलिये भटकना है। उपयोग करेंगे तो सिद्ध हो जायेंगे, नहीं तो नरक के मेहमान बनना पड़ेगा।

कई दिनों से कहा जा रहा है कि देवता तीन कारणों से पश्चात्ताप करते हैं। पहला कारण बताया जा रहा है- पूर्व जन्म में आगम स्वाध्याय का अवसर मिला था, परन्तु मैंने आगम का अध्ययन नहीं किया, श्रुतज्ञान का स्वाध्याय नहीं किया। एक बात पूछूँ- आप आगम वाणी का स्वाध्याय कर सको तो कर सकते हो, प्रतिक्रमण याद करना हो तो, दशवैकालिक याद करना हो तो? आप थांरी-मांरी में इधर-उधर की बातों में समय बर्बाद कर देंगे, पर आगम स्वाध्याय का कहा जायेगा तो अधिकांश का जवाब होगा-समय नहीं है।

स्वाध्याय नहीं तो आत्मा का विकास नहीं। क्यों भटक रहे हो? क्यों अटक रहे हो? हमें अवसर प्राप्त हुआ था, पर हमने आगम वाणी का स्वाध्याय नहीं किया। यह बात कौन कह रहे हैं? रोज-रोज क्या पढ़ना? अरे भाई! एक शब्द भी श्रद्धा के साथ पढ़ा जायेगा तो उससे अनन्त काल की निर्जरा होने वाली है। एक शब्द का आचरण किया जाय, अनुप्रेक्षा की जाय तो उससे भव-भ्रमण मिट सकता है। एक-एक शब्द, एक-एक वाक्य, एक-एक गाथा में रहस्य भरा हुआ है।

देवता पश्चात्ताप करते हैं। आगमवाणी के स्वाध्याय के लिए कौन-

कौनसी अनुकूलता होनी चाहिये? देवता कह रहे हैं- मुझे सारी अनुकूलताएँ मिली, साधन मिले, योग्यता मिली। अनुकूल क्षेत्र मिला, स्वास्थ्य ठीक मिला, आचार्य-उपाध्याय का सान्निध्य भी मिला, पर मैंने आगम वाणी का स्वाध्याय नहीं किया। स्वाध्याय के लिए शरीर की स्वस्थता भी आवश्यक है। नहीं तो पुस्तक लेकर बैठें और सिर दुःखने लगे तो? उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर ने कहा- पाँच बातें ऐसी है जो स्वाध्याय में बाधा उत्पन्न करने वाली है।

थंभा कोहा पमाएण रोगेण आलस्सएण य।

पाँच कारण साधना में, आराधना में रुकावट पैदा करने वाले हैं। पहला कारण है थम्भा यानी अहंकार। मैं और उणरे कनासुं पढूँ? ज्ञानी कह रहे हैं ज्ञान चाहे, जहाँ मिले, ले लेना चाहिये। अहंकार है तो ज्ञान नहीं हो सकता। इतिहास में आता है- दो संत ज्ञान लेने दिल्ली पहुँच गये। पुराने जमाने में श्रावकों को ऐसी जानकारी होती थी कि संत-सतीवृन्द भी श्रावकों के पास पहुँचते थे और उनसे ज्ञान लेते थे। जोधपुर में सम्पतराज जी डोसी जैसे श्रावक थे, जिनसे संत-सतियाँ अध्ययन करती थीं। दो संत दलपतराय जी श्रावक के पास दिल्ली पहुँचे।

ज्ञान किसे दिया जाता है? कौन ज्ञान का अधिकारी है? श्रावक जी ने पूछा- "आपको कौनसा शास्त्र पढ़ना है? अच्छा है, आपके माध्यम से मेरा भी स्वाध्याय हो जायेगा। ज्ञान का पुनरावर्तन जरूरी होता है। आप बोलते हैं-

सरस्वती के भण्डार की बड़ी अपूर्व बात।
ज्यों खरचे त्यों-त्यों बढ़े, बिन खरचे घटि जात।।

संत ने सोचा- मैं संत हूँ। मैं यदि श्रावकजी से कहूँ कि मुझे दशवैकालिक पढ़ाओ तो हल्की बात होगी। संत ने कहा- मुझे भगवती सूत्र पढ़ना है। ज्ञान एक कोड़ी रो कोनी, प्रतिक्रमण आवे कोनी और पढ़णो भगवती सूत्र। कई लोगों की आदत होती है वे दो-चार प्रश्न रटियोड़ा राखे, कोई आवे तो बोलता रहे, लोग जाणे याने अच्छो अभ्यास है। याने कोई सामायिक के पाठ पूछ ले या प्रतिक्रमण की पाटियां पूछ ले तो याद नहीं और चर्चा लम्बी-चौड़ी करे। सामायिक-प्रतिक्रमण जरूरी है, चर्चा आगे की बात है।

याद करे तो याद हो जावे। याद नहीं करे तो कीकर याद होवे। संत ने कहा- मुझे भगवती पढ़ना है। श्रावकजी अनुभवी थे। एक-दो प्रश्न करके समझ गये कि संत को कुछ आता-जाता तो है नहीं। श्रावकजी ने महीने भर में भगवती की वाचना देकर रवाना कर दिया।

दूसरा संत आया। वह विवेकवान था। ज्ञान लेने वाला था। आपको कभी नाली में चमचमाता पड़ा रत्न दीखे तो थे लेवो या नहीं? पड़ियों अपावन ठौर पे कंचन तजे न कोय।

अच्छी वस्तु कहीं मिले उसे ग्रहण कर लेना चाहिये। संत से पूछा गया- क्या पढ़ना चाहते हो? जबाब था- श्रावकजी ! मुझे ज्यादा ज्ञान नहीं है, आप जो पढ़ायें, वह ठीक है। आप जो वाचना देंगे, मैं उसे लेने को तैयार हूँ। संत में विनय है, अहंकार नहीं, फिर समर्पण का गुण भी रहा हुआ है। एक गाथा में छः महीने लग गये।

गुरुदेव फरमाते हैं- श्रावकजी ऐसे जानकार थे और ज्ञान लेने वाले भी विवेकवान थे कि उन्हें एक गाथा में 27 शास्त्रों का ज्ञान दे दिया। पहले संत आए, एक महीने में भगवती पढ़कर रवाना कर दिया, दूसरे संत को 27 शास्त्रों का ज्ञान दिया।

ज्ञान मिलाने में विनय गुण चाहिये। फटी जेब में पैसे डालोगे तो क्या होगा? अभिमानी के हृदय में टिक नहीं सकता।

अहंकारी को ज्ञान दिया जायेगा तो ऊपर सुं भरे नीचे झरे उणरो गोरखनाथ कांई करे, वाली बात हो जायेगी। श्रुत स्वाध्याय के लिए कौन-कौनसी अनुकूलता चाहिये? उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार ज्ञान-प्राप्ति में पाँच बाधक कारण बताये जा रहे हैं। अज्ञानी कहलाने वाले तिर्यञ्च पशु प्राण गंवाते हैं, हम कर्म काटने में आगे नहीं बढ़े तो कोई प्रवृत्ति ऐसी नहीं करें जिससे नये कर्म बन्धन हों। आप सामायिक कर सकें या नहीं, ऐसा काम तो न करें जिससे लोग कहें ऐ धर्मात्मा, ऐ ऐड़ा गुरु रा शिष्य! जरूरत है आप पाप से छूट जायं धर्म स्वतः हो जायेगा। आप एक संकल्प कर लें कि हम ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जिससे हमारी आत्मा भारी हो। आप पाप से हटकर धर्म-साधना में आगे बढ़ें यही मंगल भावना है। ■

अभिमत

श्री गौरव कुमार जैन

जिनवाणी (अक्टूबर-2011) में आपका युवा-स्तम्भ 'दिमाग को धीमा करता है झूठ' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। हमारे दिमाग में बहुत सारी बातें ऐसी होती हैं, जिनका हमारे जीवन में कोई उपयोग नहीं होता और धीरे-धीरे ये झूठी बातें हमारी याददाश्त को कम करती जाती हैं। समाज के लिए एवं हमारे युवा वर्ग के लिए यह लेख बहुत प्रेरणास्पद है तथा सही दिशा प्रदान करेगा।

-5/90, गाँधीनगर, जयपुर-302015 (राज.)

प्रवचन

पराधीनता की वेदना में स्वाधीनता की सम्भावना

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. द्वारा सोमवार, दिनाँक 15 अगस्त, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

पराधीनता की वेदना असह्य प्रतीत होने पर स्वाधीनता की उत्कृष्ट लालसा से पराधीनता को पूरी तरह समाप्त कर स्वाधीन बनने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और स्वाधीनता के लिए स्वाधीनतापूर्वक स्वाधीन बनने के मार्ग पर अग्रसर होकर मुमुक्षुओं को पराधीनता की वेदना को असह्य अनुभव कराने की प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्तों को वन्दना करने के पश्चात्...।

जीवन में ऐसे दृश्य इने-गिने आये। आज सुबह पराधीनता के कारण भीषणतम वेदना से छटपटाता हुआ एक जीव देखने का संयोग बना। जीव कितना परवश बन जाता है? अपनी स्वाधीनता का दुरुपयोग करके जीव स्वयं किस पराधीनता की शृंखला में आबद्ध हो जाता है, इसका अनुभव हुआ। हमने सुखविपाक सूत्र को प्रारम्भ करने से पूर्व सरसरी दृष्टि से दुःखविपाक को देखने का प्रयास किया था एवं उसमें नरक के दुःखों का वर्णन जाना था। हमने आंखों के सामने इस जीवन में नरक की वेदना नहीं देखी है, पर मनुष्य के भव में तिर्यञ्च के भव की भीषण वेदनाओं को देखा है। कई वेदनाएँ चित्रों से भी प्रकट हो जाती हैं। जब अहिंसा के प्रचारक लोग इस तरह के चित्र प्रदर्शित करते हैं तो चित्र देखकर वेदना का अनुमान हो जाता है। पीपाड़ में बैंगलोर के संघ समर्पित भक्त दिनेश जी-सीमा जी भंसाली ने क्रूरता पूर्वक अत्याचार के उन दृश्यों को चित्रों के माध्यम से दिखाया तो देखने वाले व्यक्ति का दिल कांप गया। 1993 की घटना आँखों के सामने आती है। अगस्त के महीने में 119 गायों की खाल एक दिन, 70 गायों की खाल दूसरे दिन बरामद की गई। खालें कैसे निकाली गई है? गायों के चारों पैरों में नुकीले कीले ठोके गए, फिर उन गायों को लौहार लोहे के घन से जैसे मारते हैं, जैसे आप कपड़े धोते समय कभी धोवने से कपड़ों को

कूटते हैं, वैसे गायों को एक बार इधर से एक बार उधर से लाठी से पीटा गया। गाय के चमड़े को पीट-पीट कर नरम किया गया फिर जिन्दा अवस्था में खाल उतार ली गई। 1993 के जयपुर के चौमासे में सुना कि अलकबीर कारखाने के चित्र पत्र-पत्रिकाओं में देखते हैं तो लगता है पराधीनता कितनी जटिल होती है।

यह पराधीनता पैदा किसने की? हम यहाँ क्या करने आए हैं? जब तक पराधीनता असह्य नहीं लगे, स्वाधीनता का दरवाजा खुल नहीं सकता। क्या मानव जीवन पराधीनता की शृंखला में ही बिताने को पाया है?

बहन को नवकार मन्त्र, ॐ शांति आदि बुलाने का प्रयास प्रारम्भ में सार्थक नहीं हो पाया। तड़फ रही थी, भयंकर बेचैनी में। सुबह का वह दृश्य अभी भी घूम रहा है। मेरे भीतर व्याकुलता कैसे जगे? मैथिलीशरण गुप्त ने एक साधक से पूछा- आप पथ प्रदर्शन कीजिये। राष्ट्रकवि को जबाब मिला- चलने की रुचि में पथ का प्रदर्शन होता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू वहीं पर थे। हमारे कई राष्ट्रपति बहुत अच्छे आध्यात्मिक विचारक रहे। वे कहने लगे- "स्वामी जी! चलना जानते हैं, चलना चाहते भी हैं, पर चल नहीं पाते।" डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी, डॉ. सर्व पल्ली राधाकृष्ण, डॉ. जाकिर हुसैन, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. शंकरदयाल शर्मा आध्यात्मिकता से जुड़े हुए थे।

चर्चा में एक समाधान मिला। सबके लिये उपयोगी समाधान- **"नहीं चलने की वेदना में ही चलने का सामर्थ्य निहित है।"** यह सामर्थ्य किसी डिपार्टमेंट स्टोर से नहीं मिलेगा। जोधपुर के बाजार में नहीं मिलेगा। सामर्थ्य गुरु महाराज नहीं देंगे। गुरु महाराज तो क्या, स्वयं भगवान भी नहीं दे सकते। भगवान महावीर स्वामी की सन्निधि में 2100 मोक्ष में गये। कितने में से? पचास हजार में से। पचास हजार में से इक्कीस सौ मोक्ष गये, कितना प्रतिशत हुआ? एक श्रोता- लगभग चार प्रतिशत। आप हिसाब जानते हैं। हाँ, ठीक है 4.2 प्रतिशत भगवान महावीर की मौजूदगी में मोक्ष गये। वह भी चौथे आरे में। अभी तो बहाने बनाने वाले कह देंगे कि मोक्ष के दरवाजे बन्द हैं। पर भगवान की मौजूदगी में मात्र 4.2 प्रतिशत मोक्ष गये । भगवान मोक्ष नहीं पहुँचा सकते। कल सायं आध्यात्मिकता को लेकर चर्चा हुई। संघ-संरक्षक मोफतराज जी मुणोत ने बहुत सुन्दर प्रश्न किया। उनका प्रश्न था- हम भगवान को अवतार नहीं मानते तो फिर उनकी भक्ति क्यों करते हैं? हमको आगे बढ़ना है। ऐसे प्रश्न उठने चाहिये। लोगस्स के पाठ में आता है- सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु। हमारे भीतर में छटपटाहट

तो जगे।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद को समाधान मिला-'नहीं चलने की वेदना में ही चलने का सामर्थ्य निहित है।'' डॉ. राजेन्द्र बाबू भगवान महावीर जहाँ के थे, वहीं के थे। चेटक राजा जिस गणतंत्र का अध्यक्ष था उस वैशाली में कोई भी राहगीर किसी अजनबी लड़की से रास्ता नहीं पूछ सकता था। राजेन्द्र बाबू को जापान से भेंट में पेन मिला। वह उन्हें बहुत प्रिय था। एक दिन टेबल साफ करते समय सफाई कर्मचारी के हाथ से पेन गिर कर टूट गया। वह कर्मचारी बहुत घबराया, सोचने लगा- मेरी नौकरी जायेगी। घबराहट में एक तरफ जाकर बैठ गया। राजेन्द्र बाबू को पता चला कि पेन टूट गया। वे कर्मचारी से बोले-''डरो मत, पेन की आयुष्य इतनी ही थी, तू क्या करता? मेरे हाथ से टूट जाती तो? उसकी आयु इतनी ही थी। बनाने वाला कोई, उपयोग करने वाला कोई, तुम्हारे हाथ से टूट जाना लिखा था।'' वे अध्यात्म रुचि वाले व्यक्ति थे। काँग्रेस अधिवेशन में प्रस्ताव वाला कागज कहीं नष्ट हो गया, नेहरूजी घबरा गये, पर डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी ने हू-ब-हू लिख दिया। उन्होंने उस कागज को एक बार पढ़ा था। देश सेवा में जुड़ने के लिये राजेन्द्र बाबू ने अपने बड़े भाई को जो पत्र लिखा वह भी अत्यन्त मार्मिक है। बड़े भाई से रू-ब-रू बात करने की हिम्मत नहीं हो रही थी, इसलिए पत्र लिखा। मार्च 1910 का पत्र है वह।

नहीं चलने की वेदना में चलने का सामर्थ्य निहित है। सोने का पिंजरा है, सोने की कटोरी है, खिलाने वाली राजरानी है, द्राक्षा-दाड़िम का रस है, सर्दी में मखमल ओढ़ा दिया जाता है, गर्मी में पंखा झुलाने वाली दासियाँ बैठी हैं। हर प्रकार की सुरक्षा है। पुराने जमाने में आज की तरह पंखें नहीं थे, उस समय कपड़े के पंखें होते जो डोरी से खींचे जाते। वैसी सुविधा में रहने वाला तोता भी जंगल में जाने का मौका मिलते ही पिंजरे से उड़कर मुक्त गगन में चला जाता है। बाहर जंगल में कहाँ रहना, क्या खाना कोई पता नहीं, पर वह स्वतंत्र विचरण करना चाहता है, पराधीनता उसे इष्ट नहीं। क्या इस तथ्य को जानते हैं आप? जानते हैं तो वापस पिंजरे में क्यों जाना चाहते हैं, क्यों घर जाते हैं। उस तोते को पिंजरे में सब सुख है, सुविधा है, कोई खतरा नहीं, फिर भी वह स्वाधीन रहना चाहता है।

पराधीनता की पीड़ा कब अनुभव होगी? जब तक पराधीनता की वेदना नहीं लगेगी तब तक स्वाधीनता की लालसा नहीं जगेगी। स्वाधीनता की उत्कृष्ट लालसा का नाम है-संवेग।

सुदत्त अणगार को घर पर सुमुख गाथापति आहार बहरा रहे हैं। उस क्षण यह लालसा जग रही है, संवेग प्रकट हो रहा है। देश के स्वाधीनता दिवस पर उसी की कुछ चर्चा चल रही है। इजराइल के लोग हमेशा प्रतिज्ञा करते थे कि अगले साल हम स्वाधीन इजराइल में मिलेंगे। भारत की स्वतंत्रता के बाद इजराइल देश स्वतंत्र बना। आप नक्शा देख लीजिये, इजराइल राजस्थान से आधा भी नहीं है। इजराइल के चारों तरफ ऐसे देश बैठे हैं जो नाक में दम करने वाले हैं। ओसामाबिन लादेन शर्मिला था। वह करोड़पति बाप की 52 संतानों में से एक था। ओसामा के पिता ने आठ के बाद नौवीं औरत से विवाह किया। वह नौंवी औरत ओसामा की माँ छोटे से कमरे में दासी की तरह रहती थी। बाकी सभी पत्नियाँ पैसे वाली थी। वह घर के बंधन में पराधीन रहती। पी.एल.ओ. के नेता ने ओसामाबिन लादेन को देखते ही कह दिया कि यह लड़का एक दिन दुनियाँ को हिला देगा। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका में ट्विन टॉवर गिरा था। वह फिलीस्तीन मुक्ति मोर्चे का नेता जिसकी पुत्री ओसामा की दूसरी पत्नी बनी। रातदिन इजराइल से लड़ाई जूझते हुए भी स्वाधीनता की उत्कृष्ट लालसा वाले वहाँ के वाशिंदों का समर्पण। प्रो. जू लंदन से नौकरी छोड़ अपने देश में मित्र से मिलने आया। मित्र बोला- अभी मेरे कॉलेज का टाइम है, मैं पढ़ाऊँगा। मित्र शाम को मिलना चाहता था। पर अभी हमारा सेवा का समय है। हमारे पास सैनिक कम हैं। हम दो-दो घंटें निगरानी रखते हैं, सीमा पर छः से आठ बजे तक निगरानी रखना होता है जिससे सैनिकों को कुछ आराम का वक्त मिल सके। सुबह-सुबह हमारे यहाँ पानी की बहुत समस्या है, रेगिस्तान है, इस कारण मुझे वहाँ समय देना होता है। प्रोफेसर मित्र ने पूछ लिया- इसके लिए तुम्हें कितना अतिरिक्त मिलता है? अतिरिक्त क्यों? देश के प्रति मेरा कर्त्तव्य है। यह है स्वाधीनता की लालसा, उत्कृष्ट लालसा और उसके लिए क्रियात्मक प्रयत्न।

हमारे भीतर संघ-सेवा की ऐसी भावना जगती है क्या? छोटा-सा इजरायल जो चारों तरफ से घिरा हुआ है। भारत के बाद आजाद हुआ, वेदना थी, इसलिये आगे बढ़ गया। क्या आज भारत जैसे देश में देशभक्ति की वैसी भावना है? इजराइल में कैसे क्या गोली-बारी होती है,मेरे को नहीं कहना, पर वह छोटा-सा देश जिससे चारों तरफ के देश डरते हैं उसके पीछे क्या बात है?

यहाँ जयपुर के हीरों के व्यापारी बैठे हैं। दुनियाँ के मार्केट में कहते हैं यहूदी सबसे ज्यादा होशियार हैं। पहले नम्बर पर यहूदी हैं, फिर गुजराती-

मारवाड़ी। अमेरिका का सारा कन्ट्रोल यहूदियों के हाथ में है। पर कब, नहीं चलने की वेदना में चलने का सामर्थ्य निहित है। बाहर की छटपटाहट से ये लोग बाहर में बढ़े, हमें तो उस स्वाधीनता की व्याकुलता प्रकटानी है जिससे पुनः कभी पराधीनता हो ही नहीं।

हमारे देश की स्वाधीनता का पहला स्वप्न देखने वाला अमीचन्द बांठिया था। 26 जनवरी 1996 में जलते दीप में उसका विवरण प्रकाशित हुआ था। अमीचन्द बांठिया और हुक्मीचन्द कानूंगो ये दोनों अगुवा थे। अमीचन्द बांठिया को फांसी की सजा सुना दी गई। फांसी के फंदे पर झूलने के पहले उसने अपनी अन्तिम इच्छा बताई कि मुझे एक सामायिक करने दी जाय। काका कालेलकर- राम मनोहर लोहिया की किताब में लिखा हुआ है। उन्हीं के साथी हुक्मीचन्द कानूंगो की पत्नी को ग्वालियर में भीड़ के सामने नंगा कर दिया गया। उस समय मिर्जा मुनीरबंग ने नग्न औरत पर कपड़ा डाल दिया तो उसे गोली से उड़ा दिया गया। उसके बच्चे का क्या हाल हुआ? बाहर की स्वाधीनता के लिए कितना करना पड़ता है? भारत की आजादी के प्रथम स्वप्नद्रष्टा थे बांठिया और कानूंगो। हमको न तो बाहर की स्वतंत्रता का एहसास होता है और न आत्मा की स्वतंत्रता का। महात्मा गाँधी ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई थी। आज विदेशी कपड़ों का कितना आकर्षण है? हमको भीतर की पराधीनता पर विचार कहाँ आता है? यह बात आपको नहीं, मैं अपने-आपको सुना रहा हूँ। मेरा जीव क्या कर रहा है? मुझे वह क्षण याद आता है- चन्द्रशेखर आजाद के पास कोई बोला- माँ के पास खाने को रोटी नहीं थी। माँ चक्की पीसकर गुजारा करती। वह कहता- भारत माँ की सेवा करनी है तो एक माँ को छोड़कर सेवा के लिए आगे आएँ। देश भक्ति में रमे उन लाड़ले सपूतों ने कैसी-कैसी कुर्बानियाँ दी। हमें सुख लोलुपता की कुर्बानी देनी ही पड़ेगी।

हमारे भीतर में सेवा के भाव जगने चाहिये। हम क्या कर रहे हैं कभी चिन्तन करना। अहमदाबाद से पदमचन्दजी कोठारी आए हुए हैं। व्याकुलता की तड़फ से उन्होंने चौमासा प्राप्त कर अपनी सुख-सुविधा को तिलाञ्जलि दे सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया था। प्रसंग चल रहा है- हम स्वाधीन बनें। हमारे भीतर व्याकुलता तो जगे। इस जीव को कैसी-कैसी वेदनाएँ झेलनी पड़ती हैं? कैसे कर्मबन्ध होते हैं? किसी भी जीव की वेदना को देखकर उसकी पराधीनता समझें। सोचें, मैं कहा जाता हूँ, क्या खाता हूँ? अभी एक किताब आई पॉरलेजी

बिस्कुट में क्या है, हमें पता नहीं। हम कितनी पराधीनता में जकड़े हुए हैं? क्यों गुटखे की, कोल्ड ड्रिंक्स की गुलामी में पड़े हुए हैं?

सुमुख गाथापति का जीवन सुन रहे हैं। भीतर में स्वाधीन बनने की उत्कृष्ट अभिलाषा हो तो 90 साल की उम्र में छठा मासखमण हो सकता है। अभी मुनिराज (श्री मनीष मुनि जी) चर्चा कर गये। हमें जीवन के लक्ष्य की ओर प्रतिबद्ध बनने की। एक वाक्य में सार आ गया- नहीं चलने की वेदना में चलने का सामर्थ्य निहित है।

ज्यूँ-ज्यूँ कदम बढ़ेंगे आगे, स्वतः मार्ग बन जायेगा।
हटना होगा उसे बीच में जो बाधक बन आयेगा।।
रुक न सकेगी, मुड़ न सकेगी, सत्य क्रान्ति की उज्ज्वल धारा।
प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर, जीवन अर्पण है सारा।।
बढ़े चलें हम रुकें न क्षण भी, हो यह दृढ़ संकल्प हमारा।।
प्राणों की परवाह नहीं, पर प्रण को अटल निभायेंगे।
नहीं अपेक्षा है औरों की, स्वयं सत्य को पायेंगे।
एक तुम्हारे ही वचनों का, भगवन् प्रतिपल सबल सहारा।।

स्वाधीनता की उत्कृष्ट लालसा का नाम है संवेग। संवेग से जीव आगे बढ़ता है। सारी सामर्थ्य जीव के भीतर विद्यमान है। स्व की विमुखता से पर में रुचि होती है और पर की अरुचि से स्व की रुचि सबल बनती है। स्व को जानना होगा और पर को जानना होगा। स्व का तन्त्र अर्थात् स्व की अधीनता, हम उसे स्वतंत्रता के नाम से कहें, स्वाधीनता के नाम से बोलें, एक ही बात है। गुणस्थान के थोकड़े में चौथे गुणस्थान में आता है द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का जानकार हो। हमें धर्म की एल.के.जी. सीखनी हो तो प्रथमानुयोग पहली सीढ़ी है। धर्मकथा सहयोगी हो सकती है, पर आगे तत्त्वों में प्रवेश करना पड़ेगा। द्रव्य में इस जीव का क्या मतलब है, तत्त्व में, राशि में क्या मतलब है? पदार्थ अलग होता है। सत् असत् का भान भूलना या बेभान होना मिथ्यात्व है। भान बिना कहाँ से सम्यग्दर्शन प्रकट होगा? सम्यग्दर्शन के बिना न कोई श्रावक हो सकता है और न साधु बन सकता है।

सम्यग्दर्शन के आठ अंगों में चार स्वयं के लिए, चार बाहर के लिए हैं। निशंकित, निष्कांक्षित, निर्विचिकित्स और अमूढ़ दृष्टि। चार संघ सेवा के लिए उपबृंहण, स्थिरीकरण वात्सल्य और प्रभावना। श्रद्धेय गौतम मुनि जी महाराज ने एक दोहा याद करवाया-

स्वधर्मी विसरूं नहीं करोड़ जनों के बीच।
धेनु सम उनसे मिलो, वात्सल्य भाव उलीच।।

प्रेमचन्द जी कोठारी ने बताया- हर बड़े संत-सती को माँ के समान छोटों के प्रति वात्सल्यभाव रखना चाहिये और छोटे संत-सती को बड़ों को भगवान समझना चाहिए। स्वाधीनता में गुणों को देखकर रोम-रोम पुलकित हो जाय। संत पधारे हैं उनको कुछ-न-कुछ भिक्षा देने की भावना आनी चाहिये। हम रोज खा-खाकर बिगाड़ते हैं, ये मुनिराज वीतराग आज्ञा की आराधना में लगे हैं, छन्दं निरोहेणं उवेइ मोक्खं।

स्वच्छन्दता का नाश होगा तभी स्वतंत्रता होगी। हम क्यों बड़ों की मानें, ऐसे विचारों से कोई स्वाधीन नहीं बन सकता। सुमुख गाथापति के सामने वही अवसर उपस्थित हो गया। संत जीवन स्वाधीन होता है और उनके अन्तर में शांति के दर्शन होते हैं। वे सच्चे फकीर हैं-

फिकर सबको खाता है, फिकर सबका पीर,
फिकर का फाका करे, उसका नाम फकीर।

आपने यह भी सुना होगा-

कभी विराजे महल-मालिये, कदइ छाया केरा री।
वा वा रे मोज फकीरा री।
कदइ तो ओडे शाल दुशाला, कदई चादर लीरां री।
वा वा रे मोज फकीरा री।
वो कहाँ अटके कपड़े पे, वो क्यूँ बनेंगे पराधीन।

वो तो स्वाधीनता के पुजारी हैं। अरे इन फकीरों की क्या कहें।

फोर्ट की बात है। उसका कोट फट गया था। उसका पर्सनल सेक्रेट्री कहने लगा- आप इस कोट को बदल लीजिये, यह फटा हुआ है। फोर्ट का जवाब था- यहाँ कौन है जो अपने को नहीं जानता कि यह फोर्ट है। लन्दन जाने का मौका पड़ा, पुनः पी.ए. ने कहा सर- नया कोट, तो जवाब मिला- यहाँ कौन जानता है कि यह फोर्ट है। जब तक जड़ के द्वारा मूल्यांकन है तब तक पराधीनता है। आप-हम सोचें कि हमको पराधीनता असह्य हुई या नहीं?

धर्म की श्रद्धा साता की आसक्ति से अलग करती है। स्थायी प्रसन्नता वही पाता है जो संसार की ओर से आने वाली सब प्रसन्नता का अन्त कर देता है। सत्य का अधिकारी कौन? स्वाधीन कौन बनता है? मुक्ति किसे चाहिये?

जबाब मिला- जिसको प्रसन्नता देने में संसार असमर्थ है, वही स्वाधीन है। आपको मान लीजिये करोड़ रुपये मिल गये। करोड़ रुपये मिल जाने पर मैं सुखी बन जाऊँगा यह धारणा सही नहीं है। करोड़ रुपये मिल गये तो वह करोड़ रुपये का दास बना या नहीं? आभूषण हो या घर। तुलसीदासजी के शब्द याद आ जाते हैं- पराधीन सपनेहु सुख नाहिं।

सुमुख गाथापति मुनिराज को देखकर विचार करता है कि इनको ऐसी शांति कहाँ से मिली? जब अपने जीवन में पराधीनता असह्य होने लगे तो फिर मन में यह बात नहीं आयेगी कि यह क्या मिला, इतना ही क्यों- फिर तो जो मिला है उसका सदुपयोग ही होगा। जम्बूचरित्र में एक दृष्टान्त आया - बाप और बेटे संत बन गए। बेटा खाने में असंयम से भैंसा बन गया। भैंसा गाड़ी में जोता जा रहा है, गर्मी में पीठ पर लाठियाँ पड़ रही हैं, गाड़ी में वज़न इतना ज्यादा कि कमर टूट रही है। जीभ बाहर निकलने लगी। उसका पिता जो देव था, ने आकर चेताया, जो वह साधु बनकर बोलता था- यह मुझे भाता नहीं, यह मुझसे खाया जाता नहीं।'' इसी दासता के कारण वह भैंसा बना। नल का जो पानी आता है उसे आज मनुष्य पी नहीं सकता, उसे तो बिसलरी का पानी चाहिये। उस पराधीनता का अनुभव करो, वह विह्वलता कैसी?

अब जन्म-मरण का दुःख सहा नहीं जाता।
सांसारिक सुख में सार नज़र नहीं आता।
इसलिये बनाई बुद्धि तुम्हारी चेरी,
करुणाकर काटो अब कर्मों की बेडी।।

भजन के भाव स्वाधीन बनाने वाले हैं। पराधीनता की वेदना में कई कहते हैं स्वाधीनता मोक्ष है, मोक्ष में जाकर क्या करेंगे? यहाँ रहकर कुछ करते तो हैं। लेकिन मनुष्य भव कितना? अनादिकाल से थोड़े से मनुष्य भव आये हैं। तिर्यंच में अनन्तकाल बिताया है। एक नाड़ी के खटके में सत्रह बार जन्म-मरण। कितनी वेदना? ध्यान-मौन में बैठते हैं तब भीतर की कुछ शांति मिलती है। करोड़ों-अरबों रुपये में यह सामग्री नहीं मिलती। आत्म-दर्शन करके जो शांति-समाधि प्राप्त की जा सकती है उसका कोई मोल नहीं, वह तो अनुभव का विषय है।

सुमुख गाथापति मुनिराज की शांति और आनन्द देख रहा है। आज आपके साधन भले ही बढ़ रहे हैं, किन्तु शांति नहीं है। चश्मे की फ्रेम सोने की हो सकती है, पर आँख की रोशनी.....? आँख की रोशनी कम होती है तो सोने

का फ्रेम किस काम का?

अपनी बात चल रही थी- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने पूछा- पथ प्रदर्शन कीजिये। यहाँ कई स्थानों के भक्त बैठे हैं। आपसे पूछूँ- पथ का प्रदर्शन कैसे हो? आपको स्थानक का पता था क्या? चलने की रुचि में पथ का दर्शन होता है। यहाँ पहुँचने की रुचि थी। अतः पहुँच गए यहाँ स्थानक में। चल सकते हैं, चलना जानते हैं, पर चल नहीं पाते इसकी वेदना का अनुभव होना चाहिए। नहीं चलने की वेदना में चलने का सामर्थ्य निहित है।

नहीं चलने की वेदना का अनुभव होगा, चलने की लालसा जगेगी तो सामर्थ्य प्रकट हो जायेगा। तुम मुक्ति में जाने की सोचो। बाहर के दुःखों को देखते हुए छटपटाहट तो लगे।

सत्य का अधिकारी कौन? जिसे भोग में रोग, हर्ष में शोक, सुख में दुःख, संयोग में वियोग, घर में वन और जीवन में मृत्यु के दर्शन होते हैं। यह है यथार्थ। इस यथार्थ जीवन की शुरुआत हो सकती है।

लक्ष्य को है पा जाना

श्री दिलीप जैन

कुछ कर, सब कुछ पाना, यह संभव यद्यपि नहीं।
कर सब, कुछ कुछ पाना, यह विधि है शायद सही।।
उठो चलो, बढ़ो आगे अब रुकना कतई नहीं।
नहीं चलें, रहे रुकें, शायद यह यथार्थता नहीं।।
पाना है लक्ष्य यदि, तो हलुकर्मी बनना होगा।
शूलों की पगडंडियों पर भी, निश्चित ही चलना होगा।।
लक्ष्य बनाओ, कदम बढ़ाओ, मंजिल को है पा जाना।
रहें वसुधा पर लेकिन, अम्बर को है छू जाना।।
जितने कदम बढ़ेंगे आगे, उतना फल नित पायेंगे।
रहे शून्य आज भी तो, फिर-फिर गोते लगायेंगे।।
हाँ! यदि रही नज़र सितारों पर, तो कुछ अनचाहा भी मिल जायेगा।
अर्द्ध रात्रि में निश्चय ही दिवाकर भी दिख जायेगा।।
आशा करता हूँ आज मैं, अवसरों को ना खोऊँगा।
पथिक बन नित कर्मशील, नवरत्नों को ही जोऊँगा।।

-अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान,
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302001 (राज.)

प्रवचनांश

व्रत-प्रत्याख्यान से दृढ़ता एवं शान्ति

साध्वी श्री मुदितप्रभा जी म.सा.

साध्वी श्री मुदितप्रभा जी म.सा. द्वारा बजरिया, सवाईमाधोपुर चातुर्मास में फरमाए गए प्रवचन का अंश श्री पारसचन्दजी जैन द्वारा संकलित।-सम्पादक

व्रत अपने अन्तर में झांकने, स्वयं की शान्ति को नापने का ऐसा उपाय है जिससे मन में दृढ़ता पैदा होती है। व्रत-प्रत्याख्यान हमें पापकारी वृत्तियों से बचाते हैं, हमें मर्यादित, संयमित जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

शिवाजी महाराज ने अपनी माता जीजाबाई द्वारा बताये नियमों का जीवन पर्यन्त पालन किया। बचपन के संस्कार जीवन भर काम आते हैं, जिसके लिये आवश्यक है हम अपने घर का वातावरण शुद्ध जैनी के परिवार जैसा बनाये रखें, उदाहरण के लिए पूर्ण शाकाहारी होने के साथ, जमीकंद का प्रयोग नहीं करें, दिन की शुरुआत प्रात:कालीन धार्मिक प्रार्थना से करें, घर में मधुरता का व्यवहार रहे तो स्वत: ही बच्चों में अनेक संस्कार स्वत: आ जायेंगे।

जयपुर के एक श्रावक हैं श्री विमलचन्द जी डागा। उनके परिवार में, रसोई में कभी जमीकंद का प्रयोग नहीं होता। उन्होंने बच्चों से सदा यही कहा कि जमीकंद खाने वाले निगोद जीवों की हिंसा से नहीं बचते हैं। बस बच्चों में यही बात पक्की हो गयी। एक बार बच्चे जब अपनी छुट्टियों में ननिहाल गये तो वहां रसोई में रखे जमीकंद को देखते ही बोले, क्या नानाजी! आप जैनी नहीं है क्या? यह प्रभाव पड़ता है शुद्ध रूप से जैन धर्म का पालन करने वाले परिवार का।

हमें भी भगवान महावीर के सच्चे एवं अच्छे सेवक बनना है तो प्रतिकूलता वाले कार्यों को भी सहज भाव से करें, प्रसन्नचित्त रहें। अच्छा जीवन जीने की कला सीखने के लिए सहिष्णुतापूर्वक कार्यों को करने की आदत डालनी चाहिये, जैसे भीषण गर्मी सहन करना, धूप में आतापना लेना, शीत परीषह सहन करना, घर-घर गोचरी करना, नंगें पैर विहार करना, लोच करना जैसा अनुभव जीवन में लेना चाहिये। याद रखिए जो शून्य से खड़ा होता है, संघर्ष करते हुए प्रतिष्ठित पद पर पहुँचता है तो उसके बारे में ही चर्चा होती है। उसके बारे में चर्चा नहीं होती जो अपने परिवार के सहारे शिखर पर पहुँचता है।

कुशल ड्राइवर भी उसे माना जाता है जो टेढ़े-मेढ़े, ज्यादा उतार-चढ़ाव, घुमावदार रास्तों में वाहन को सुरक्षित रूप से चलाने में माहिर है, सीधी सड़क पर वाहन चलाना कोई बड़ी बात नहीं, पर यह भी सच है कि ज्यादातर दुर्घटनाएँ भी चौड़े एवं बड़ें मार्गो पर ही होती हैं, जहां संकरा रोड़ है वहाँ सावधानी के कारण एक्सीडेंट कम ही होते हैं। उसी प्रकार जीवन में अनुकूलता एवं प्रतिकूलता दोनों रहती हैं। सुख की घड़ियों में मानव फूलकर चलता है। सुख की घड़ियों का दुरुपयोग करके वह अनेक बुराइयों को जीवन में ग्रहण कर बैठता है, जबकि दु:ख के समय व्यक्ति सावधानी से चलते हुए जीवन यापन करता है। फलस्वरूप वह गलत रास्ते से बच जाता है।

व्रत हमें अन्तर में झांकने का अवसर प्रदान करते हैं, दु:खों को भी समता भाव से सहन करने की शक्ति प्रदान करते हैं। जिनके जीवन में व्रत प्रत्याख्यान हैं, उनकी दिनचर्या व्यवस्थित रहती है। उनका जीवन व्यवस्थित रहता है। नित्य नियम वाला समय पर सामायिक, नवकारसी आदि आसानी से कर लेता है। वह नित्य कार्य करते हुए भी धर्म की अराधना कर लेता है, परन्तु जिसके व्रत-प्रत्याख्यान नहीं है, वह अपसेट रहता है। सोने का पता न उठने का पता। दिनचर्या भी अस्त-व्यस्त रहती है।

आज जिन परिवारों में दैनिक सामायिक, धार्मिक-प्रार्थना जैसे कार्य होते हैं, वहाँ उनके बच्चों को सामायिक आदि करने की स्वत: प्रेरणा मिल जाती है। जिन परिवारों में लड़ाई-झगड़े नहीं होते, उनके बच्चे भी लड़ाई-झगड़े से दूर रहते हैं, पर जहाँ बच्चे मां-बाप को प्रतिदिन लड़ते देखते हैं, वहाँ मां-बाप की सलाह उन पर ज्यादा असर नहीं करती। बच्चे तो अपने घर में होने वाली प्रार्थना, नवकार मंत्र के जाप, मुँहपत्ती लगाने का कार्य स्वयं ही देखकर करना सीख जाते हैं, उसके लिये मां-बाप को प्रयास नहीं करना पड़ता।

प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाला आत्मिक संतोष महसूस करता है। शरीर में भले ही कष्ट आ जाए, पर उसे आत्मिक शान्ति मिलती है। वह प्रसन्नता व्यक्त करता है कि मैंने प्रत्याख्यान ग्रहण किये हैं, परन्तु जो व्रत-प्रत्याख्यान में नहीं हो और कष्ट आ जाए तो अधिक दु:खी होता है।

व्रत-प्रत्याख्यान भी हमें अपनी शक्ति, सामर्थ्य से ग्रहण करने चाहिये। परन्तु अनेक द्रव्य एवं वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनका हम कभी उपयोग नहीं करते, परन्तु उनके त्याग प्रत्याख्यान नहीं है, तो उनकी क्रिया का दोष भी हमें लगता है। अगर

हम यह तर्क दें कि जिनका हम उपयोग ही नहीं करते तो फिर उनके सेवन का पाप हमें कैसे लगेगा? इसके समाधान में कहा जाता है कि जिनका हमारे त्याग नहीं है उनका दोष हमें उसी प्रकार लगता है जैसे पंखा, बिजली का उपयोग नहीं करें फिर भी न्यूनतम बिल भरना ही पड़ता है। हमें सिद्धान्तों को समझकर त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण कर व्रती बनकर सच्चे महावीर के उपासक बनना है। ■

जब-जब भ्रष्टाचार बढ़ा है

श्री अनिल अनवर

जब-जब भ्रष्टाचार बढ़ा है, जग में हाहाकार बढ़ा है।
त्राण दिलाने तब कोई तीर्थंकर या अवतार हुआ है।।

भ्रष्ट आचरण करके मानव, मानव से बन जाता दानव।
स्वार्थ-सिद्धि हित अन्यायी बन हिंसा का वह करता ताण्डव।
नाश कौरवों का करने तब कुरुक्षेत्र में आते पाण्डव।
गीता का उपदेश सुनाने जब वह कृष्ण-मुरार बढ़ा है।।

होता है जब क्षरण धर्म का और विस्मरण उचित कर्म का।
पाप अधिक बढ़ता समाज में, आता अवसर घोर शर्म का।
चीर-हरण करता दुःशासन भरी सभा में नग्न चर्म का।
तब केशव की अनुकम्पा से साड़ी का आकार बढ़ा है।।

वीतराग मुनि-जन जग में आ मानव को सन्मार्ग दिखाते।
राग-द्वेष से मुक्त रहे मन, इसका सरल उपाय बताते।
महावीर-गौतम-नानक आध्यात्मिकता की राह चलाते।
मूर्ख मनुज, पर, सदा पतन के पथ पर बारम्बार बढ़ा है।।

अब विचार कर ले समाज, धरती पर संकट आन पड़ा है।
लोभ और उपभोग बढ़ा, मानव विनाश के द्वार खड़ा है।
'नैतिकता' या 'भौतिकता', हम किसे चुनें? यह प्रश्न बड़ा है।
वह युग 'सतयुग' कहलाता, जिसमें अध्यात्म-प्रसार बढ़ा है।।

जब-जब भ्रष्टाचार बढ़ा है, जग में हाहाकार बढ़ा है।
त्राण दिलाने तब कोई तीर्थंकर या अवतार हुआ है।।

33, व्यास कॉलोनी, एयरफोर्स, जोधपुर-342012 (राज.)

अध्यात्म

तृष्णा की गुलामी और उससे मुक्ति

कल्याणमित्र श्री सत्यनारायण गोयन्का

तृष्णा एक ज़हर है। हमारे जीवन-पात्र में भरा हुआ मीठा मादक ज़हर। मीठा है इसलिए स्वाद के मारे हम इसे निरंतर पीते रहते हैं। मादक है इसलिए इसे पीकर हम मदहोश हुए रहते हैं और यह भी नहीं समझ पाते कि हम ज़हर पी रहे हैं। ज़हर है इसलिए इसे पीकर हम प्रतिक्षण मृत्यु के चंगुल में ही उलझे रहते हैं। नये-नये जन्म लेते हैं, परंतु हर जन्म मृत्यु के पोषण के लिए ही होता है। हर जीवन की दौड़ मृत्यु के लिए ही होती है। हर जन्म की चरम परिणति मृत्यु में ही होती है।

तृष्णा हमारे जीवन-नासूर की पीप है जो सतत प्रवाहमान है। प्रतिक्षण इस फोड़े में से गंदे स्राव की तरह रिस-रिस कर बहती ही रहती है। इस आस्रव के कारण जीवन-व्रण सदा हरा रहता है। कभी सूखने नहीं पाता। हम इसकी पीड़ा से मुक्त नहीं हो पाते। तृष्णा हमारे जीवन-कोढ़ की खाज है। इसे खुजला-खुजला कर हम इस कोढ़ को बढ़ाते रहते हैं। खुजलाने का मजा कोढ़ के कष्ट पर हावी हुआ रहता है। तृष्णा जीवन का कफन है। मृत्यु की चादर है। इसे हम सुंदर दुशाले की तरह ओढ़े हुए इसके सौंदर्य पर मुग्ध रहते हैं। तृष्णा एक प्यास है जो कभी तृप्त नहीं हो सकती। सारे विश्व का ऐंद्रिय-रस भी इस तृष्णा को बुझा नहीं सकता।

तृष्णा एक भूख है जो कभी मिटती नहीं। दुनियाभर का वैभव-भोग भी इस भूख को शांत नहीं कर सकता। तृष्णा क्षितिज पकड़ने की एक ऐसी दौड़ है जो कभी पूरी हो नहीं सकती। तृष्णा एक ऐसा मृगजाल है जिसे भलीभांति न समझने के कारण इसमें से निकलने का प्रयत्न हमें अधिक उलझाता ही रहता है।

तृष्णा रबड़ की गेंद है। इसे जितने जोर से नीचे की ओर फेंकते हैं, यह उतनी ही तेजी से ऊपर की ओर उछल कर आती है। इसका जितना दमन करते हैं, यह उतनी ही विस्फोटक बनती जाती है। तृष्णा को समझो! तृष्णा की गुलामी को समझो! यह जीवन की नैसर्गिक भूख से अलग है। दोनों का भेद जान लेना कल्याणकारी है।

भूख लगे तो शरीर पोषण के लिए आवश्यक आहार ग्रहण करना

नैसर्गिक है। परंतु पेट भरा हो तो भी जीभ के स्वाद के लिए खट्टे,मीठे,तीखे, चरपरे, रसभरे, व्यंजन खाते रहना तृष्णा की गुलामी है। हिंसक पशु अपनी भूख मिटाने के लिए शिकार करता है, परंतु पेट भर जाने पर किसी जीव को मारने की बात सोचता भी नहीं। भरे पेट कुछ और खाने की बात सोचता भी नहीं। यह नैसर्गिक है, प्राकृतिक है। परंतु कामना का गुलाम मनुष्य पेट भरा हो तो भी जीभ के स्वाद के लिए नये-नये व्यंजन खाते रहने में नहीं अघाता। बिना भूख के भी समय-असमय कुछ न कुछ चरते रहना तृष्णा की गुलामी है। प्यास लगे तो स्वच्छ, शीतल जल ग्रहण करना नैसर्गिक है। परंतु स्वाद के मारे बिना प्यास के ही भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट पेय पीते रहना तृष्णा की गुलामी है।

सर्दी-गर्मी और वर्षा से, कीट-पतंगों और मक्खी-मच्छरों से शरीर को बचाने के लिए यथा आवश्यक वस्त्र धारण करना स्वाभाविक है, परंतु स्पर्धा के वशीभूत होकर मात्र अहं-पोषण के लिए अपने कबाट को नित्य नये फैशन वाले चमकीले-भड़कीले वस्त्राभूषणों से भरे रखना और ऐश्वर्य प्रदर्शन की होड़ में उनका इस्तेमाल करना तृष्णा की गुलामी है।

धूप तथा कंकड़-कांटों से बचने के लिए पांव में जूते पहनना स्वाभाविक आवश्यकता है। परंतु एक जोड़ी जूते होते हुए भी विभिन्न डिजाइनों के जूतों, चप्पलों का ढेर जमा रखना और महज वैभव प्रदर्शन के लिए उन्हें पहनना तृष्णा की गुलामी है।

जनसेवा में लगना नैसर्गिक गुण है। परंतु जनसेवा के नाम पर किसी सभा-सोसाइटी या सत्ता के पद पर आसीन होने के लिए व्याकुल रहना और पद प्राप्त हो जाय तो उससे चिपके रहने के लिए व्यग्र-व्यथित रहना तृष्णा की गुलामी है।

विवाह-शादी के अवसर पर नव-दंपती के लिए बड़े-बुजुर्गों, बंधु-बांधवों, मित्र-स्नेहियों की मंगल-कामना अपेक्षित है। परंतु ऐसे अवसर पर वैभव-प्रदर्शन की होड़ तृष्णा की गुलामी है।

इसी मापदण्ड से अपने जीवन की नैसर्गिक आवश्यकता-पूर्ति को तृष्णा की गुलामी से अलग करके देखते-समझते रहें। दोनों एक नहीं हैं, जुदा-जुदा हैं। तृष्णा की गुलामी को नैसर्गिक आवश्यकताओं का झूठा जामा पहनाना अपने आपको धोखा देना है। रूप, शब्द, रस, गंध, स्पर्श और मनोविकल्प रूपी ऐन्द्रिय विषयों के उपभोग के लिए पागलों की तरह दौड़ना नैसर्गिक आवश्यकता की पूर्ति कदापि नहीं है।

प्रत्येक तृष्णा के उत्पन्न होने पर मन और तन पर एक विशिष्ट प्रकार का अत्यंत सूक्ष्म स्पंदन होने लगता है, जिसकी संवेदना चेतन मन को भले न हो, परंतु अवचेतन मन को होती रहती है। जब तक अभीष्ट की प्राप्ति न हो जाय, तब तक यह स्पंदन-संवेदन चलता ही रहता है। जब-जब अभीष्ट के प्रति आतुरता-अधीरता बढ़ती है, तब-तब यह स्पंदन भी अधिक तीव्र हो उठता है। तृष्णा के साथ-साथ जन्म लेने और जीवित रहने वाला यह स्पंदन अप्रिय होता है, क्योंकि यह स्नायु-तंतुओं पर तनाव पैदा करता है, गांठें बांधता है। परन्तु इस तनाव और इन ग्रंथियों के बावजूद भी अप्रिय संवेदना में एक प्रकार की सम्मोहन शक्ति होती है। जिससे कि अचेतन धीरे-धीरे इसमें डूबे रहने का आदी हो जाता है। यह एक अटूट व्यसन की तरह मन से चिपक जाता है। कभी-कभी यह तनाव बहुत ही तीव्र हो उठता है तो हम अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और विक्षिप्त हो जाते हैं। परंतु ऐसा न हो तो भी निरंतर बने रहने वाले इस तनाव का बुरा असर हमें बेचैन बनाये ही रखता है। तृष्णा का यह ज़हर हमें मर्मांतक पीड़ा पहुँचाता रहता है। परंतु फिर भी मीठा होता है, मादक होता है, इसलिए तनाव और कसाव से परिपूर्ण होते हुए भी कुटेव की तरह हमारा पीछा नहीं छोड़ता।

जब कभी किसी कामना की पूर्ति हो जाती है तो यह विशेष प्रकार का स्पंदन-संवेदन थोड़ी देर के लिए रुक जाता है। उस समय हमारे अन्तर्मन पर एक अन्य प्रकार के स्फुरण-सिहरन की संवेदना होने लगती है, जो कि हमें सुखद लगती है, प्रिय लगती है, रोचक लगती है। परंतु यह दीर्घजीवी नहीं होती। उत्पन्न होने के थोड़े समय पश्चात् ही यह बासी पड़ने लगती है। इसका आकर्षण मंद पड़ने लगता है। इसके द्वारा प्रतीत होने वाले सुख-संतोष विलीन होने लगते हैं और धीरे-धीरे इस स्फुरणा का संवेदन पूर्णतया रुक जाता है और तब कामना-तृष्णा वाला पूर्ववर्ती स्पंदन-संवेदन पुनः जाग पड़ता है, क्योंकि यह संवेदन तो एक व्यसन की तरह पीछे लग ही चुका होता है। इसे निरंतर चालू रखने के लिए अंतर्मन अपने लिए कोई न कोई नया अभीष्ट खोज लेता है, नया आलंबन प्राप्त कर लेता है और इस प्रकार यह फोड़ा रिसता ही रहता है, चूता ही रहता है। यह आग सुलगती ही रहती है, धधकती ही रहती है। किसी न किसी रूप में हम इस नासूर के प्रति नित्य नया स्राव पैदा करते ही रहते हैं। इस आग के लिए नित्य नया ईंधन पैदा करते ही रहते हैं। कभी रूप का, कभी रस का, कभी गंध का, कभी शब्द का, कभी स्पर्श का, कभी मनोविकल्प का। यही तृष्णा के प्रति आसक्ति

है। तृष्णा के सहजात उस सूक्ष्म स्पंदन के प्रति आसक्ति है जो हमारा पीछा नहीं छोड़ती।

इस प्रकार कामना और तृष्णा के घोड़े सरपट दौड़ते ही रहते हैं। किसी एक अभीष्ट की सिद्धि पर जो अल्पकालीन सुखद स्फुरणा हुई थी, उसकी याद में इन घोड़ों की गति और तेज होती रहती है।

कामना-पूर्ति में जहाँ कोई अड़चन पैदा होती है, वहीं द्वेष-शोक जाग उठते हैं। अभीष्ट सिद्धि नहीं होगी, इस आशंका की पीड़ा जाग उठती है। अभीष्ट सिद्धि हो जाने पर वह कभी छूट तो नहीं जायेगी, इस भय की चिंता जाग उठती है। दुःख, शोक, आशंका, भय ये सारे के सारे विकार तृष्णा की ही उपज हैं। इन दर्दनाक मनोविकारों से मुक्ति पाने के लिए तृष्णा-कामना से विमुक्त होना अनिवार्य है, अपरिहार्य है। भगवान ने कितना ठीक कहा-

तण्हाय जायते सोको, तण्हाय जायते भयं।
तण्हाय विप्पमुतस्स, नत्थि सोको, कुतो भयं?

अर्थात् तृष्णा से ही शोक उत्पन्न होता है। तृष्णा से ही भय उत्पन्न होता है। तृष्णा से मुक्त हो जाय तो शोक ही न रहे, फिर भय कहाँ रहे?

तृष्णा से विमुक्त होने का सहज, सरल तरीका है- द्रष्टाभाव का विकास। अपने चित्त में समाई हुई तृष्णा को, कामना को न दबाएँ, न उपेक्षित करें, बल्कि साक्षीभाव से देखें। कामना-तृप्ति पर प्राप्त हुए क्षणिक सुख से पागल न हो जायं, बल्कि उसे साक्षीभाव से देखें। अतृप्ति के कारण भविष्य के प्रति जो आशंका और भय उत्पन्न होते हैं, उनसे आकुल-व्याकुल और भयभीत न हो जायं, बल्कि उन्हें साक्षीभाव से देखें। सिहरन, थिरकन, फुरकन, स्फुरण, कंपन, धूजन, जलन, उत्पीड़न आदि-आदि विभिन्न संवेदनाओं से प्रभावित हुए बिना, इन्हें साक्षीभाव से देखें। इन्हें अचेतन से चेतन मन तक लाकर साक्षीभाव से देखते ही इनका रेचन हो जाता है, उन्मूलन हो जाता है। इनकी जकड़ ढीली पड़ जाती है। इनके क्षण-क्षण परिवर्तित अनित्य स्वभाव को प्रज्ञा-दृष्टि द्वारा देख लेना ही साक्षीभाव से देखना है, यथाभूत देखना है। यही विपश्यना साधना है, विदर्शना भावना है। यही स्थितप्रज्ञता और अनासक्ति का सहज, सरल, क्रियात्मक अभ्यास है। तृष्णा की गुलामी से नितांत विमुक्ति पाने का यही कल्याण-पथ है, यही मंगल कार्य है

-साभारः धम्मथली संदेश, नवम्बर-2011

संगोष्ठी–आलेख

भ्रष्टाचार का निवारण : मूल्यपरक शिक्षा से

डॉ. विनीत कोठारी
(न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय)

यह वाकई एक समीचीन विषय है और मुझे प्रसन्नता है कि परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द जी म.सा. के पावन सन्निध्य में 'अध्यात्म, समाज एवं भ्रष्टाचार' विषय पर यह राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई और जिनवाणी के सम्पादक एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. धर्मचन्द जैन के निर्देशानुसार मुझे इस विषय पर कुछ कहने का सौभाग्य मिला।

यद्यपि न्यायाधीश के कार्यक्षेत्र में रहते हुए मुझे इस विषय पर बहुत अधिक खुला बोलने की छूट तो नहीं है, फिर भी भारत के एक नागरिक की हैसियत से इस ज्वलंत समस्या पर कुछ विचार मैं अवश्य रखना चाहूँगा।

भारत जैसे समृद्ध और अध्यात्म प्रधान देश में प्राचीन समय से तीर्थंकरों, ऋषि–मुनियों और प्रसिद्ध राजाओं के आध्यात्मिक एवं धार्मिक सन्देश और समाज संचालन के तरीके हमारे लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में उपलब्ध रहे हैं, फिर भी आज भ्रष्टाचार भारतवर्ष की सबसे अधिक ज्वलंत समस्या बन चुकी है और कई बार ऐसा लगता है कि इस कैंसर ने भारत जैसे प्रबुद्ध देश का ढांचा ही अन्दर से खोखला कर दिया है।

जहां तक राजनैतिक क्षेत्र में मूल्यों के ह्रास का प्रश्न है, उससे हम सब लगभग पूरी तरह परिचित हैं, क्योंकि विगत कुछ वर्षों से प्रिण्ट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने इस काले पक्ष को भली भांति उजागर किया है। हालांकि इस प्रक्रिया में भी स्वयं मीडिया का भी एक काला पक्ष साथ में उभर कर सामने आया। पेड न्यूज अथवा ब्लेकमेलिंग भी मीडिया के कुछ वर्गों का अंश बना।

मेरे विचार में भ्रष्टाचार का मुख्य कारण हमारे देश में शिक्षा पद्धति की कमजोरी है। हमने भारतीय नागरिकों को, विशेषकर युवा वर्ग एवं बच्चों को उन मूल्यों की शिक्षा ही नहीं दी, जिनसे वे अपने देश के प्रति समर्पण और प्यार की

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी के सम्पूर्ति सत्र में अध्यक्षीय उद्‌बोधन हेतु प्रेषित विचार।

देश भावना को सर्वोच्च रखते हुए देश के लिए मर मिटने के जज्बे के साथ, देश के लिए काम करने के लिए तैयार हुए हों। शिक्षा के व्यवसायीकरण के दौर में हमने कई सारे इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, वकील अथवा व्यवसायी तो बना दिए, परन्तु उन सबका सर्वप्रथम एक अच्छा भारतीय नागरिक होना, सिखाना भूल गए। पूरे देश को एक सूत्र में बांधने के लिए सक्षम राजनैतिक नेतृत्व की कमी वाकई खलने लगी है। मेरे विचार में यदि व्यक्ति अपने देश को स्वयं से ऊपर रखकर कार्य करता है तो वह भ्रष्टाचार कर ही नहीं सकता।

दूसरी ओर पाश्चात्त्य समाज के मूल्यों का अन्धानुकरण और पाश्चात्त्य शैली का मीडिया द्वारा दुष्प्रचार, भ्रष्टाचार का दूसरा मुख्य कारण बना। बड़े-बड़े मॉल, ब्राण्ड वाले वस्त्र एवं उपभोग की अन्य वस्तुओं का बाजारीकरण हमें कहाँ से कहाँ ले गया, यह विचारणीय प्रश्न है। हाल ही में रिटेल व्यवसाय में डायरेक्ट फौरेन इनवेस्टमेण्ट (FDI) का मुद्दा जिसने पार्लियामेण्ट की कार्यवाही को ही कुछ दिनों से जाम कर रखा है, इस बात का द्योतक है कि हम अन्दर से कितना कमजोर और डरा हुआ महसूस करते हैं। **यदि हमारी संस्कृति के अनुरूप ही हमने हमारे उत्पादन या विश्व बाजार पर ध्यान दिया होता तो हम संयमी, मितव्ययी एवं सरल जीवन शैली में ही रहते। न तो विदेशी चकाचौंध हमें आकर्षित करती और न ही विदेशी कम्पनियां हमें एक बड़े ग्राहक के रूप में ही देख पाती।** 2 जी, कॉनवेल्थ घोटाला इत्यादि हमें शर्मसार किए हुए है और विश्व में अधिकतम भ्रष्ट देशों में भारत का नाम बहुत ऊपर आता है। जहां एक ओर आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ भारत और सामरिक शक्ति से समृद्ध भारत अग्रणी देशों की पंक्ति में जा खड़ा हुआ है, वहीं कुछ धनवान और अधिकतम निर्धनों के बीच का पाट इतना गहरा हो गया है कि कुछ समझ ही नहीं आता।

अध्यात्म दृष्टि से जहां तक पूर्व जन्मों या इस जन्म के कर्मफलों के भुगतान स्वरूप में यह दृश्य उपस्थित होता है और देखा जा सकता है तो दूसरी तरफ समाज का यह विकृत स्वरूप इस कलियुग में लगभग असहनीय सा है। प्रश्न यह उठता है कि क्या इसमें सुधार सम्भव है? मेरी विनम्र राय में, इसमें अवश्य ही सुधार सम्भव है और यदि हम धार्मिक गुरुओं, अच्छी मूल्यवान शिक्षा पद्धति और अन्तरात्मा की आवाज को सुनकर अपने देश के प्रति लगाव को रखते हुए अपना-अपना काम निष्ठा पूर्वक करें तो अवश्य ही परिवर्तन आ सकता है। महात्मा गांधी ने कहा था कि 'Be the change which you want in

others' अर्थात् स्वयं वह परिवर्तन करो, जो तुम दूसरों में देखना चाहते हो।

यदि हम सभी अध्यात्म और धार्मिक नियमों का पालन और अनुसरण करें, शिक्षा का उपयोग अपने देश के निर्माण के लिए करें और अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण लोभ, मोह और माया के जाल में न पड़कर, अपने द्वारा अर्जित उचित साधनों की सीमाओं के भीतर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करें तो अवश्य ही भ्रष्टाचार को जड़ से ही समाप्त किया जा सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में मुझे श्री अनिल अनवर की निम्न पंक्तियां उद्धृत करना उचित लगता है–

लक्ष्मी मैया बस ये वर दो, हर निर्धन के घर धन भर दो,
इतना कि जरूरत पूरी हो, और सबकी जरूरत कम कर दो।
संतुष्ट रहे सबका ही जिया, जलता माटी का एक दिया,
स्वागत में तुम्हारे विष्णु प्रिया, जलता माटी का एक दिया।।

इस विषय पर भाषण या संगोष्ठियों से कुछ हद तक यह सन्देश फैलाया जा सकता है, पर मेरी विनम्र राय में अधिक असरकारक मानवीय मूल्यों की शिक्षा है, जिसे बचपन से ही शिक्षा पद्धति से जोड़कर अधिक प्रभावी ढंग से प्रदान किया जा सकता है इसलिए मेरे विचार से स्कूल एवं कालेज की शिक्षा में धार्मिक और मूल्यवान शिक्षाओं का जुड़ाव बहुत आवश्यक है और ऐसा करके ही हम देश में अच्छे नागरिक तैयार कर सकते हैं।

इस समस्या का प्रारम्भिक एवं तुरन्त होने वाला इलाज सम्भव है कानून एवं न्याय व्यवस्था के पास हो, परन्तु इस प्रकार के बढ़ते मुकदमों के अम्बार के तले दबी हुई न्यायिक व्यवस्था से जो न्याय आम जन को मिल सकता है उसके असर की तुलना में शिक्षा पद्धति में आवश्यक सुधार लम्बा एवं गहरा इलाज होगा, परन्तु हमें दोनों तरफ से इस समस्या का अधिक से अधिक तथा जल्दी से जल्दी इलाज करना होगा ताकि भारत वाकई विश्व प्रधान देश बन सके।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि उपर्युक्त भावना के अनुसार भारत में एक दिन अवश्य परिवर्तन होगा और आज के दौर में जो समस्या हमें कैंसर की भांति विकराल और असाध्य रोग की तरह लगती है वह समस्या आने वाले समय में दूर नहीं तो कम अवश्य हो जाएगी।

इसी शुभ भावना के साथ,

-सी-48, पी.डब्ल्यू.डी. रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

युवापीढ़ी में संस्कार-निर्माण आवश्यक

श्री रमेश कुमार जैन
(सम्भागीय आयुक्त, जोधपुर)

आज जैन युवावर्ग में सांस्कृतिक प्रदूषण एवं अपभ्रंशता चरम सीमा पर चिन्ताजनक स्थिति में है। युवा से मेरा तात्पर्य 5 वर्ष से लेकर 50 वर्ष तक के उन सभी व्यक्तियों से है, जिनके संस्कारों में सुधार की अपेक्षा है। आवश्यकता इस बात का विश्लेषण करने की है कि किन परिस्थितियों एवं किन कारणों से यह विकृति उत्पन्न हुई है और इसको दूर करने के लिये क्या नीति अपनाई जानी चाहिए। यहाँ यह समझना आवश्यक होगा कि जैन "कोई जाति नहीं, कोई वर्ग नहीं, कोई वर्ण नहीं है"। हमारे तीर्थंकर क्षत्रिय थे, आचार्य ब्राह्मण थे, साधु सभी वर्णों के रहे और ओसवाल, खंडेलवाल जैसी कई प्रकार की जातियों ने समय-समय पर जैन धर्म अंगीकार किया है। आज भी कई जैन सन्त ब्राह्मण व देवासी समुदाय के हैं। 'जैन' एक धर्म है। कतिपय मूल्यों से इसकी पहचान है। यदि वे मूल्य नहीं हैं एवं वैसा आचरण नहीं है तो कोई भी व्यक्ति जैन कहलाने के लिये प्रतिबंधित नहीं है। दुर्भाग्य से आज जैन एक 'जन्मजात जाति' बन गया है। जिस व्यक्ति ने जैन जाति में जन्म लिया है वह अपने नाम के आगे जैन लगाता है, जबकि उसके संस्कार तथा उसके मूल्य जैन धर्म से नितांत विपरीत हैं।

हमने भी जैन धर्म को परिपाटी तक ही सिमटा कर रख दिया है। ये परिपाटियाँ कहीं कहीं पर तो आडम्बर और ढकोसले की श्रेणी में आ गई हैं। हमने साधन को साध्य मान लिया है और यहाँ तक कि साधन की शुचिता भी नहीं रही है। उदाहरणार्थ हमने जैन धर्म को उपवास, तपस्या, सामायिक, प्रतिक्रमण, मन्दिर-उपासरा एवं गुरु-पूजा, भक्ति-संगीत तक ही सीमित कर दिया है, जबकि ये सब साधन हैं। हम यह आकलन करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं कि हमारे संस्कार और मूल्य की क्या स्थिति है? हमारे आचरण और व्यवहार में भावना क्या निहित है? हमारे यहाँ तेला एवं अठाई के लक्ष्य निर्धारित किये

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

जाते हैं और ऐसी तपस्या करने वालों को महिमा मण्डित किया जाता है। तपस्या करने मात्र को सम्पूर्ण धर्म मान लिया जाता है। प्रायः यह देखने को मिलता है कि तपस्या के दौरान विशेषकर युवापीढ़ी अपना पूरा समय टीवी के सीरियल देखकर, कई बार तो पैसे से ताश खेलकर और सिनेमा देख कर व्यतीत करती है। उपवास के पश्चात् परिवार-जन अभूतपूर्व समारोह कर विवाह के तुल्य भोज करते हैं तथा उपहारों का आदान-प्रदान होता है। जब कभी मैं यह कहता हूँ कि भगवान महावीर ने यह कभी नहीं कहा कि उपवास करो तो लोग न केवल चौंकते हैं, बल्कि विवाद भी करते हैं। सही अर्थों में देखा जाय तो महावीर भगवान ने उपवास किया नहीं, बल्कि हो गया। जो व्यक्ति आत्मा के आनन्द में पूर्ण रूप से लीन हो जाय तो उसे न खाने की सुध रहेगी, न भोजन की आवश्यकता ही होगी। इसलिये उन्होंने उपवास किये नहीं, हो गये। उपवास आत्मा की शुद्धि का एक साधन है। एक उपचार है। स्वयं के कल्याण के लिये पुनः अपने संस्कारों में स्थित होने के लिये और कभी-कभी पश्चात्ताप के लिए।

उपवास ऐसा होना चाहिए कि पड़ौसी तक को उसका पता न चले। उपवास एक निजी निधि है न कि सार्वजनिक ढिंढोरे की वस्तु। लेकिन हमने उपवास के प्रचार का अतिरेक कर उसका प्रभाव एवं महत्त्व खो दिया है। किन परिस्थितियों में उपवास आवश्यक होता है और किस प्रकार उपवास किया जाना है, इस पर विचार किया जाना आवश्यक होगा। उदाहरण के लिये कुछ समय पूर्व मुझे एक सज्जन मिले। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें गुस्सा बहुत आता है। उन्होंने मोती, मूँगा आदि सभी रत्न पहन लिए, लेकिन गुस्सा कम नहीं हुआ, जबकि वे चाहते थे कि यह कम हो। मैंने उनको पूछा कि उन्होंने कभी उपवास किया है? तब उन्होंने कहा कि वे तो संवत्सरी पर भी उपवास नहीं करते। मैंने उन्हें सलाह दी कि वे हर महीने एक दिन 'जैन उपवास' करके देखें। उन्होंने किया और कुछ समय बाद यह स्वीकार किया कि उनके गुस्से की हालत कम हो गई है। गांधीजी ने कभी किसी को उपवास करने के लिए नहीं कहा। वे कहते थे कि उपवास आत्मा की शुद्धि के लिए है। जब उन्हें किसी बात का दुःख होता था, अथवा वे जब किसी बात से खिन्न होते थे, तो स्वयं की शुद्धि के लिए, अपनी असहमति जाहिर करने के लिए उपवास करते थे। यह सत्याग्रह था, जिसे अब हथियार समझ लिया गया है।

मेरे विचार से जैन धर्म के जो मूल्य हैं, उनको हम 5 महाव्रतों या अणुव्रतों में समेट सकते हैं, और ये है- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। यह

बात सब जानते हैं, लेकिन इन पंच महाव्रतों या अणुव्रतों को और इनकी भावनाओं को समझना तथा आत्मसात् करना आवश्यक है। उदाहरण के लिये अहिंसा का सीधा-सीधा तात्पर्य करुणा से है। हम हाथ की घड़ी के सेल में स्थित अग्नि को हिंसा का प्रारूप मान लेते हैं। किसी समारोह में तालियाँ बजाने पर जीव हत्या मान लेते हैं। लेकिन दया पालने के नाम पर अथवा अठाई करने के पश्चात् किये जाने वाले भोज और इस दौरान वाहनों के आवागमन आदि में होने वाली जीव हत्याओं के बारे में विचार नहीं करते। हम यह गणना करने का भी प्रयास नहीं करते कि दोनों प्रक्रियाओं में किसमें जीवों की अधिक हत्या होती है। इस प्रकार के आडम्बर से नयी पीढ़ी भ्रमित होती है। इसी प्रकार अपरिग्रह की भी यदि व्याख्या की जाय तो हमारा आडम्बर और भी अधिक उजागर होगा। जिस प्रकार से हम हमारी समृद्धि का भौण्डा प्रदर्शन गहनों-कपड़ों के दिखावे में, शादी-विवाह के समय अनावश्यक खर्च करने में एवं एक मन्दिर के बाद अनेक मंदिर बनाने में व्यय करते हैं, यह सब परिग्रह की पराकाष्ठा है। अपरिग्रह का सीधा-सादा मतलब 'सादा जीवन उच्च विचार' है। जरुरत मंदों को मदद करना, मानव-संसाधन में व्यय करना, जीवदया एवं सत्कार्य में दान करना अपरिग्रह की पहचान है। दिखावा परिग्रह का प्रतिरूप है। परिग्रह का तात्पर्य है 'पर-वस्तु को ग्रहण करना', पर-वस्तु का स्वामित्व ग्रहण करना। यदि मंदिर के प्रत्येक पत्थर पर हम हमारे बाप दादों के नाम लिख कर उसका स्वामित्व लेना चाहेंगे, तो यह परिग्रह नहीं तो और क्या है? यदि हम खर्चीली शादी का अथवा किसी बड़े भोज का आयोजन कर उसका श्रेय लेंगे, तो वह भी परिग्रह की परिभाषा में आएगा।

जैन धर्म की पहचान शाकाहारी होने से है। जो व्यक्ति शाकाहारी नहीं रह सकते, उन्हें स्वेच्छा से अपने नाम के आगे से 'जैन' लिखना बंद कर देना चाहिए। कोई बाध्यता नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार के जैनों से, जिन्हें अभक्ष्य खाने की ग्लानि नहीं है, उनसे जैनों की संख्या बढ़ाने का लालच करना उचित नहीं है। 'जैन' होने की पहचान सादा जीवन व्यतीत कर जनहित में एवं समाज उपयोगी कार्यों में सहयोग देने से है। जो व्यक्ति अपने आपको जैन कहता है वह इस बात की एक गारण्टी होता है कि वह झूठ बोलकर, छलकपट नहीं करेगा और दूसरों को धोखा नहीं देगा तथा दूसरों की वस्तु को नहीं चुरायेगा।

जैन धर्म की पहचान ब्रह्मचर्य से है। ब्रह्मचर्य से सामान्य व्यक्ति यह तात्पर्य निकालता है कि 'सेक्सरहित ज़िन्दगी'। पति-पत्नी आपस में ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करके भी जिन्दगी भर झगड़ा करते रहते हैं। यदि बह्मचर्य का व्रत

लेने के उपरान्त दाम्पत्य-जीवन में माधुर्य समाप्त होता है तो ऐसा ब्रह्मचर्य 'आडम्बर' से अधिक कुछ नहीं है। ब्रह्मचर्य का तात्पर्य है अनुशासित आचरण। जो अनुशासन के मापदण्ड आपने अपने लिये तय किये हैं, उन पर कायम रहने का नाम ब्रह्मचर्य है। यदि आपने एक पत्नीव्रत होना स्वीकार किया है तो दूसरी स्त्रियों को बहन बेटी समझने का नाम ब्रह्मचर्य है। 'जैन' होना इस बात की गारण्टी होना चाहिए कि दूसरों की बहन-बेटियों के साथ अनुचित आचरण नहीं होगा। इसी प्रकार पंच महाव्रत की भावनाओं को समझना और उनको स्वेच्छा से आत्मसात् करना और तदनुसार अपने संस्कार व मूल्य विकसित करना ही जैन धर्म का आचरण है।

युवापीढ़ी में नैतिक उत्थान करने के लिये संस्कार-निमा ग पर विचार करना उचित होगा। यह संस्कार निर्माण परिपाटी से नहीं होगा, बल्कि विचारों में परिवर्तन से होगा। यदि विचार शुद्ध होंगे तो आचरण स्वतः शुद्ध होगा। हमें अच्छे विचार एवं सही श्रद्धा को विकसित करने की आवश्यकता है। यदि आचरण शुद्ध करने के आडम्बरयुक्त प्रयास किये जायेंगे, तो वह आज की युवा पीढ़ी को एक दबाव एवं भार लगेगा और वह इनसे दूर रहने का प्रयास करेगा। आज की युवापीढ़ी उसे सही नहीं मानती जिसे कि बड़े लोग कहते हैं। उन्हें हर बात को तार्किक रूप से वर्तमान परिवेश एवं प्रतिस्पर्धा को देखते हुए बताने की आवश्यकता है।

संस्कार का सीधा-सीधा मतलब है, अच्छा क्या है और बुरा क्या है, इसमें अन्तर करना। क्या आचरण करने योग्य है और आचरण वर्जित है, इसकी समझ ही संस्कार है। व्यक्ति को किन गतिविधियों से आनन्द आता है और किसमें वह दुःखी होता है, यह संस्कार है। उदाहरण के लिये एक लड़का जब दूसरे लड़के का हाथ मोड़ता है और वह लड़का इस पर चिल्लाता है, तो हाथ मोड़ने वाला लड़का एक आनन्द की अनुभूति महसूस करता है। वहीं पर यदि किसी लड़के के चोट लग जाती है तो दूसरा लड़का दौड़कर उसके पट्टी बाँधता है और इसमें उसे खुशी होती है। इसी प्रकार एक लड़का दूसरे लड़के का पेन चुराकर खुश होता है कि चलो मुफ्त में एक से दो हो गए। जबकि दूसरा लड़का अपने पास रखे दो पेन में से एक पेन अपने जरूरतमन्द साथी को देकर खुश होता है।

इन संस्कारों के निर्माण के लिये हमें हमारे माता-पिता तथा गुरुजनों को अपने उपदेश देने की नीति-रीति को बदलना होगा। किस प्रकार के उपदेश और किस प्रकार की बातों से युवापीढ़ी आकर्षित होती है, वे तरीके खोजने होंगे।

किन बातों को आज की परिस्थितियों में युवावर्ग पसन्द नहीं करता है, यह समझना होगा। छोटे बच्चों का संस्कार-निर्माण तो बाल-साहित्य, कहानियाँ एवं विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के प्रोत्साहन देने से सम्भव हो सकता है। हमें बच्चों की पढ़ाई खेलकूद, संगीत, कला, मनोरंजन, वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रोत्साहन देने के लिये पुरस्कार देने चाहिए और इस प्रकार की प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिए ताकि बच्चे को अपने साथियों के समूह में प्रतिभावान होने की मान्यता मिले।

यदि सोच सही होगी, विचार और संस्कार सुस्पष्ट होंगे, तो निश्चित रूप से आचरण शुद्ध होगा। इन संस्कारों को पुनः स्थापित करने के लिये, प्रचार-प्रसार करने का, उपदेश एवं प्रवचन देने का और शिक्षण-प्रशिक्षण का कौन सा तरीका अपनाया जाय, यह एक चुनौती हम सबके सामने है। जिसके लिए हमें प्रयास करना है। आज के युग में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं प्रबंधन की तकनीकी से विश्लेषण किया जाकर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। उपदेशों के परिपाटी- प्रधान पुरानी रूढ़िवादी तरीकों में यदि परिवर्तन नहीं लाया गया तो जैन धर्म एक जाति मात्र बनकर रह जाएगा, जिसमें कथनी तथा करनी में आडम्बर की पराकाष्ठा निरन्तर बढ़ती जाएगी।

-सिविल लाइन्स, जोधपुर (राज.)

सदस्यों को सूचना

11,000/- की राशि प्रदान कर बने जिनवाणी के स्तम्भ सदस्य एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के आजीवन साहित्य सदस्य (3000/-) महानुभावों से निवेदन है कि उन्हें सदस्यता ग्रहण करने पर उस समय मंडल कार्यालय में उपलब्ध सभी साहित्य प्रेषित कर दिया गया था। किन्हीं कारणों से किसी सदस्य महानुभाव को मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चारों भाग यदि प्राप्त नहीं हुए हैं और जो सदस्य इसकी आवश्यकता को महसूस करते हैं तो वे सदस्य अपने सदस्यता नम्बर, पूर्ण पता मय फोन नम्बर सहित पत्र लिखकर मंडल कार्यालय को भिजवा दिरावें। जिससे उनकी सेवा में मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' का संक्षिप्तीकरण का सेट भिजवाया जा सके।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

आध्यात्मिक उन्नयन के आधार

डॉ. महावीरराज गेलड़ा
(पूर्व कुलपति, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ-राज.)

1. आध्यात्मिक उन्नयन का अभिप्राय है चेतना का ऊर्ध्वारोहण। इससे भीतर का प्रकाश प्रकट होता है। तत्वार्थ सूत्र में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की प्राप्ति को आत्मा का उन्नयन कहा है। संसार-परिभ्रमण करने वाली आत्मा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष है- कर्म-बंधन से मुक्ति। जैन सिद्धान्त दीपिका में कहा है:-

   आत्मशुद्धिसाधनं धर्मः।

   आत्मशुद्धि के सभी प्रयत्न धर्म हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है:-

   से सुयं च मे, अज्झत्थियं च मे।
   बंधप्पमोक्खो, तुज्झ अज्झत्थेव।।

   सुधर्मा स्वामी कहते हैं- मैंने सुना और अनुभव से जाना है कि बंधन एवं मुक्ति अपने ही भीतर है। अपने पुरुषार्थ से ही आत्मा मुक्त होती है।

2. आध्यात्मिक उन्नयन का मुख्य आधार है- धर्म। धर्म शब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक रहा है। उत्तराध्ययन के 14 वें अध्ययन में धर्म के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए एक सुन्दर प्रसंग उपस्थित होता है-

   भृगु पुरोहित जब अपने पुत्र और पत्नी के साथ भोगों को छोड़कर प्रव्रजित हुआ तो वहाँ के राजा ने भृगु के प्रचुर और प्रधान धन-धान्य आदि को लेना चाहा। उस समय महारानी कमलावती ने राजा को सावधान करते हुए कहा- "राजन्! वमन की हुई वस्तु का सेवन करने वाले पुरुष की प्रशंसा नहीं होती। तुम ब्राह्मण के द्वारा परित्यक्त धन को लेना चाहते हो, यह उचित नहीं।" (उत्तरा. 14/38) इसी प्रकार, इच्छा सीमित करने के लिए ये शाश्वत स्वर भी उभरे हैं- "यदि समूचा जगत् तुम्हें मिल जाए अथवा समूचा धन तुम्हारा हो जाए तो भी वह तुम्हारी इच्छा-पूर्ति के लिए पर्याप्त

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

नहीं होगा और वह तुम्हें त्राण नहीं दे सकेगा।'' (उत्तरा. 14/39)

ऐसा समझकर व्यक्ति तृष्णा को सीमित करे। वर्तमान में बढ़ता भ्रष्टाचार बढ़ती हुई तृष्णा का संकेत दे रहा है। व्यक्ति जब तक अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहे, तो उसका बुरा प्रभाव जनता पर नहीं पड़ता, किन्तु असीमित इच्छाएँ अपने एवं दूसरे के लिए कष्ट उत्पन्न करती हैं। भावना से ओत-प्रोत कमलावती कहती है- ''राजन् इन मनोरम काम-भोगों को छोड़कर जब कभी मरना होगा तब है नरदेव! एक धर्म ही त्राण बनेगा। इसके सिवाय कोई दूसरी वस्तु त्राण नहीं हो सकती।'' (उत्तरा. 14/40)

3. जैन धर्म में वे सभी क्रियाएँ उपादेय हैं जिनमें राग-द्वेष का अभाव है। राग-द्वेष के अभाव में समतामय जीवन प्रकट होता है और समता का विधायक पक्ष है- संयम। संयम का संबंध समस्त जीवन से है। समाज में परस्परता से जीना होता है। अतः संयमित जीना आवश्यक है। यहीं से व्रत-परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इन व्रतों का संबंध स्वयं से जितना है उससे अधिक दूसरों से है। दूसरा पक्ष जब उपस्थित होता है तब नैतिकता की धारणा प्रबल होती है।

''दूसरों के साथ अन्याय मत करो, दूसरों के अधिकारों का हनन मत करो, दूसरों के स्वत्व पर अपना अधिकार मत जमाओ, यह अध्यात्म प्रसूत नैतिकता का घोष है।''

जहाँ आध्यात्मिकता से जुड़ी हुई नैतिकता होगी, वहाँ अन्याय नहीं होगा, क्योंकि वहाँ आत्मतुला का सिद्धान्त प्रभावी होगा। नैतिकता को विश्व धर्म की संज्ञा दी जा सकती है, क्योंकि यह सबके द्वारा मान्य है। किसी धर्म का अनुयायी हो, नैतिकता को अस्वीकार नहीं कर सकता।

4. व्यक्ति समाज से जुड़ता अवश्य है, किन्तु मूल वैयक्तिक प्रवृत्ति को छोड़ता नहीं है। समाज के माध्यम से स्वयं की उन्नति चाहता है, स्वयं की परिधि बढ़ाता है तो वहीं अपना परिवार, अपना गांव, अपना शहर आदि अपनाता हुआ, एक विभाजक मनोवृत्ति का निर्माण कर लेता है। सामाजिकता कार्यवाहक जैसी होती है। अपने लिए समाज से कुछ मिलता है, तब तक वह सामाजिक बना रहता है, किन्तु जहाँ अपने स्वार्थ की क्षति मालूम होती है, वह असामाजिक हो जाता है। वैयक्तिक सम्पत्ति का उसे

जितना ध्यान होता है उतना सामाजिक सम्पत्ति का नहीं होता। जैन धर्म में 'मेरे पन' के भाव को, मूर्च्छा को, परिग्रह कहा है। परिग्रहभाव से मुक्त होकर, इच्छा का अल्पीकरण करने से सामाजिकता का स्वस्थ निर्वाह होता है। आज का व्यक्ति जिस भाषा में सोचता है उस पर एक व्यंग्य है कि एक आदमी बोला- मियांजी! आम आये हैं। मियां ने कहा- मुझे क्या? वह बोला- आपके ही आए हैं। मियां ने कहा- फिर तुझे क्या? कोई भी व्यक्ति स्वयं के जीवन में हस्तक्षेप नहीं चाहता।

प्रायः भ्रष्टाचार और अपराध एक ही जगह दिखाई देते हैं। उपभोक्तावाद ने भी समस्या को बढ़ाया ही है। इनके समाधान के लिए हमें जैन धर्म की व्रत परम्परा को स्वीकार करना होगा।

5. व्रतों की परम्परा में एक महत्त्वपूर्ण नियम है- अदत्तादान। जिस वस्तु पर अपना अधिकार नहीं, उस वस्तु को लेना अदत्तादान है। वर्तमान युग से पहले अचौर्य व्रत के अर्न्तगत कहा जाता था कि ताला तोड़कर, दीवार लांघ कर, जेब काटकर, जबरन लूट कर तथा चोरी की भावना से कोई वस्तु नहीं उठाऊँगा। अच्छा नमूना दिखाकर खराब माल नहीं दूँगा....आदि। लेकिन भ्रष्टाचार जैसा नाम, पूर्व में नहीं आता था। इन वर्षों में भ्रष्टाचार शब्द का प्रयोग हो रहा है। यह भ्रष्टाचार अदत्तादान की श्रेणी में आता है। अदत्तादान की प्रवृत्ति, समाज में विषमता, भय और सन्देह पैदा करती है। आज इस प्रवृत्ति से व्यक्ति, नौकरशाह, राजनेता आदि कहीं गहन रूप से तो कहीं आंशिक रूप से ग्रस्त हैं। एक समय था जब गुप्तकाल में, लोग घरों पर ताला नहीं लगाते थे, लेकिन आज भ्रष्टाचार से समाज असुरक्षित हुआ है। यह सही है कि गरीबी अनेक विकृतिओं को जन्म देती है, लेकिन जो सम्पन्न हैं वे भ्रष्टाचार में अधिक लिप्त हैं, यह समाज के लिए खतरे का सन्देश है। इसका सुधार आत्मपक्ष को पुष्ट करने पर ही हो सकता है।

6. जैन धर्म में श्रावक की आचार संहिता है। उसमें किसी की भी आजीविका का विच्छेद करने को अनैतिक कहा है। जैनों का अपरिग्रह का सिद्धान्त भ्रष्टाचार-उन्मूलन में सार्थक हो सकता है। इसके लिए पदार्थोन्मुखी प्रवृत्ति को छोड़ना होगा। गृहस्थ के लिए, एक सीमा तक भोग, परिग्रह समाज में समस्या पैदा नहीं करता है, लेकिन जिस वस्तु की वर्तमान में तथा भविष्य में भी आवश्यकता नहीं है उसे भी संग्रह करना समाज में विषमता पैदा करना है, यही परिग्रह है। असीमित सुविधा और भोग की लालसा ही

समस्या है। इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति भ्रष्टाचार का सहारा लेता है। किसी ने कहा है- ''भ्रष्टाचार से धन कमाकर आप पत्नी के हाथों में हीरे की चूड़ियाँ तो पहना सकते हो, पर इस अपराध के कारण आपके हाथों में लोहे की हथकड़ियाँ आ गई तो कैसे बचोगे?''

7. भ्रष्टाचार को रोकने के लिए यद्यपि राजतंत्र, न्यायतंत्र कड़ी सजा का प्रावधान कर भय पैदा करते हैं, यह समाज के हित में है, फिर भी व्यक्ति की चेतना इससे नहीं बदलती। अतः आत्मा के उन्नयन के बिना भ्रष्टाचार का स्थायी समाधान नहीं है।
8. दुष्यन्त कुमार जी की ये पंक्तियाँ कितनी सार्थक हैं, देखिए-

हो चुकी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमाचल से कोई गंगा निकलनी चाहिए,
मेरे सीने में न सही तेरे सीने में ही सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए,
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है यह सूरत बदलनी चाहिए।

-5 च 20, जवाहरनगर, जयपुर (राज.)

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है। कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को संवारना चाहते हैं। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी एवं योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्नांकित पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Dr. Dileep Dhing
Surana & Surana International Attorneys
61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004
Phone: 044-28120000/28120002

संगोष्ठी-आलेख

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार : कारण और निवारण

श्री परशुराम दवे 'कुसुम'

स्वतंत्रता प्राप्ति के छः दशकों के उपरान्त भी जब ट्रांसपेरेन्सी इन्टरनेशनल एजेन्सी यह घोषणा करती है कि "India is 87th most corrupt country in the world" तब हमारा सिर शर्म से नीचे झुक जाता है। हमें यह सोचने को मजबूर होना पड़ता है कि ऐसे कौनसे कारण हैं जिनसे हमारे देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के ग्राफ में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है?

सामान्यतया रुपये ले-देकर कोई काम करवाना भ्रष्टाचार के रूप में देखा जाता है। हालाँकि प्रत्येक भ्रष्टाचार के मूल में पैसे प्राप्त कर सुख-भोग करना या समृद्ध होने की भावना निहित है, किन्तु यह एक बहुआयामी अवधारणा है। इस दृष्टि से अपने दायित्व को ईमानदारी से नहीं निभाना भी भ्रष्टाचार है। इसके अलावा कार्य के निस्तारण में विलम्ब करना, निर्णय लेने में आनाकानी, जाति एवं पंथ के नाम पर पक्षपातपूर्ण रवैया, उत्तरदायित्व से भागना एवं अपनी क्षमता से ज्यादा दायित्व को ग्रहण कर उसे नहीं निभाना भी भ्रष्टाचार की परिधि में आता है। यह एकमुखी नहीं, अपितु बहुमुखी सांप है जो अपने ज़हर से सम्पूर्ण सामाजिक-व्यवस्था को विषाक्त कर रहा है।

विश्व बैंक ने भ्रष्टाचार की परिभाषा देते हुए कहा है- "पब्लिक ऑफिस का निजी फायदे के लिए किया जाने वाला प्रत्येक कार्य भ्रष्टाचार है।" हमारे देश के ऋषियों एवं मनीषियों ने तो कायिक, वाचिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ना को भी भ्रष्ट आचरण कहा है। किसी पर अकारण प्रहार करना, माता-पिता एवं बुजुर्गों-बड़ों को परुष (कठोर) वचन कहना एवं यहाँ तक कि किसी के बारे में बुरा सोचना भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में माना गया है।

प्रश्न उठता है- "सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।" तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।" आदि वाक्यों से

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

गुंजायमान हमारे हिन्दुस्तान में भ्रष्टाचार शिष्टाचार का पर्याय क्यों बन गया है? क्यों नौकरी के साथ आज ऊपरी आमदनी के बारे में पूछा जाता है? आइए विचार करें-

प्रत्येक देश के कुछ (1) सांस्कृतिक मूल्य (2) सामाजिक परिवेश, (3) राजनैतिक, प्रशासनिक एवं कानून व्यवस्था तथा (4) भौगोलिक पर्यावरण होते हैं एवं इनके सुदृढ़ीकरण से देश मजबूत होता है, किन्तु आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हमारे सांस्कृतिक मूल्य प्रदूषित हो रहे हैं। पाठशालाओं एवं विश्वविद्यालयों में आज "मातृदेवो भव पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, स्वाध्यायान्मा प्रमदः, श्रद्धया देयम्" जैसे वाक्यों की सीख सुनाई नहीं देती। विद्यार्थी अपने पाँच गुणों- "काकचेष्टा बकोध्यानं स्वल्पनिद्रा तथैव च अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थिनां पंचलक्षणम्" के स्थान पर "सिनेमाचर्चा केशध्यानम्, दिवानिद्रास्तथैव च। चाटाहारी, भ्रमणचारी विद्यार्थिनां पंचलक्षणम्" ने जगह ले ली है। 'अर्जुन को दिखाई नहीं देती अब चिड़िया की आँख। आज वे वीडियो, टीवी देख कर डिस्को डांस कर रहे हैं।' हमारे देश में "अतिथिदेवो भव" अर्थात् अतिथि को देव समझना चाहिए, किन्तु आज दूरदर्शन के नग्न दृश्यों को देखने में मग्न मानव को अतिथि दानव की तरह दिखाई देता है। बच्चे का बचपन टी.वी. निगल गया है। आज "घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित" जैसे दृश्यों का लोप हो गया है। आचार, विचार, नैतिकता एवं संतोषी प्रवृत्ति का ह्रास होने के कारण मानव आधुनिकता की चकाचौंध में अन्धा हो भ्रष्टाचार को गले लगा रहा है। आध्यात्मिक उन्नयन के तत्त्वों-धृतिःक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः में गिरावट आ रही है और काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मात्सर्य आदि पतनोन्मुख तत्त्व बढ़ रहे हैं। सुख और दुःख से अप्रभावित मनस्वी कार्यार्थी महापुरुष आज कहाँ हैं, यथा- "क्वचिद् भूमौ शय्या, क्वचिद् पर्यंकशयनम्। क्वचिद्च्छाकाहारी, क्वचिद् शाल्योदनरुचिः। मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखम्, न च सुखम्।" 'कभी भूमि पर या कभी सोते हैं पलंग पर। कभी शाक खाते या कभी पाँच पकवान खा लेते। मनस्वीकार्यार्थी महापुरुष सुख दुःख को हमेशा ही समान मानते हैं।' निश्चित रूप से आध्यात्मिक पतन एवं भौतिक विलासी प्रवृत्ति से आज मानव भ्रष्टाचार की ओर अग्रसर हो रहा है। आज **"सांई इतना दीजिए जामें कुटुम्ब समाय, मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय"** आदि पंक्तियाँ हो गई हैं- बेमानी। हरदम रहती है लालसा, कैसे मिले माल-पानी।

जिस देश का सामाजिक परिवेश अनुशासित हो, वही देश संगठित हो सकता है। स्त्री एवं पुरुष समाज के आधार स्तम्भ हैं। हमारे देश का प्राचीन इतिहास- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात् जहाँ नारी का मान सत्कार होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। कहने को तो आज भी नारी को पुरुष के समान अधिकार देने की बातें की जाती हैं, किन्तु आज भी 'महिला विधेयक' लंबित पड़ा हुआ है। आज भी मानव पुरुष-अहंता की मानसिक विकृति से ग्रस्त है। आज भी ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी'' के दृश्य यत्र तत्र सर्वत्र दिखाई दे रहे हैं। नारियों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आँच आ रही है। पंच सितारा होटलों के स्नानघरों में प्रयुक्त डिजिटल कैमरों से ललनाओं के अर्द्धनग्न चित्र खींचकर उन्हें भोग की सामग्री बनाया जाता है या शोषण किया जाता है। **'पुरुष समाज की धनलोलुप दानवी दहेज प्रवृत्ति के निवाले, आज भी नाना नववधुओं को कर रहे हैं- आग के हवाले'।**

अनादिकाल से भारतीय समाज में वर्णाश्रम जैसी अनुपम व्यवस्था थी, जिससे समाज में समरसता, व्यवस्था एवं अनुशासन विद्यमान रहता था। किन्तु आज का भारतीय समाज अनेकानेक जातियों में बँट गया है, जिसका लाभ तथाकथित राजनेता चुनाव के समय उठाते हैं। एक तरफ से यह सामाजिक शोषण की स्थिति है, जो भविष्य में जातीय संघर्ष का रूप ले सकती है, जो देश के लिए एक शुभ संकेत नहीं है। आज भारतीय समाज के संपूर्ण घटक यथा- मजदूर, मालिक, व्यापारी, कृषक, डॉक्टर हो या इंजीनियर या नौकरी पेशावर्ग सभी उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। **'आज के भारतीय समाज का है चिन्तन, येनकेन प्रकारेण कैसे हो पैसे का संग्रहण।'** कहा भी है- **''यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः। स पंडितः स श्रुतवान् गुणज्ञः। स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते।''** अर्थात् 'जिसके पास पैसा है वह है कुलीन। वह विद्वान् है और वह है गुणवान। वह श्रवणीय है और है दर्शनीय। जिस प्रकार सोने में होते हैं- सारे गुण। उसी प्रकार पैसे में होते हैं वे सारे गुण।' आज का व्यापारी मसालों, घी, तेल में मिलावट कर रहा है। दवाई विक्रेता नकली दवाइयों को बेचकर संपूर्ण मानवता के साथ ही विश्वासघात कर रहा है। आज का मजदूर एवं कृषक पेड़ पौधों कीअंधाधुन्ध कटाई कर पर्यावरण के साथ खिलवाड़ कर रहा है एवं बिजली की चोरी कर देश के साथ तथा ज्यादा

दूध लेने के चक्कर में मवेशियों के साथ इंजेक्शन लगाकर अत्याचार कर रहा है। डॉक्टर ऑपरेशन के बहाने किडनी निकाल रहा है एवं इंजीनियर घटिया बाँधों या पुलों का निर्माण कर रहा है। आज कर्मचारी वर्ग तथाकथित आधुनिकता की चकाचौंध में अंधा होता जा रहा है। निम्नवर्ग अपनी पगार कम होने की भरपाई करने के लिए घूस ले रहा है, वहीं मध्यम कर्मचारी आज के युग की सारी सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए रिश्वत ले रहा है, और उच्च अधिकारी वर्ग अपनी सात पीढियों को मालामाल करने के लिए बड़े-बड़े घोटाले कर रहा है। आज रिश्वत का फ्लो ऊपर से नीचे की ओर आ रहा है एवं फिर नीचे से ऊपर की ओर जाता है। इस दुष्प्रवृत्ति के बारे में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गाँधी की टिप्पणी सटीक लगती है कि "जनता के लिए दिए गए 100 रु. जनता तक पहुँचते-पहुँचते मात्र 15 रु. ही रह जाते हैं।" 85 प्रतिशत बंदर बाँट बीच राह में ही हो जाती है। निश्चित ही यह स्थिति अत्यन्त भयावह है।

आज हमारे देश में जनतंत्र है, किन्तु चुनाव के दिनों में तथाकथित बाहुबली एवं भ्रष्टलोग अपने धनबल, भुजबल के भरोसे चुनाव जीतकर जनता पर राज करते हैं। चुनावी समर में राजनैतिक लोग बड़े-बड़े उद्योगपतियों से धन लेते हैं, फिर चुनाव जीतने पर उत्पादक मूल्य बढ़ाने की पूरी छूट देकर देश की जनता को मंहगाई के झंझावात में झोंक देते हैं। 'मिनिस्टर बनने के बाद नेता, धन पाने को होता है- उतावला। इसके लिए प्रारम्भ होता है- कर्मचारियों, अधिकारियों के स्थानान्तरण का एक अन्तहीन सिलसिला। इसके दबाव में लाये जाते हैं- सरकारी कार्यालय के पदाधिकारी। इस प्रकार राजनेता, अपराधकर्मी और नौकरशाह की तिकड़ी जनता की खून चूसने वाली बन जाती है- व्यापारिक बिरादरी। इनसे जनता हो गई है अत्यन्त विकल। किन्तु ये तिकड़ी अपने चारों ओर के उपलब्ध तंत्र को लेना चाहती हैं- पूर्ण निगल।'

जनता को सुरक्षा प्रदान करने वाले प्रशासनिक एवं पुलिस तंत्र बिना घूस लिए किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर दिखाई नहीं देते। विभागीय गणना के अनुसार पुलिस विभाग में सर्वाधिक भ्रष्टाचार व्याप्त है। इसका ज्वलन्त उदाहरण है- हाल ही में एक पुलिस महिलाकर्मी की विभागीय क्वार्टर में बलात्कार कर हत्या कर दी गई। न्यायालय जहाँ न्याय की रक्षा की जाती है, वे भी भ्रष्ट आचरण से अछूते नहीं रह गए हैं। भारत के पूर्व कानून मंत्री जी ने हाल में ही रहस्योद्घाटन किया कि भारत के सोलह हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीशों में से आठ पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप थे। ट्रांसपेरेन्सी इंटरनेशनल एजेन्सी की

रिपोर्ट के अनुसार सन् 2009-10 में कानून के क्षेत्र में कार्यरत अधीनस्थ न्यायपालिकाओं को 2630 करोड़ रुपये भ्रष्टाचार के रूप में दिए गए। आज भी साढ़े तीन करोड़ मुकदमे विभिन्न न्यायालयों में लम्बित पड़े हैं। जहाँ न्याय में इतनी देरी हो रही है वहाँ आम आदमी न्याय की आशा कैसे कर सकता है?

आज हमारे देश की सीमाएँ सुरक्षित नहीं हैं। कश्मीर का मसला हो या सीमाओं पर आतंकवाद की छाया। उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में नक्सलवाद का दबदबा हो या चीन का सीमा विवाद। नेपाल की नाराजगी हो या बँगलादेश की शरणार्थी समस्या। सारी समस्याएँ मुँहबाँये खड़ी हैं। ये सभी समस्याएँ भ्रष्टाचार के भूलभुलावे में भटक गई हैं। क्या कारण है कि आतंकी जन सीमा पार से आकर मुंबई में विस्फोट कर जाते हैं? चाँदी के चंद टुकड़ों पर हमारे सुरक्षा प्रहरी या प्रशासक अपना ईमान-धर्म एवं कर्तव्य-कर्म भूलते नज़र आ रहे हैं जो निश्चित ही देश की सुरक्षा के लिए शुभ संकेत नहीं है।

'जब तक नहीं होगी स्वहित से ज्यादा देश हित की भावना।
तब तक देश की सीमा को खतरा है, यही है जानना।।'

भ्रष्टाचार का निवारण कैसे हो? यह एक यक्ष प्रश्न है, किन्तु इसको मिटाने या कम करने के प्रयत्न किए जा सकते हैं। 'शत प्रतिशत साक्षरता का हो आह्वान, हो सकता है भ्रष्टाचार का निदान।' आज भी हमारे देश की 40 प्रतिशत आबादी निरक्षर है, उसमें भी स्त्री-पुरुषों की शिक्षा में भी असमानता है। बिना अक्षर ज्ञान के देश में घटित घटनाओं से जनमानस अनभिज्ञ रहता है एवं अपना भला-बुरा नहीं जान पाता है। यही कारण है कि आज भी हमारे देश की निरक्षर जनता को चुनावों के दौरान तथाकथित बाहुबलियों द्वारा भेड़बकरियों की तरह हाँककर अपने चुनाव चिह्न पर अंगूठे लगाने के लिए बाध्य किया जाता है। अतः देश में शत-प्रतिशत साक्षरता आज की आवश्यकता है। साक्षर व्यक्ति अपने भविष्य निर्धारण के लिए स्वयं सक्षम होता है। कानून की लचीली प्रक्रिया के दौरान कई आरोपी मर जाते हैं या दबाव में मुकद्में वापस ले लेते हैं, इससे भ्रष्ट कर्मियों, पदाधिकारियों का मनोबल बढ़ जाता है। अतः **'आज के समय का कार्य है- महान्, भ्रष्ट व्यक्तियों के लिए हो कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान। जब तक नहीं होगा कड़ी सजा का भय, तब तक भ्रष्ट व्यक्ति घूमते रहेंगे निर्भय।** कहा भी है- ''भय बिन होत न प्रीत'' भय के बिना भ्रष्ट व्यक्तियों पर अंकुश असंभव है।

सूचना एवं मानवाधिकार कानून को दृढ़ता से लागू किया जाय एवं प्रत्येक व्यक्ति को इसकी जानकारी दी जाय। ऑफिस में देर से आने की दुष्प्रवृत्ति को दूर किया जाय तथा सी.आर. कार्य के आकलन के आधार पर भरी जाय। चुनावी खर्च सरकार द्वारा सरकारी देख-रेख में किया जाय एवं चुनाव में खड़े होने के लिए आवश्यक शिक्षा एवं चरित्र के मानदण्ड निश्चित किये जायें, जिससे उम्मीदवार का सही चुनाव किया जा सके। 'इन सबके साथ यदि भ्रष्ट व्यक्तियों की हो वापसी और हो चुनाव रद्द। **अन्ना हजारे का जन लोकपाल बिल हो प्रभावी, तो हो जाए भ्रष्टाचार भगाने का संकल्प सिद्ध। विदेशी बैंको में है- देश की पूंजी जमा। वापस लाने का हो प्रभावी प्रयास और उसे पाना, तो निश्चय ही रुक सकता है- भ्रष्टाचार का पनपना।'**

राष्ट्रीयता की भावना प्रत्येक नागरिक में कूटकूट कर भरी हुई होनी चाहिए। ''हम करें राष्ट्र आराधन, हम करें राष्ट्र का चिन्तन'' जैसी संस्तुति को प्रत्येक भारतीय हृदयंगम कर अपने जीवन चरित्र में उतारे एवं राष्ट्रीयता की भावना से भरपूर एकजुट होकर भ्रष्टाचार के सम्मुख सीना तानकर खड़ा हो जाए। जहाँ भ्रष्टाचार, कदाचार हो वहाँ गांधी जी के सदृश सत्याग्रह खड़ा कर दें, जैसा कि जन लोकपाल बिल पर अन्ना हजारे ने कर दिखाया और अंततः सरकार को झुकना पड़ा। ऐसे ही जन जागरण से व्युत्पन्न जनता की जीवट जिजीविषा से ही भ्रष्टाचार पर रोक संभव है, अन्यथा नहीं। हरियाणा के हिसार उपचुनाव में अन्ना टीम ने लोकपाल बिल पास करने में देरी से व्यथित होकर कांग्रेस का विरोध किया और कांग्रेस का प्रत्याशी अपनी जमानत भी नहीं बचा पाया। भ्रष्टाचार के खिलाफ जन-जागरण का यह ज्वलंत प्रमाण है। एक अन्य घटना में एक आर्मी ऑफिसर ने अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् पिता की सेवा के लिए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (VRS) मांगी। विभाग की अस्वीकृति के पश्चात् न्यायालय में गया। उच्चतम न्यायालय ने उसके दावे को इस आधार पर खारिज कर दिया कि परिवार एवं समाज से भी बड़ा राष्ट्र हित है। अतः स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति नहीं दी जा सकती। वास्तव में हर व्यक्ति में राष्ट्र हित की भावना भरी होनी चाहिए, तभी भ्रष्टाचार मिट सकता है।

राष्ट्रीय नेताओं एवं व्यवस्थाओं को चाहिए कि देश में व्याप्त बेरोजगारी एवं भूखमरी की समस्या पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। यदि देश में सभी को रोजगार एवं भरपेट भोजन मिलेगा तो वह भ्रष्ट आचरण की तरफ

उन्मुख नहीं हो सकेगा।

भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए अमीर-गरीब की खाई को पाटना अत्यावश्यक है। आज अमीर ज्यादा अमीर एवं गरीब अधिक गरीब हो रहे हैं। यही कारण है कि अमीर अपनी दस पीढ़ियों को धनवान बनाने हेतु एवं गरीब अपनी उदरपूर्ति के लिए भ्रष्ट कदम उठा रहा है।

आज रोजगार एवं पगार में अत्यधिक असमानता है। इसकी ओर भी ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। आज के इस मंहगाई के युग में निम्न तबके के सरकारी कर्मचारी की पगार न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा करने में असमर्थ है। यही कारण है कि सरकारी सेवक भ्रष्ट आचरण कर रहे हैं। कहने को तो जनता ही मालिक है तथा सरकारी स्टाफ एवं पदाधिकारी जनता के सेवक हैं, किन्तु आज ये जनता के सेवक बिना पैसे खाए जनता का काम नहीं कर रहे हैं। जनता भी अपने स्वार्थवश अपना काम करवाने की रिश्वत देती है। इसमें रिश्वत लेने एवं देने वाले दोनों दोषी हैं। अतः रिश्वत देने वाले के लिए भी कड़े दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए।

संस्कारयुक्त वातावरण, अध्यात्म एवं नैतिकता की शिक्षा के द्वारा भ्रष्टाचार की लगाम को मजबूती से कसा जा सकता है। अकेली अहिंसा, अपरिग्रह एवं संतोषी प्रवृत्ति भी भ्रष्टाचार रूपी बांध के प्रवाह को थाम सकती है। वस्तुतः भ्रष्टाचार के लिए हर व्यक्ति जिम्मेदार है। प्रत्येक व्यक्ति की जवाबदेही तय करनी होगी। हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार ने ऐसे बिल को पास किया है जिसमें एक अवधि तक कार्य सम्पन्न नहीं होने पर उस व्यक्ति या अधिकारी पर पेनल्टी एवं दण्डात्मक कार्यवाही करने का प्रावधान रखा गया है। राजस्थान में इसका अनुकरण किया जा रहा है। ऐसे कदम अन्य प्रदेशों को भी उठाने चाहिए। इसके साथ ही भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो या सी.बी.आई. पर राजनैतिक हस्तक्षेप बंद होना चाहिए।

भ्रष्टाचार के दलदल में फँसी सरकार हो या कोई अन्य दल, सभी का भविष्य अनिश्चित है। आज भ्रष्टाचार देश के जनमानस की धमनियों में व्याप्त हो गया है, तभी तो सर्वोच्च न्यायालय को इस संदर्भ में बहुत तल्ख (कठोर) टिप्पणी करनी पड़ी है कि- "क्यों न रिश्वत पर रेट तय कर दी जाए।" आज भ्रष्टाचार का ही प्रभाव है कि चंचल जैसी कृषि विधि पदाधिकारी अपने मातृगृह को किराएदार के चंगुल से मुक्त करवाने में विफल रही एवं अंततः उसको

खुदकुशी करनी पड़ी। यह उदाहरण न्यायालयों की कार्य प्रणाली पर प्रश्न चिह्न खड़ा कर रहा है। यह प्रभाव है भ्रष्टाचार का कि जेल की अभेद्य दीवारों के भीतर संरक्षित कैदियों में से एक कैदी ने जोधपुर की जेल में जेलर श्री भट्ट की हत्या कर दी। यह भ्रष्टाचार का ही प्रभाव है कि कॉमनवेल्थ गेमों में करोड़ों के घोटाले की जाँच के लिए समिति बैठानी पड़ी एवं कमेटी के प्रमुख सुरेश कलमाड़ी को सी.बी.आई. जेल की हवा खानी पड़ी। 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले में राजा को जेल हुई, यह जग जाहिर है। हाल ही में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस.येदियुरप्पा भ्रष्टाचार के आरोप के तहत जेल में हैं। इन घटनाओं ने भारत को भ्रष्टाचार के मामले में ट्रांसपेरेन्सी इन्टरनेशनल ऐजेन्सी की लिस्ट में तीन पायदान ऊँचा बढ़ा दिया है। नरेगा में हो रहा भ्रष्टाचार जग जाहिर है। लॉटरी खोलने में भी लाखों रुपये प्राप्त कर अपने चहेतों के नाम लॉटरी खोलने का घपला भी हाल ही में उजागर हुआ है। यह भ्रष्टाचार का ही प्रभाव है कि वरिष्ठ सैन्य अफसरों ने कारगिल में शहीद अपने ही भाइयों की विधवाओं को मिलने वाले मकानों को हड़पने का दुष्कृत्य कर सेना के साथ-साथ देश को भी शर्मसार कर दिया है। आज भारत के विश्व शक्ति बनने की राह में भ्रष्टाचार सबसे बड़ी बाधा है। आज का हाल यह है कि कल्याण विकास योजनाओं में प्रयुक्त की जाने वाली बहुत बड़ी रकम नेताओं के विदेशी बैंकों के खाते में चली जाती है। यदि भ्रष्टाचार पर अन्ना हजारे जैसे सख्त लोकपाल कानून बनाकर इसका कड़ाई से पालन किया जाय तो आज हमारे सम्मानीय लोगों, राजनेताओं का तीन चौथाई भाग देश की जेलों के भीतर होगा। अतः समय रहते सजग होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ पूरा दम-खम लगा देना है, इसके बिना सफलता 'आकाशकुसुम' जैसी ही होगी। अंत में मेरा विचार है-

चारित्रिक पवित्रता, सदाशयता एवं ईमानदारी
ये तीन बातें जीवन में पड़ती हैं बहुत भारी
चाहे कितने ही झंझावात या तूफान आएँ
इन तीन बातों से पार लग जाती है- जीवन की सवारी।
और इन तीन बातों से खत्म होती है- भ्रष्टाचार की बीमारी।

-सेवानिवृत्त, उपमंडल अभियंता (बी.एस.एन.एल.)
111, सेक्टर 'सी' राजीवनगर,
तीसरी पोल के बाहर, महामन्दिर, जोधपुर (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

व्रतों के पालन में भ्रष्टता

श्री सम्पतराज चौधरी
(कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर)

पुराने जमाने की बात है। सास ने बहू से कहा-"जब बिलौना करो और मक्खन ऊपर आ जाये तो मुझे आवाज दे देना।" बहू ने बिलौना किया और थोड़ी देर बाद मक्खन ऊपर आ गया। सास को आवाज देने में बहू के सामने एक समस्या आ गयी। बहू के ससुर का नाम था- मक्खनलाल। उस समय महिलाएँ पति और ससुर का नाम लेकर नहीं पुकारती थीं। बहू ने एक तरीका सोचा और सास को आवाज दी-"सासूजी, ससुरजी छाछ पर तैर रहे हैं।" सास घबराई हुई आई और बोली-'कहाँ?' बहू ने मक्खन की तरफ इशारा किया और कहा-"ये रहे ससुरजी।" जब अर्थबोध ही नहीं होगा तो मक्खन की जगह ससुर जी ही याद आयेंगे। ऐसी ही स्थिति कुछ व्रत पालन करने वाले लोगों के साथ है। वे अर्थबोध के बिना क्रिया करते रहते हैं।

जब मैं छोटा था तब आस-पड़ौस की बुजुर्ग महिलाओं को सामायिक करते देखता था। उस वक्त सामायिक की अवधि जानने के लिये घड़ियाँ न होकर रेत-घड़ियाँ हुआ करती थीं। रेत घड़ी को 'समाई' के नाम से पुकारा जाता था। वे मुँहपत्ती लगाती, 'समाई' सामने रख लेती, फिर कुछ स्पष्ट, कुछ अस्पष्ट सामायिक लेने के पाठ बोलती और उसके बाद माला फेरने लग जाती। बीच-बीच में घर के कामों के लिये इशारों से बहू को निर्देश भी देती जाती। रेतघड़ी की रेत नीचे भर जाती तब सामायिक पाल लेती। जो बुजुर्ग महिलाएँ घर में अकेली होती वे घर की थली (चौखट) के अन्दर बैठकर सामायिक करती। पूछने पर कहती कि अकेले घर के अन्दर मन नहीं लगता, यहाँ बैठती हूँ तो आने-जाने वाले को देखते हुए मन लग जाता है और सामायिक आराम से हो जाती है। जब सामायिक के उद्देश्य का ही पता नहीं है तो उस ओर जाने की प्रवृत्ति कैसे होगी? ऐसी स्थिति में व्रतों में तो आना ही नहीं हुआ, उसके पहले

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

ही व्रतों से गिर गये।

एक व्यक्ति छह दिशाओं को प्रणाम कर रहा था। दूसरे व्यक्ति ने पूछा- "क्या कर रहे हो?" उत्तर में उसने कहा- "मैं छहों दिशाओं को नमस्कार कर रहा हूँ।"

"तुम ऐसा किसलिए कर रहे हो?"

"क्योंकि, यह हमारे धर्म का विधान है।"

"पर, ऐसा विधान क्यों है?"

"यह तो मुझे पता नहीं।"

"क्या तुम अपने पूर्वजों, अनुयायियों, गुरुजनों, मित्रों, देवों और अपने यहाँ काम करने वालों का सम्मान करते हो?"

"किसी का करता हूँ, किसी का नहीं करता हूँ।"

"फिर तो कोरी दिशाओं को प्रणाम करने से कोई मतलब नहीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि, पूर्व दिशा को नमस्कार करना पूर्वजों का सम्मान करना है, पश्चिम दिशा को नमस्कार करना अपने अनुयायियों का सम्मान करना है, दक्षिण दिशा को नमस्कार करना गुरु दक्षिणा के योग्य बनकर उनका सम्मान करना है, उत्तर दिशा को नमस्कार करना अपने मित्रों का सम्मान करना है, ऊँची दिशा को नमस्कार करना अपने आराध्यदेव का सम्मान करना है और नीची दिशा को नमस्कार करना अपने नीचे काम करने वालों का सम्मान करना है।"

छहों दिशाओं को नमस्कार करने का मर्म उसे समझ में आ गया।

व्रत विधि-विधान से करते हैं, पर लक्ष्य का पता नहीं है, व्रत की प्रतिज्ञा का अर्थ नहीं जानते हैं और अर्थ यदि जानते भी हैं तो उसका मर्म नहीं जानते हैं, इसलिए व्रत की भावधारा से जुड़ नहीं पाते हैं। फलस्वरूप निरन्तर व्रत करते हुए भी जीवन में रूपान्तरण नहीं होता। व्रत की क्रियाएँ केवल कर्म-काण्ड बन जाती हैं। इस प्रकार व्रतों में भ्रष्टता के प्रमुख कारण हैं अर्थबोध का अभाव, उद्देश्य से अनभिज्ञता एवं व्रतों के मर्म से अज्ञानता।

'व्रतों के पालन में भ्रष्टता' - अर्थ का अवबोध

आज चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। राजनीति में सक्रिय नेताओं और सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार नित नये प्रकाश में आ रहे हैं। अंग्रेजी में इसे Corruption कहते हैं। इसके निवारण के लिये अनेक कानून बने हैं। उन

सब कानूनों में भ्रष्टाचार की परिभाषा का सार है- "abuse of power by politician and Government employees for illegitimate private gain." इस gain को कानूनी भाषा में graft कहा गया है। जन-साधारण में इसको bribery या रिश्वत कहते हैं। भ्रष्ट आचरण के लिये दण्ड का प्रावधान है, पर इसे कानूनन बाहरी साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित करना होता है। भाव जगत से इसका अधिक सम्बन्ध नहीं है। जबकि भ्रष्टाचार भी दुश्चरित्र से ही होता है। आध्यात्मिक जगत में भ्रष्ट आचरण का व्यापक अर्थ है। विकिपीडिया ज्ञानकोष के अनुसार-"corruption in philosophical concept refers to spiritual or moral impurity or deviation from ideals. Moral decline is typically characterized as reduced adherence to values and widespread lapses in ethical behaviour." उत्तराध्ययन सूत्र के सतरहवें अध्ययन में कहा गया है कि जो श्रमण अपना व्रत धारण करके उसके प्रतिकूल आचरण करता है, वह पापश्रमण है। उस सूत्र की टीका में आचार्य हस्ती ने ऐसे श्रमण को 'भ्रष्ट' कहा है। 'भक्तपरिज्ञा' नामक ग्रन्थ में कहा है-**''दंसणभट्ठो भट्ठो दंसणभट्ठस्स नत्थि निव्वाणं''**, अर्थात् जो सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट है, वस्तुतः वही भ्रष्ट है, पतित है, और दर्शन से भ्रष्ट को मोक्ष प्राप्त नहीं होता। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान् ने कहा है कि सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं होता, ज्ञान के अभाव में चारित्र के गुण नहीं आते और गुणों के अभाव में मोक्ष नहीं होता।

प्रश्न होता है कि व्रत क्या है? सरल शब्दों में कहूँ तो जैन साधना पद्धति में पापों का आचरण न करने की प्रतिज्ञा लेना व्रत है। यद्यपि यह निवृत्तिपरक परिभाषा है, लेकिन इसमें सत्कार्यों में प्रवृत्ति करना भी समाहित है, क्योंकि पापों की निवृत्ति से सत्कार्यों में प्रवृत्ति स्वयमेव हो जाती है। निर्ग्रन्थ श्रमण पाँच महाव्रतों के धारक होते हैं, जिनके नाम हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। निर्ग्रन्थों के व्रत पालन में कोई आगार नहीं होते हैं, अतः ज्ञानीजनों ने इन्हें मोती स्वरूप कहा है, क्योंकि आभूषण बनाने में मोती को अखण्ड रूप में ही काम में लिया जाता है। वैसे ही श्रमण भी अपने व्रतों को अखण्ड यानी पूर्ण रूप से पालन करने के लिये ही लेते हैं। किन्तु श्रावक के व्रतों को स्वर्ण की संज्ञा दी गई है। आभूषण बनाने के लिये जिसको जितनी मात्रा में सोना चाहिए, वह उतनी मात्रा में ले सकता है। श्रावक के बारह व्रत होते हैं, पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत। श्रावक जितने व्रत, जितनी मर्यादा में

लेना चाहता है, उतने ले सकता है। अतः श्रावक के व्रत आगार युक्त होते हैं। जैन दर्शन कहता है कि कषायों से छुटकारा पाना ही मुक्ति है। कषाय वे, जो हमारी आत्मा को कलुषित करते हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ कषाय हैं। क्रोध और मान द्वेष रूप हैं तो माया और लोभ राग रूप हैं। इनसे निवृत्ति का आचरण ही व्रत पालन है।

बोध का जागरण

परमात्मा को प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति संन्यास लेकर जंगलों में कठिन तपस्या करने निकल गया। तीन वर्ष तक कठिन तपस्या की। कन्दमूल और फल पर गुजारा किया। सर्दी, गर्मी और बरसात सभी को सहा, पर उसे परमात्मा नहीं मिले। मन में एक दिन विचार आया-संन्यास, तपस्या आदि सब बेकार हैं। संन्यास छोड़, वह वापिस अपने घर की ओर चल पड़ा। ज्यों ही अपने नगर में प्रवेश किया, उसे एक शानदार भवन दिखा। उस भवन पर एक नाम लिखा था, जो उसका संन्यास लेने के पहले मित्र था। सोचा, मित्र से मिल लूँ। भवन के अन्दर गया तो उसका मित्र वहाँ मिल गया। मित्र को आश्चर्य हुआ और उससे पूछा-"संन्यास छोड़कर वापिस क्यों आ गये?" वह बोला- "संन्यास में कुछ नहीं धरा है, खाली दुःख भोगने होते हैं। न शांति मिली, न परमात्मा। पर तुम तो बड़े भाग्यशाली हो कि तीन साल में एक भव्य भवन बना लिया, जिसमें सब सुख-सुविधा दिख रही है।" मित्र ने कहा- "चलो तुम्हें भवन दिखाऊँ। यह मेरी बैठक का कमरा है, यह शयन कक्ष है, यह मनोरंजन कक्ष है, यह अध्ययन कक्ष है, यह ऑफिस है, यह बेटे का कमरा है और यह बेटी का कमरा है। इनमें सारे फर्नीचर बाहर से मंगाये हुए हैं।" वह बोला- "मित्र, तुमने सब कमरों के बारे में तो बता दिया, लेकिन जो आखिर में कमरा है, उसमें क्या है, यह नहीं बताया?" मित्र बोला-"उसमें राम-राम है।" उसे आश्चर्य हुआ और पूछ बैठा-"राम-राम भी कोई चीज होती है जो उस कमरे में है?" मित्र बोला- "अरे, तुम इतना भी नहीं समझे! उसमें राम-राम का मतलब है, वह खाली है इसलिए तुम्हें नहीं बताया।" मित्र के इतना कहते ही उसकी आँखें खुल गई। सोचा, जो खाली होता है उसमें 'राम' यानी 'परमात्मा' होता है। मैं तो खाली हुआ ही नहीं, मुझमें तो कितने ही विकार भरे हैं। इनसे खाली होऊँगा तभी तो परमात्मा मिलेंगे। उसे बोध की किरण मिल गई। वह फिर से साधना पथ पर निकल पड़ा, अपने को खाली करने। जिसकी आँखें खुल गई, उसको एक

दीपक भी काफी प्रकाश दे देता है, पर अंधे के आगे करोड़ों दीपक भी जला दो तो भी उसे प्रकाश नहीं मिलेगा।

जैन दर्शन में कहा है कि सम्यक्त्व की प्राप्ति होते ही आँखें खुलती हैं और साधना का पथ दिख जाता है। जो जीव और अजीव को जानता है और वीतराग की वाणी पर पूर्ण आस्था रखता है, वह सम्यग्दृष्टि होता है। इस सम्यक्त्व की प्राप्ति के अनन्तर ही व्रत की भूमिका का प्रारम्भ होता है। जो इन पर आस्था नहीं रखता, वह मिथ्यादृष्टि है। जैन साधना-पद्धति में दो बहुत ही महत्त्वपूर्ण शब्द हैं- द्रव्य और भाव। मैं काम करता हूँ, यह द्रव्य क्रिया है। मैं जानता हुआ तन्मयता से काम करता हूँ, यह द्रव्य के साथ भाव क्रिया है। जहाँ क्रिया और चेतना मिलकर एक ही दिशा में गति करते हैं, वहाँ समरसता होती है और जहाँ क्रिया और चेतना विपरीत दिशा में चलते हैं, वहाँ विषमता होती है। यह विषमता ही व्रत पालन में भ्रष्टता लाती है। आप कानों से सुनें, लेकिन ध्यान कहीं ओर चला जाये तो सुनने की कोई सार्थकता नहीं।

पाप कर्मों की आलोचना के लिये प्रतिक्रमण किया, पापों को फिर से न करने का संकल्प लिया, लेकिन दैनिक व्यवहार में उस संकल्प की कोई चेतना नहीं रखी तो प्रतिक्रमण की क्रिया निष्प्राण ही रहेगी। वर्षों माला फेरी पर आनन्द नहीं आया, क्योंकि माला फेरना एक द्रव्य क्रिया ही रही, उसमें भावधारा नहीं जुड़ी। मौनव्रत लिया, लेकिन मन की अपेक्षाएँ मौन नहीं हुईं, क्योंकि मौन का मर्म ही नहीं समझा। उपवास किया और शरीर की ममता का त्याग किया, लेकिन अंतरंग में कषायों का त्याग नहीं किया तो उपवास केवल कायक्लेश हो गया। अठाई का तप किया, लेकिन पीहर वालों ने अपेक्षित मायरा नहीं दिया तो नाराज हो गये और पीहर वालों को उपालम्भ दे दिया कि बड़ी तपस्या पर छोटा मायरा शोभा नहीं देता। आहार का परिग्रह तो कम कर दिया, लेकिन भाव रूप में धन का परिग्रह बढ़ा लिया। व्रत पालन की ये विकृतियाँ हैं। छोटा सा व्रत करते ही बड़े-बड़े निमन्त्रण दे दिए जाते हैं। व्रत में दर्शन की जगह प्रदर्शन आ गया है। प्रदर्शन जब तक दूसरों को व्रत करने की प्रेरणा दे, तब तक तो ठीक है, पर इससे अधिक आडम्बर है, जो धर्म के मर्म को दबा देता है।

शास्त्रों में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि आत्मबल की वृद्धि के हित तप अवश्य करें, परन्तु इसमें भोजन के त्याग का अधिक महत्त्व नहीं है, क्योंकि उपवास करने से अज्ञानी को जितनी शुद्धि होती है उससे अनेक गुणा शुद्धि

नित्याहारी ज्ञानी को सहज ही में होती है। आचार्य सिद्धसेन ने 'सन्मतितर्क' नाम के ग्रन्थ में कहा है जो 'स्व' और 'पर' सिद्धान्त का चिन्तन छोड़ बैठे हैं, वे व्रत नियम करते हुए भी परमार्थतः उनके फल को नहीं जानते हैं। जब तक व्रत सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के साथ नहीं जुड़ेगा, व्रताराधन चारित्र की परिधि में नहीं आयेगा। ऐसा व्रत मात्र काय-क्लेश ही होगा।

सामायिक का अर्थ है, प्राणिमात्र को आत्मवत् समझते हुए समत्व का व्यवहार करना। उचित वेशभूषा में, एकान्त में बैठकर, सावद्य कार्यों से निवृत्त होकर वीतराग का गुणगान करना, स्वाध्याय करना आदि द्रव्य सामायिक है। राग-द्वेष के प्रसंगों पर समभाव रखना, आत्मा के स्वभाव में रमण करना भाव सामायिक है। द्रव्य सामायिक से भाव सामायिक में पहुँचना ही सामायिक का सच्चा स्वरूप है। हमारे व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में सामंजस्य आये तभी सामायिक की सार्थकता है। द्रव्य सामायिक तो अड़तालीस मिनट में पूरी हो जाती है, पर भाव सामायिक तो निरन्तर चलती रहनी चाहिए। तभी तो जीवन में रूपान्तरण होगा।

नमस्कार मंत्र की आराधना इस भाव के साथ करें कि पंचपरमेष्ठी के गुणों के प्रति हमारी प्रीति जगे और उनके गुण हममें भी आयें तब तो उसका फल मिलेगा। नये घर के उद्घाटन पर नवकार मंत्र का जाप धन-सम्पत्ति और सुख-शांति के लिये किया तो वह एक सौदा हो जायेगा। नवकार मंत्र तो सांसारिक कामनाओं को समाप्त करने का मंत्र है, लेकिन हम उसका जाप सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिये कर रहे हैं, यह एक विडम्बना है। व्रतों के पालन में भ्रष्टता न आए, इसके लिए व्रतों के मर्म को जानना आवश्यक है।

आत्मदर्शन

मैं कौन हूँ? यह प्रश्न सदा से पूछा जा रहा है और आज भी पूछा जाता है। जिसने अपने अन्तर में देखने का प्रयत्न किया, उसे इसका समाधान मिला है। आँखें दूसरों को देखने के लिये होती हैं तो दर्पण स्वयं को देखने के लिए होता है। सुकरात एक बहुत बड़ा दार्शनिक था, पर उसका चेहरा कुरूप था। एक दिन वह दर्पण में बार-बार अपना चेहरा देख रहा था। इस पर उसके शिष्यों को हँसी आ गई। सुकरात ने कहा-"मैं कुरूप होकर भी दर्पण में बार-बार देख रहा हूँ, इसलिए तुम हँस रहे हो? परन्तु तुम नहीं जानते कि सुन्दर व्यक्ति को दर्पण में देखने की जरूरत नहीं है। शीशे में देखने की जरूरत तो उसे है जो भद्दा है। मैं

दर्पण में इसलिए देख रहा हूँ कि कहीं और भद्दा न हो जाऊँ।'' सुकरात ने एक मर्म की बात कह दी। शिष्य लज्जित हो गये।

भगवान् महावीर से जिज्ञासा की गई-''भगवन्! दर्पण की प्रेक्षा करने वाला जीव, दर्पण को देखता है, या स्वयं को देखता है या प्रतिबिम्ब को देखता है?'' उत्तर में भगवान् ने कहा- ''न तो वह दर्पण को देखता है, न स्वयं को। वह मात्र प्रतिबिम्ब को देखता है।'' बिम्ब है आत्मा और प्रतिबिम्ब है शरीर, वाणी और मन। बच्चा जल में चाँद का प्रतिबिम्ब देखता है, पर उसे चाँद नहीं मिलता। बिम्ब को जो मलिन करके रखते हैं, वे हैं- मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, प्रमाद और योग। जब ये हट जायेंगे तो बिम्ब का दर्शन हो जाएगा। ऊपर बताये गये पाँच कारण कर्म प्रविष्टि के मार्ग हैं। कर्म विजातीय हैं जो बिम्ब को ढके रहते हैं। व्रतों के द्वारा इनका आना रुकता है। शास्त्रों में कर्म के आने के रास्तों को रोकना 'संवर' कहा जाता है। व्रत संवर रूप है। अतः व्रतों का चरम लक्ष्य है, आत्म स्वरूप की उपलब्धि।

शास्त्रों में इस आत्मस्वरूप की उपलब्धि की यात्रा को एक सुन्दर रूपक से समझाया गया है। यह चतुर्गति रूप संसार दुःखों का महासागर है। मानव भव इसको तैरने का एक सुअवसर है। मानव शरीर इस महासागर से तिरने के लिये नौका है और शरीर में बैठा जीव इस नौका का नाविक है। इसमें कोई छिद्र नहीं हो, इसकी सावधानी हर समय रखनी होगी, अन्यथा पानी अन्दर आ जायेगा और नौका बीच में ही डूब जायेगी। जीव जब गंतव्य स्थान पर पहुँचे तब तट पर नौका को छोड़ दे और आगे बढ़ जाये। महासागर के इस पार न दुःख होगा, न सुख। केवल आनन्द ही आनन्द होगा। इसे ही मोक्ष कहते हैं। जीवन नाव में छिद्रों को रोकने का काम व्रत करते हैं। यही व्रतों का महत्त्व है।

व्रतों में भ्रष्टता का निवारण

व्रतों के महत्त्व को समझने के बाद व्रत धारण की पात्रता अर्जित करनी होगी, ताकि उनका पालन सम्यक् तरीके से हो और उनमें कोई दोष न आए। मार्ग पर चलने के पहले पैर के काँटों को निकाल कर चलेंगे तो रास्ते पर आराम से चल सकते हैं। इसी तरह साधना पथ पर चलने के पूर्व भी साधना पथ के काँटों को निकालना होगा। इन्हें शास्त्रीय भाषा में 'शल्य' कहा जाता है। माया यानी कपट एक शल्य है। निदान यानी इन्द्रिय भोगों की लालसा शल्य है। मिथ्यादर्शन यानी सत्य तत्त्व पर रुचि और श्रद्धा न होना शल्य है। इन्हें जब तक निकालेंगे

नहीं, साधना का पथ प्रशस्त नहीं होगा। इनको निकालने के लिये सही देखना (सम्यग्दर्शन) और सही जानना (सम्यग्ज्ञान) अति आवश्यक है।

आत्मा के अस्तित्व की प्रतीति सम्यग्दर्शन से होती है और उसके शुद्ध स्वरूप की जानकारी सम्यग्ज्ञान से होती है। 'प्रतीति' और 'स्वरूप' के ज्ञान के साथ 'स्वरूप' को प्राप्त करने का पुरुषार्थ सम्यक् चारित्र है। तत्त्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वाति ने मोक्ष मार्ग के ये तीन साधन बताये हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान् ने और अधिक स्पष्ट करते हुए मोक्ष प्राप्ति के चार साधन बताये हैं- सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। यद्यपि तप चारित्र का ही अंग है, पर इसकी विशिष्टता प्रतिपादित करने के लिये इसे अलग से बताया है। आचार्य हस्ती ने इसे और अधिक व्यावहारिक रूप दे दिया। उन्होंने कहा कि समभाव की साधना आत्मोपलब्धि का मार्ग है, उसके लिये सामायिक व्रत की आराधना करो। इसकी आराधना सम्यक् रूप से हो इसलिए उन्होंने सामायिक के साथ स्वाध्याय को जोड़ दिया। शास्त्रों का पठन, सत्साहित्य का पठन और सत्संग, ये स्वाध्याय के ही रूप हैं। भगवान् महावीर ने स्वाध्याय को भी तप कहा है। बृहत्कल्पभाष्य में तो यहाँ तक कह दिया है कि स्वाध्याय के समान दूसरा तप न कभी अतीत में हुआ है, न वर्तमान में कहीं है और न भविष्य में कभी होगा। इस तरह स्वाध्याय में रत्नत्रयी का समावेश हो जाता है- स्वाध्याय हमें सही दृष्टि प्रदान करता है, सही ज्ञान प्रदान करता है और सही चारित्र भी प्रदान करता है क्योंकि यह स्वयं ही तप रूप है। एक मारवाड़ी कहावत है- "दीधी पण लागी नहीं, रीतै चूल्हे फूंक" यानी चूल्हा अगर ठंडा है तो कितनी ही लकड़ियाँ उसमें डालकर फूँक मारते रहो, चूल्हा जलने वाला नहीं, उलटी राख मुँह पर लगेगी। इसी तरह व्रतों में जब तक सम्यग्दर्शन और ज्ञान की चिनगारी नहीं लगेगी, हम कितना ही पुरुषार्थ कर लें, साधना का चूल्हा नहीं जलेगा।

व्रतों में दोष आने के प्रमुख कारण हैं, लक्ष्य का अभाव और व्रतों की महत्ता के बारे में अनभिज्ञता। जब उनका रहस्य ही नहीं जानेंगे तो उनके पालन में प्रमाद होगा ही। प्रमादवश आये हुए दोषों की शुद्धि के लिये उनके बारे में ज्ञान का होना तो आवश्यक है ही, पर उनके निवारण के लिये आगे क्रम से तीन उपाय करने होते हैं- आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रायश्चित्त। आलोचना में की गई भूलों को याद कर उन्हें गुरु के समक्ष प्रकट करना होता है। भूलों को स्वीकार कर उनसे पीछे हटने के लिये प्रतिक्रमण करना होता है। शरीर पर लगी धूल को साफ

करने के लिये जैसे स्नान करते हैं, प्रतिक्रमण उसी तरह से आत्मा का स्नान है। यदि विपरीत आचरण हो गया है तो उसके लिये शुद्धि का तीसरा क्रम प्रायश्चित्त करना है। जो प्रमादवश अनुचित कार्य करके दोषों का सेवन करता है, उसके मन में दोषों के बारे में पश्चात्ताप के भाव आने चाहिए एवं उसकी विशुद्धि के लिये तपश्चरण के रूप में स्वेच्छा से गुरुजनों से दण्ड ग्रहण करना चाहिए, ताकि भविष्य में दोषों की पुनरावृत्ति न हो।

उपसंहार

व्रतों में केवल बाह्य क्रियाओं से लक्ष्य की पूर्ति नहीं हो सकती। बाह्य क्रियाएँ साधना के लिये उपयोगी हैं, परन्तु इतना ही काफी नहीं। बाहर के वातावरण का प्रभाव न हो, इसके लिए कमरे में एयरकंडिशनर लगाते हैं, इसी तरह मन का एयरकंडिशनर भी चालू करना होगा। मन का एयरकंडिशनर तब चालू होगा जब व्रत हमारी भावधारा के साथ जुड़ेंगे। तभी जीवन में रूपान्तरण होगा, विचार सुधरेंगे, वृत्तियाँ सही होंगी, समता आयेगी और शान्ति मिलेगी। भगवान् ने व्यवहार और निश्चय, दो धर्म बतलाये हैं। व्यवहार धर्म का पालन साधना का पहला सोपान है। उस पर चढ़कर दूसरे सोपान पर चढ़ना होगा, जो निश्चय धर्म है। सामायिक, पौषध, उपवास, जाप आदि कियाएँ व्यवहार धर्म है, जो साधना का द्रव्य रूप है। उन क्रियाओं से समभाव की प्राप्ति निश्चय धर्म है, जो साधना का भावात्मक रूप है। द्रव्य क्रियाएँ अधिकतर समय प्रतिबद्ध होती हैं, परन्तु उनसे मिलने वाले भाव निरन्तर रहने चाहिए। यही परमात्व तत्त्व को प्राप्त करने का मार्ग है, मोक्ष पथ है।

पुराने संतों ने व्रत को अध्यात्म का चौका कहा है। उसमें कोई अपवित्र वस्तु आ जाये तो वह भ्रष्ट हो जाता है और उसकी शुद्धि करनी होती है। साधारण पथ में भी कई तरह के दोष आते हैं, विघ्न आते हैं। उन्हें द्रष्टा बनकर देखना होगा, उनके साथ बहकर नहीं। यह कठिन है, पर प्रबल पुरुषार्थ से सम्भव है। द्रष्टा बनकर दोषों से बचते रहेंगे, उनसे प्रभावित नहीं होंगे तो आत्मदर्शन होगा ही। यही व्रतों का लक्ष्य है। राग और द्वेष रूपी पंछी तो सिर के आसपास मंडराते ही रहेंगे। उन्हें रोक नहीं सकते, परन्तु उनको अपने सिर पर घोंसला बनाने से तो रोका जा सकता है। वे आयें तो उनका स्वागत कर उन्हें बैठने के लिये आसन मत दीजिए।

-14, वरदान अपार्टमेन्टस, 64, इन्द्रप्रस्थ एक्स्टेंशन, दिल्ली-110092

English-Section

Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective (3)

Prof. Sagarmal Jain

(Continued from the last issue.....)

Blind Faith-the Root of Intolerance

Among the causes that generate fanaticism and intolerance, blind faith is the principal; it results from passionate attachment and hence uncritical or 'un-examining" outlook. Attachment (Mūrchā) according to the Jainas is the cause of bondage. It causes perverse attitude. In Jainism various types of attachments are enumerated. Among them darśana-moha/dṛṣtirāga (blind faith), due to its very nature has been reckoned 'paramount". In point of fact, it is considered as a central element in religious intolerance. It leads one's attitude towards a strong bias for one's own and against other's religion. Non-attachment is therefore considered as precondition for the right attitude or preception. A perverse and hence defiled attitude renders it impossible to view the thing rightly just as a person wearing coloured glasses or suffering from jaundice is unable to see the true colour of objects as they are. Attachment and aversion are the two great enemies of philosophical thinking. Truth can reveal itself to an impartial thinker"[13]. Non-attachment, as Jainas hold, is not only essential it is imperative in the search of truth. One who is unbiased and impartial, can perceive the truth of his opponents's ideologies and faiths and thus can possess deference to them. Intense attachment unfailingly generates blind faith in religious leaders, dogmas, doctrines and existence. The religions which lay more emphasis on faith than reason are narrower and fundamentalists. While the religions according to due importance to reason also are more conciliatory and harmonious. It is the reason or critical outlook which acts as check-post in religious faiths and rituals.

Jainism holds that the uncritical outlook and even pious

attachment, towards the prophet, the path and the scripture is also an hindrance to a seeker of truth and aspirant of perfection. Attachment results in blind faith and superstition and repulsion consequences into intolerant conduct. The real bondage, as Jainas confirm, is the bondage due to attachment. A person who is in the grip of attachment cannot get rid of imperfection. Gautam, a chief disciple of Lord Mahāvira, failed to attain omniscience in the life time of Mahāvīra on account of his pious attachment towards Mahāvīra. Same was the case with Ānanda, the chief disciple of Lord Buddha, who could not attain arhathood in the life-time of his 'Śāstā" once Gautam asked Mahāvīra: 'Why am I not able to attain the perfect knowledge, while my pupils have reached the goal. 'Lord answered: 'Oh, Gautam, it is your pious attachment towards me which obstructs you in getting perfect knowledge and emancipation"[14]. The Jainas therefore laid stress on the elimination of attachment, the root cause of bias and intolerance.

Reason-the Check-Post of Blind Faith

In Jainism right faith, one of its three 'Jewels' plays an important role in emancipation of the soul. On the contrary the blind faith, causes intolerance. Jainism therefore, does not support blind faith. Jaina thinkers maintain that the right faith should be followed by right knowledge. The faith followed by right knowledge or truthful reason cannot be blind one. According to Jaina thinkers, reason and faith are complementary and actually there is no contention between the two. Faith without reason, as the Jaina thinkers aver, is blind and reason without faith is unsteady or vacillating. They hold that the religious codes and rituals should be critically analysed[15]. In the Uttarādhyayana-Sūtra, Gautam, the chief disciple of Mahavira, strongly supports this view before Keśī, the pontiff of the church of Jina Pārśva. He said : "The difference in the Law must be critically evaluated through the faculty of reasoning. It is the reason which can ascertain the truth of Law"[16].

If one maintains that religion has to be solely based on faith and there is no place for reason in it, then he will unfailingly develop an outlook that only his prophet, religion and scriptures are true and other's prophets, religions and scriptures are false. He will also firmly believe that his prophet is only savior of mankind; his mode of worship is the only way of experiencing the bliss and the laws or commands of his scripture are the only right ones and thus he remains unable to make critical estimate of his religious prescriptions. While one who maintains that reason also plays an important role in the religious life, will critically evaluate the pros and cons of religious prescriptions, rituals and dogmas. An 'attached'' or biased person believes in the dictum 'Mine is true', while the 'detached'' or unbiased person believes in the dictum 'Truth is mine.''

Gunaratnasūri (early 15th cent. A.D.) in his commentary on the Ṣaḍdarśanasamuccaya of Haribhadrasūri (3rd quarter of the 8th cent. A.D.) has quoted a verse, which explains: 'a biased person tries to justify whatever he has already accepted, while unprejudiced person accepts what he feels logically justified''. Jainism supports 'rational thinking'. Supporting the rational outlook in religious matters Ācārya Haribhadra says: ' I possess no bias for Lord Mahāvīra and no prejudice against Kapila and other saints and thinkers. Whosoever is rational and logical ought to be accepted [17]''. While describing the right faith Amrtacandra (c. early 10th cent. A.D.) condemns three types of idols namely superstitions relating deities, path and scriptures[18]. Thus when religion tends to be rational there will hardly be any room for intolerance. One who is thoroughly rational in religious matters, certainly would not be rigid and intolerant.

Non-Absolutism the Philosophical Basis of Tolerance

Dogmatism and fanaticism are the born children of absolutism. An extremist or absolutist holds that whatsoever he propounds is correct and what others say is false, while a relativist is of the view that he and his opponent both may be

correct, if viewed from two different angles and thus a relativist adopts a tolerant outlook towards other faiths and ideologies. It is the doctrine of 'Anekāntavāda' or non-absolutism or the Jainas on which the concept of religious tolerance is based. For the Jainas non-violence is the essence of religion from which the concept of non-absolutism emanates. Absolutism represents 'violence of thought', for, it negates the truth-value of its opponent's view and thus hurts the feeling of others. A non-violent search for truth finds non-absolutism.

Jaina thinkers are of the view that reality is a complex one[19]. It has many facets, various attributes and various modes. It can be viewed and understood from different angles and thus various judgments may be made about it. Even two contradictory statements about an object may be true. Since we are finite beings, we can know or experience only a few facets or reality at one time. The reality in its completeness cannot be grasped by us. Only a universal-observer-Sarvajña can comprehend it completely. Yet even for an Omniscient it is impossible to know and explain it without a standpoint or viewpoint[20]. This premise can be understood from the following example. Take it for granted that every one of us has a camera to click a snap of a tree. We can have hundreds of photographs but still we find most portion of the tree photographically remains uncovered, and what is more, the photographs differ from each other unless they are taken from the same angle. So is also the case with diversified human understanding and knowledge. We only can have a partial and relative view of reality. It is impossible for us to know and describe reality without an angle or viewpoint. While every angle or viewpoint can claim that it gives a true picture of reality but each one only gives a partial and relative picture of reality. On the basis of partial and relative knowledge of reality one can claim no right to discard the views of his opponents as totally false. According to Jaina thinkers the truth-value of opponents must be accepted and respected.

Non-absolutism of the Jainas forbids to allow the

individual to be dogmatic and one-sided in approach. It pleads for a broader outlook and open mindedness, which alone can resolve the conflicts that emerge from differences in ideologies and faiths. Satkari Mookerjee rightly observes that Jainas do not believe in the extremist a priori logic of the absolutists. Pragmatically considered, this logical attitude breeds dogmatism and if carried a step further, engenders fanaticism, the worst and the vilest passion of human heart[21]. For non-absolutism the views of the opponent are also true. As Siddhasena Divakara (5th Cent. A.D.) remarks "All schools of thought are valid when they are understood from their own standpoint and so far as they do not discard the truth-value of others."[22] Hemcandra was a Jaina saint who composed his works even in the praise of Śiva. This liberalism is also maintained by later saints, who composed their works in Hindi or Gujarati like Ānandaghana and many other, till these days. In a Hindi couplet J.K. Mukhtar says:

buddha Vīra Jina Harihara Brahmā ya usako svādhina kaho
bhakti bhava se prerita ho, yaha citta usi me lina raho

(Continue in next issue)

References:-

13. N.M. Tatia, Studies in Jaina Philosophy, P.V. Research Institute, Varanasi-5, 1958, P.22.
14. (a) Bhagavati-Abhayadeva's Vṛtti, Rishabhadeva Kesarimal, Ratlam, 1937, 14/7. P. 1188.
    (b) mukkhamagga pavannānaṁ siṇeho vajjasiṁkhalā vīre jī vaṁtae jāo Goyamaṁ jam na kevalī-Quoted in Abhidhāna Rajendra Kośa, vol. II p.959 and Kalpasūtra Tikā -Edited by Vinayavijay, 127, P. 120.
15. paṇṇā samikkhae dhammam
    tattaṁ tatta vinicchayam
    -Uttarādhyayana, Sanmati Jñānapīṭha, Agra, 1972, 23/25.
16. Ibid-23/25
17. āgrahivata ninisati yuktim yatra tatra matirasya niviṣṭā
    pakṣapātarahitasya tu yuktiryatra tatra matireti nivesām
    -Quoted in 'Saddarśanasamyuccaya'-Gunaratna kṛta tīkā, Edited by Mahendra kumar Jain, Bhartiya Jñanapitha, Delhi, 2nd edition, 1981, P. 461
18. paksapāto na me vīre, na dveṣaḥ Kapilādisu

Yuktimadvacanam yasya, tasya kāryaḥ parigrahaḥ-Lokatattvanirnya- Haribhadra, Jain Granth Prakasaka Sabha, Ahmedabad, 1964, verse 38.

19. loke śastrabhāse samayabhāse ca devatābhāse
nityamap tattvarucinā kaitavya-mamudhadrstitvam/26
-Purusārtha Siddhyupāya-Amartacandra, The Central Jaina Publishing House, Ajitasram, Locknow, 1933.

20. anantadharmātmakameva tattvam.
Anyayogavyavacchedadvātrimśikā, Hemacandra.//22

21. (i) ṇatthi ṇayehiv vihūṇam suttam attho ya Jiṇamayekimci-Āvaśyaka Niryukti, Editor, Sh. Vijay Jineshvar Suri, Harshapuspāmrit granthmālā Lakhabaval, Shantipuri Saurastra, 76.
(ii) Viśeṣāvaśyaka Bhāṣya, L.D. Institute of Indology, Ahmedabad, 1968, 2748.

22. Prof. Satkari Mookerjee, Foundation of World Peace, Ahimsa and Anekanta, Vaishali Institute Research Bulletin No.1, P. 229.

102वें जन्म-दिवस पर

गुरुवर आपको है वन्दन

श्रीमती कमला सुराणा

सांझ सवेरे अधरों पे मेरे, हस्ती मुनि का नाम,
गुरुवर आपका ही है नाम,
गुरुवर आपको है वन्दन।
सामायिक-स्वाध्याय सिखाया, जन-जन को सन्मार्ग दिखाया
मैं तो जानूँ आप ही हो भगवन्त,
गुरुवर आप ही हो भगवन्त
गुरुवर आपको है वन्दन।।1।।
नारी का उत्थान किया है,
कन्याओं को धर्म से जोड़ा।
आप निरंजन रूप, गुरुवर आप निरंजन रूप,
गुरुवर आपको है वन्दन।।2।।
तीरथ-तीरथ सारे देखे, आपके चरणन सा जग में न कोई धाम,
गुरुवर आपके चरणन सा धाम
गुरुवर आपको है वन्दन।
साँझ-सवेरे अधरों पे मेरे.....।

-ई-123, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

बच्चों में नैतिकता बोध

डॉ. दिलीप धींग

आज देश और दुनिया में नैतिकता का संकट छाया हुआ है। मानव की लालसा निरन्तर बढ़ती जा रही है। मानव की इच्छाओं के अश्व बिना किसी प्रशस्त लक्ष्य के चारों दिशाओं में दौड़ रहे हैं। आश्चर्यकारी वैज्ञानिक प्रगति, शिक्षा के तीव्र प्रसार और सभ्यता के विकास के बावजूद मानव-मन अशान्त एवं अतृप्त है। मानव संस्कृति के भव्य प्रासाद जीर्ण-शीर्ण होते जा रहे हैं। भोगवाद तथा उपभोक्तावाद की आंधी ने मानव के नैतिकता बोध को धूल-धूसरित कर दिया है। भौतिक उन्नति के साथ हुई नैतिक अवनति को रोकने के लिए मनीषियों ने अनेक उपाय किये हैं। उन उपायों में एक उपाय यह है कि मानव को बचपन से ही नैतिकता के संस्कार मिलेंगे तो वे संस्कार जीवनपर्यन्त बने रहेंगे। प्रश्न यह है कि बचपन में नैतिक-मूल्यों का वपन, संरक्षण और संवर्द्धन कैसे और किन-किन स्तरों पर किया जाए।

चार बातों से जीवन मुख्य रूप से प्रभावित होता है - पूर्वजन्म के संस्कार, माता-पिता के संस्कार, वातावरण/संगति का प्रभाव तथा व्यक्तित्व-निर्माण के लिए पुरुषार्थ।[1] इन चारों ही घटकों के सन्दर्भ में बच्चों में नैतिकता की शिक्षा प्रदान करने के प्रयास किये जाने चाहिये।

(1) पूर्वजन्म के संस्कार: भारतीय धर्मों में पूर्वजन्म तथा पुनर्जन्म की अवधारणा पाई जाती है। जैन धर्म तो सुस्पष्ट रूप से पूर्वजन्म में विश्वास करता है। पूर्वजन्म की प्रचुर घटनाएँ और कथाएँ आगम साहित्य और आगमेतर साहित्य में पाई जाती हैं। अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल प्राणी को इस जीवन या अगले किसी भव में अवश्य मिलता है। इस प्रकार की मान्यताएँ मानव को अनैतिकता से दूर तथा नैतिक बने रहने का बोध देती हैं।

पुनर्जन्म से जुड़ी हुई कहानियाँ सुनाकर बच्चों में नैतिकता के प्रति आस्था जगाई जा सकती है। णायाधम्मकहाओ में कथा आती है कि एक

---

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी हेतु प्रेषित आलेख।

खरगोश की रक्षा के लिए एक हाथी तीन दिन तक तीन पैरों पर खड़ा रहता है और अन्ततः अपनी जान दे देता है। वह हाथी मरकर मगध सम्राट् श्रेणिक का पुत्र (राजकुमार) बनता है।[2] जंगल में रहने वाले पशुओं के माध्यम से अहिंसा और जीवरक्षा का बोध देने वाली यह कथा बच्चों को प्रभावित करती है। शास्त्रों में लिखित नैतिक मूल्यों से जुड़ी अनेक पुनर्जन्म से सम्बन्धित कथाओं को आधुनिक भाव-भाषा में ढालकर बालकोपयोगी बनाया जाना चाहिये।

इतिहास और पुराण में अनेक ऐसी विभूतियाँ हुई हैं, जो अपनी शैशवावस्था से ही विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न थीं। ग्रंथों में इसका कारण भी बताया गया कि पिछले जन्मों में उन महान आत्माओं ने अच्छे कर्म किये थे, जिसका सुप्रभाव उनकी बाल्यावस्था में ही परिलक्षित होने लग गया था। जैन परम्परा में हर तीर्थंकर के पूर्वजन्मों के उल्लेख मिलते हैं।[3] वर्धमान बचपन से ही वीर, निडर और साहसी थे। वे न किसी साँप से डरते हैं, न ही किसी दानव से। इसी वजह से स्वर्ग के देवों ने उनको महावीर की उपमा दी।[4] इस प्रकार भगवान महावीर के बचपन की घटनाएँ बच्चों में साहस व निडरता का संचार करती हैं। इसी प्रकार भगवान महावीर का जीवन माता-पिता और बड़ों का आदर करने की शिक्षाएँ भी देता है।[5] बच्चों में नैतिकता-बोध जगाने के लिए ऐसे उदाहरण उत्प्रेरक बनते हैं।

(2) माता-पिता के संस्कार: माता-पिता के संस्कार व्यक्ति के जीवन को गहराई से प्रभावित करते हैं। बच्चों के जीवन-निर्माण की दृष्टि से माता-पिता को प्रथम और द्वितीय गुरु माना जाता है। इसलिए माता-पिता पर यह बड़ा दायित्व है कि वे अपनी सन्तान को सुसंस्कारों से सुसज्जित करें। बालक के जीवन-निर्माण के सम्बन्ध में माता की महिमा तो पिता से कई गुणा अधिक बताई गई है। वस्तुतः बच्चों को सुधारने के लिए बड़ों को सुधरना पड़ेगा। बच्चों में अत्यधिक ग्रहणशीलता होती है। वे वही करते और बोलते हैं, जो उन्हें दिखाई और सुनाई पड़ता है। यदि माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे उनकी बात मानें, आज्ञा-पालन करें, झूठ नहीं बोलें तो माता-पिता को उपदेश देने की बजाय अपने जीवन-व्यवहार से इन बातों को प्रकट करना होगा। जो माता-पिता अपने बुजुर्ग माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं, वे अपने बच्चों से स्वयं के साथ अच्छा व्यवहार करने की आशा करते हैं तो यह एक छलावा है।[6]

वस्तुतः संस्कारों का सर्जन गर्भावस्था से ही शुरू हो जाता है। शास्त्रों में निर्देश मिलते हैं कि गर्भवती माता को संयमित, अनुशासित और धर्ममय

जीवन जीना चाहिये। महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़नी चाहिये, अपने हाथों से दानादि उपकार के कार्य करने चाहिये। इस प्रकार की प्रेरक जीवनचर्या और प्रशस्त भावधारा का सुप्रभाव गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ता है।[7] वह शिशु आगे चलकर देश का श्रेष्ठ नागरिक बनता है। जिस बालक को व्यवहार भाषा में अबोध कहा जाता है, वह बालक अपने माता-पिता और परिवारजनों के व्यवहार से कुछ न कुछ सीखता रहता है। इसलिए माता-पिता को चाहिये कि वे अपने बच्चे के स्वर्णिम जीवन के लिए अपने स्वभाव अनुकरणीय बनाएँ।

(3) वातावरण/संगति का प्रभाव : बच्चों में नैतिकता बोध के संवर्द्धन के लिए उन्हें स्वस्थ वातावरण और अच्छी संगति प्रदान करना भी आवश्यक है। बचपन में बालकों को मिलने वाले वातावरण में सबसे पहले परिवार का वातावरण ही उन्हें सर्वाधिक प्रभावित करता है। परिवार सदस्यों का पारस्परिक व्यवहार शिष्टाचार से युक्त होना चाहिये। आजकल टीवी के कुछ कार्यक्रम पारिवारिक वातावरण में धीमा ज़हर घोलने का काम कर रहे हैं। टीवी पर अधिकांश वह दिखाया जाता है, जिससे दिखाने वालों को आमदनी हो। उनमें देश के नैतिक उत्थान-पतन की कोई चिन्ता नहीं दिखाई देती है। यह तथ्य है कि टीवी ने बच्चों को बिगाड़ा और परिवारों को तोड़ा है।[8] आवश्यकता है टीवी पर वही देखा जाए, जिसे परिवार के साथ बैठकर देखा जा सकता है। बच्चों को टीवी नहीं देखने की हिदायत देने वाले बड़ों को भी टीवी का मोह छोड़ना होगा। इस सम्बन्ध में परिवार में यदि नियमों का सही अनुपालन किया जाता है तो भावी पीढ़ी के बेहतर कल के लिए यह शुभ है।

जिस समुदाय में बच्चा जन्म लेता और बड़ा होता है, उसका सामाजिक वातावरण भी बालक के जीवन को प्रभावित करता है। इसका आशय यह है कि भावी पीढ़ी को नैतिकता का बोध देने के लिए सामुदायिक/सामूहिक प्रयास भी किये जाने चाहिये। ऐसे प्रयासों से सामाजिक कुरीतियों और अर्थहीन परम्पराओं के उन्मूलन की राह आसान होगी। इससे बाल पीढ़ी में नैतिकता के सामाजिक मूल्यों का वपन और विकास संभव होगा।

वातावरण का तीसरा प्रमुख निमित्त है विद्यालय। बालक के जीवन-निर्माण पर इस बात का प्रभाव पड़ता है कि जिस विद्यालय में बालक पढ़ने जाता है, वह कैसा है तथा उसके संगी-साथी कैसे हैं। विद्यालय का चयन माता-पिता करते हैं तथा संगी-साथियों का चयन विद्यार्थी करता है। बालक के लिए संगी-

साथियों के चयन में माता-पिता का मार्गदर्शन बहुत उपयोगी होता है। जो बालक अच्छे बालकों की संगति करते हैं, उनकी पढ़ाई अच्छी होती है तथा जीवन में अच्छी आदतों का विकास होता है। इससे उनकी गणना अच्छे बालकों में की जाती है और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती है।

विद्यालय में पढ़ाया जाने वाला पाठ्यक्रम भी बालकों के जीवन को प्रभावित करता है। पाठ्यक्रम का निर्धारण देश व प्रदेश की शिक्षा-प्रणाली करती है। विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व का असर भी बालकों पर पड़ता है। इस प्रकार बालकों के जीवन में विद्यालय का बहुपक्षीय प्रभाव होता है। **बालकों की नैतिक चेतना को जगाने और जगाए रखने के लिए शिक्षा-प्रणाली में नैतिक-शिक्षा का समावेश होना चाहिये। विद्यालयों में स्वतन्त्र रूप से नैतिक शिक्षा की कक्षाएँ लगाई जानी चाहिये। ऐसी कक्षाओं के लिए विषय के अनुरूप श्रेष्ठ अध्यापकों की नियुक्ति होनी चाहिये और नैतिकता के अंक या ग्रेड भी दी जानी चाहिये।'** इसके अलावा अध्यापकों को चाहिये कि वे निर्धारित पाठ्यक्रम से परे विद्यार्थियों को समय-समय पर नैतिकता के किस्से-कहानियाँ बताते रहें। अपने जीवन से भी उच्च नैतिकता के आदर्श उपस्थित करें। यदि कोई विद्यार्थी नैतिकता के सम्बन्ध में कोई आदर्श उपस्थित करता है तो उसे सम्मानित करके सबको नैतिकता की महत्ता से अवगत कराया जाना चाहिये। इन प्रयासों से विद्यालय में एक स्वस्थ वातावरण बनता है, जिसका प्रभाव विद्यालय में पढ़ने वाले बालकों पर भी पड़ता है। यही नहीं, इससे सम्बन्धित विद्यालय की प्रतिष्ठा भी बढ़ती है।

भारत में शिक्षा-पद्धति में सुधार के लिए गठित कोठारी आयोग तथा आयोग के अध्यक्ष डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने शिक्षा में नैतिक और चारित्रिक मूल्यों के समावेश की सिफारिश की थी।[10] लेकिन ऐसा लगता है उन सिफारिशों को पूरी तैयारी और ईमानदारी के साथ लागू नहीं किया गया है। **प्राथमिक शिक्षा के पाठ्क्रमों में मांसाहार के सन्दर्भ भारत की अहिंसा-संस्कृति को चुनौती है।**[11] ये सन्दर्भ बालकों के कोमल मन पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। करुणा, पर्यावरण-रक्षण और पशु-पक्षियों से प्रेम जैसे मूल्यों को आगे बढ़ाने में मांसाहार के सन्दर्भ बहुत बड़ी बाधा है। यहाँ तक कि बढ़ते आतंकवाद के पीछे भी मांसाहार एक कारण है।[12]

वर्तमान में विद्यार्थी-वर्ग में करुणा और नैतिकता का बोध देने के लिए चेन्नई की 'करुणा अन्तरराष्ट्रीय' संस्था उल्लेखनीय कार्य कर रही है। भारत सरकार से मान्य इस संस्था के माध्यम से लगभग दो हजार विद्यालयों में करुणा और नैतिकता का बोध देने का प्रयास किया जा रहा है।[13] अध्यापकों तथा अभिभावकों को चाहिये कि ऐसी गतिविधियों को और अधिक गति देकर नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में अपना योगदान करें।

(4) व्यक्तित्व निर्माण के लिए पुरुषार्थ : जीवन को प्रभावित करने वाले ऊपर जो तीन कारण बताये गये हैं, उन सबमें यह चौथा कारण कई मायनों में अधिक महत्त्वपूर्ण है। दूसरे और तीसरे कारणों में भी बालकों के जीवन-निर्माण के लिए माता, पिता, शिक्षक और शैक्षणिक वातावरण के माध्यम से पुरुषार्थ करने की बात कही गई है। हर बालक को सभी प्रकार के अनुकूल निमित्त नहीं मिलते हैं। ऐसे अनुकूल-प्रतिकूल वातावरण में भी बालक अपने जीवन और परिवेश को समझने की कोशिश करता है। कुछ बालक अधिक शरारती और उद्दण्ड होते हैं। अनुशासन उन्हें अप्रिय लगता है। कारण कुछ भी हो, ऐसे बालकों को नैतिकता का बोध देने के लिए भय, प्रोत्साहन, पुरस्कार आदि से शिक्षित किया जाना चाहिये। कुछ बालकों को घर पर इतने सुदृढ़ संस्कार मिलते हैं कि वे विद्यालय और संगी-साथियों पर भी अपने गुणों का प्रभाव छोड़ देते हैं। इसी प्रकार कुछ बालक थोड़ी समझ आने पर अपने माता-पिता को भी सच्चाई की सीख दे बैठते हैं।[14] सद्गुणों के लिए ऐसी स्वस्थ स्पर्धा हमेशा होनी चाहिये। क्योंकि उम्र या पद में बड़े होने का मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति योग्य या नैतिक भी हो।

अनेक महापुरुष और सफल व्यक्ति ऐसे हुए हैं, जिन्हें जीवन के निर्माण के लिए कोई विशेष अनुकूलताएँ नहीं प्राप्त हो सकीं। लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी के बल पर अनेक अच्छे कार्य करके दिखा दिये। जीवन-निर्माण के लिए प्रथम चरण में बालकों के साथ पुरुषार्थ करने की आवश्यकता होती है। प्रथम चरण का पुरुषार्थ यदि प्रबल होता है तो द्वितीय चरण के पुरुषार्थ के लिए स्वयं बालक ही तैयार हो जाता है। सन्तों और सज्जनों के आशीर्वाद और मार्गदर्शन से अनेक व्यक्तियों ने अपने जीवन को रूपान्तरित कर दिया।[15] श्रेष्ठ संगति से दुर्जन लोगों की सन्तति भी सज्जन बन जाती है, छल-फरेब करने वाले का बेटा सत्यवादी और डाकू का बेटा सन्त बन जाता है।[16] ऐसे विशिष्ट परिवर्तनों के लिए विशिष्ट पुरुषार्थ की जरूरत पड़ती है। यदि

हमारे शिक्षण संस्थाओं में बालकों पर ऐसे प्रयोग किये जाये तो अदालतों में मुकदमों तथा कारागृह में कैदियों की संख्या घटाई जा सकती है। सात्त्विक आहार, परिश्रम, त्याग, संयम, ध्यान, योग आदि के माध्यम से ऐसे प्रयोग किये जाने चाहिये। सरकार जैसे खेल को प्रोत्साहित करती है, वैसे ही समाज में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए ऐसे प्रयोग भी किये जाने चाहिये।

ये चार घटक जीवन को प्रभावित करते हैं। इनके माध्यम से बच्चों में ऐसे कौनसे गुण विकसित किये जाने चाहिये, जिनको धारण करके वे नैतिकता के पथ पर हमेशा अग्रसर होता रहे। कुछ प्रमुख गुणों की सोदाहरण चर्चा यहाँ की जा रही है।

विनय : विनय को सभी गुणों का आधार माना जाता है। माता, पिता और गुरु का यह दायित्व होता है कि वे बच्चों को विनयशील बनाएँ। इस सम्बन्ध में मुझे मेरे बचपन की घटना याद आती है। संभवत: यह मेरे जीवन की पहली याद रखने योग्य घटना है। मेरी उम्र कोई साढ़े तीन बरस की होगी। एक बार किसी कारण से मेरी दादी सज्जन बाई ने मुझे जोरदार डाँट खिला दी। मैं खड़ा-खड़ा रो पड़ा। रोता रोता मैं माँ के पास गया। माँ ने मुझे दादी को धोग लग जाने के लिए कहा। माँ के कहने पर उसी समय मैंने दादी के चरणों में प्रणाम किया। दादी ने आशीर्वाद दिया। मैं खुश हो गया और दादी भी। इस तरह माँ ने मुझे विनय का पाठ पढ़ाया। आज्ञाकारिता भी विनय का ही एक अंग है। अपने से बड़ों, उपकारियों, गुरुजनों, गुणीजनों और सन्तों का आदर करना आज्ञाकारिता है। कभी बिना गलती के भी बड़े डाँट देते हैं, उस समय भी उनके समक्ष विनयपूर्वक अपनी बात रखनी चाहिये। आज्ञाकारिता से आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता है।

अचौर्य : बच्चों को यह शिक्षा दी जानी चाहिये कि किसी भी पराई तथा संदिग्ध वस्तु को बिना पूछे हाथ नहीं लगाना और नहीं लेना चाहिये। इससे बच्चों में अनुशासन और आत्म-सम्मान की भावना जागृत होती है। इस सम्बन्ध में भी मुझे मेरे बालपने की घटना याद आती है। तब मैं दूसरी कक्षा का नन्हा विद्यार्थी था। सर्दियों में हमारी कक्षाएँ कक्ष के बाहर खुली धूप में लगती थी। धूप से चले जाने पर पुन: हमें कमरे में जाना होता था। एक दिन अन्दर जाते समय किसी सहपाठी के बस्ते से एक पेन गिर पड़ा। कक्षा में पहुँचने पर मैंने यह नहीं बताया कि किसी का पेन गुम हो गया हो तो मुझे मिला है। मैं पेन घर ले गया। माता-

पिता को बताया कि किसी का गुम हुआ पेन मुझे मिला है। उन्होंने कहा कि पूछताछ करके मैंने लौटाया क्यों नहीं! या फिर कक्षाध्यापक को पेन दे देता। उन्होंने मुझे समझाकर कहा कि अगले दिन कक्षा में पूछकर मैं जिसका पेन हो, उसे लौटा दूँ। मुझे अपराध बोध हुआ। दूसरे दिन सबसे पहला कार्य मैंने पेन लौटाने का किया। जिस छात्र का पेन गुमा था, उसे पेन प्राप्त कर बहुत खुशी हुई और पेन लौटाकर मुझे गहरा आत्म-सन्तोष हुआ। जीवन में जाने-अनजाने अनेक निमित्त खड़े हो जाते हैं, जिनके माध्यम से बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

सत्य : अक्सर बच्चे कोई गलती हो जाने पर अपना बचाव करने के लिए झूठ बोल जाया करते हैं। गलती होने पर बड़ों का अनावश्यक गुस्सा भी बच्चों को झूठ बोलने के लिए विवश कर देता है। बच्चों को प्रेम से समझाकर सत्य बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। गलती होने पर उसे स्वीकार कर लेने वाले बच्चों की तारीफ की जानी चाहिये। हमारे राष्ट्रीय चिह्न के नीचे अंकित आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' को उदाहरण सहित समझाने पर बच्चे इसके अर्थ को हमेशा के लिए हृदयंगम कर सकते हैं।

अनुशासन : बच्चों में चंचलता स्वाभाविक रूप से पाई जाती है। चंचलता और उद्दण्डता में फर्क करके बच्चों को अनुशासित जीवन की शिक्षा दी जानी चाहिये। कितने ही बच्चे चीजों को फेंक देते हैं या तोड़ देते हैं। उन्हें वस्तुओं के विवेकसम्मत उपयोग की शिक्षा देनी चाहिये। घर में मेहमान आने पर कैसा व्यवहार करना, किसी के घर जाने पर कैसे अनुशासित बनकर रहना आदि सामान्य अवसरों पर दी गई शिक्षाएँ बच्चों के जीवन-निर्माण में मदद करती हैं।

श्रम : वर्तमान की जीवन शैली और शिक्षा प्रणाली में श्रम का अभाव नज़र आता है। जो बच्चे अपने बचपन में श्रम का महत्त्व नहीं समझ पाते हैं, वे जीवन में अधिक सफल व सुखी नागरिक नहीं बन सकते हैं। इसलिए बच्चों को छोटे-बड़े कार्य सौंपने चाहिये। इससे उनमें स्वावलम्बन भी बढ़ेगा। ऐसी छोटी-छोटी बातें भी नैतिक जीवन के निर्माण में सहायक बनती हैं।

कहानियाँ : इस लेख के आरंभ में पुनर्जन्म के सन्दर्भ में कहानियों की महत्ता बताई गई। वस्तुत: नैतिकता का बोध देने वाली सभी प्रकार की कहानियाँ और घटनाएँ बच्चों के चित्त पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य में जीवन को दिशाबोध देने वाली प्रचुर धर्मकथाएँ, लोककथाएँ और

जन्तुकथाएँ हैं।[17] महापुरुषों के जीवन के अनेक प्रसंग भी जीवन-मूल्यों के प्रति आस्था पैदा करने में समर्थ होते हैं। घर और विद्यालय में ऐसी कथाएँ सुनी और सुनाई जानी चाहिये। बालकों को स्वाभावत: कहानियाँ प्रिय होती हैं। वे कहानियों को सुनने के लिए लालायित रहते हैं। माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी और गुरुजनों का यह फर्ज बनता है कि वे अपने नौनिहालों को विविध सरल-श्रेष्ठ कहानियों के माध्यम से बच्चों को ज्ञान का अमृत पिलाएँ। कहानियों के अलावा माँ की लोरियाँ, सरल-तरल गीत-कविताएँ भी बच्चों के जीवन-निर्माण में सहायक बनती हैं।

खेल : बच्चों को खेल-खेल में भी नैतिकता का पाठ पढ़ाया जा सकता है। जो भी खेल बच्चे खेलते हैं, उसके नियम होते हैं। बच्चे खेल के नियमों का पालन करना सीखें तथा खेल को खेल भावना से ही खेलें। खेलों में नैतिक प्रतिबद्धता वास्तविक जीवन में भी उन्हें प्रामाणिक बनाती है।

आधुनिक तकनीक : आजकल कम्प्यूटर पर वीडियो गेम आ गये हैं। कुछ खेल ऐसे होते हैं, जिनमें पक्षियों का शिकार, अण्डों को फोड़ना आदि दर्शाया जाता है। कम्प्यूटर पर जैसे ही बच्चा पक्षी को मारता है, पक्षी की चीख की ध्वनि सुनाई पड़ती है और तड़पकर दम तोड़ने का दृश्य दिखाई पड़ता है। ऐसे खेलों में अधिक पक्षियों का शिकार करने पर विनर (विजेता) दिखाया जाता है। ऐसे कम्प्यूटर गेम पर ऐतराज करने पर कुछ माता-पिता और बच्चों का कहना था कि वे वास्तविक रूप में किसी पशु-पक्षी को नहीं मार रहे हैं। लेकिन बच्चों के कोमल मन पर हिंसा का बोध कराने वाले खेल, दृश्य और आवाज़ का विपरीत प्रभाव पड़ता है। जो इंजीनियर कम्प्यूटर-गेम का निर्माण करते हैं, उन्हें ऐसे गेम बनाने चाहिये, जिनमें जीवों को बचाने पर विजेता घोषित किया जाए। आधुनिक तकनीक का बच्चों के व्यक्तित्व-निर्माण में किस प्रकार उपयोग किया जा सके, इस पर हमें विचार करना चाहिये।

शास्त्रों, सद्ग्रंथों, महापुरुषों की जीवनियों और कथा-कहानियों में विनय, अचौर्य, सत्य, श्रम आदि नैतिक-मूल्यों का बोध कराने वाली शिक्षाएँ मिलती हैं। बच्चों में नैतिकता का बोध देने के लिए ऐसे प्रसंगों और कथानकों को सरल, चित्रमय और आधुनिक शैली व तकनीक में प्रस्तुत किया जाना चाहिये। आज के बच्चे ही समाज और देश का भविष्य हैं। बच्चों को अहिंसा, नैतिकता और वीरता का बोध प्रदान करके हम बेहतर भविष्य और बेहतर

समाज का निर्माण कर सकते हैं। मैं मेरी एक कविता के साथ इस आलेख को विराम देना चाहूँगा :-

कितने अच्छे, मन के सच्चे, प्यारे बच्चे।
बड़े मधुर, परन्तु कच्चे प्यारे बच्चे।
सुसंस्कारों-सद्गुणों से इन्हें सजाओ,
कच्चा मटका, कोरा कागज प्यारे बच्चे।
इन्हें बनाओ बरगद और महकते फूल,
नन्हा पौधा, नन्ही कलियाँ प्यारे बच्चे।
क्या होती घृणा कुटिलता ये क्या जानें?
निश्छलता से झिलमिलाते प्यारे बच्चे।
किलकारी कल-कल बहती है जैसे सरिता,
सरल-तरल बनो सिखलाते प्यारे बच्चे।
हँसने, रोने और मचलने की हलचल से,
खुशियों का संसार दिखाते प्यारे बच्चे।
सब दु:ख चिन्ता रंज भुलाते प्यारे बच्चे।

सन्दर्भ

1. द्रष्टव्य : डॉ. दिलीप धींग का लेख - 'संस्कार, समीक्षा, सुधार : एक चिन्तन'
2. णायाधम्मकहाओ 1/1
3. द्रष्टव्य : आचार्य हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास, प्रथम भाग (तीर्थंकर खण्ड)
4. आचार्य हस्तीमलजी, जैन धर्म का मौलिक इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 562-563
5. आचारांग सूत्र 2/15,
6. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं (सं.-डॉ. धर्मचन्द जैन), पृ. 456
7. कल्पसूत्र में महारानी त्रिशला की चर्या
8. बच्चों और परिवार पर टीवी के दुष्प्रभाव के अनेक सन्दर्भ
9. देखें, जिनवाणी, फरवरी 2011, आचार्य हीराचन्द्रजी के विचार
10. कोठारी आयोग की रिपोर्ट : नेट पर उपलब्ध
11. देखें, एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकें
12. नेमीचन्द (डॉ.) 'शाकाहार मानव सभ्यता की सुबह'
13. सम्पर्क : करुणा इंटरनेशनल, 36, सेम्बूदास स्ट्रीट, चेन्नई-01
14. अन्तगडदशा सूत्र में एवन्ता मुनि का माता-पिता से संवाद, वर्ग 6, अध्ययन 15
15. अर्जुन मालाकार, अंगुलिमाल, वाल्मीकि, प्रभव आदि के कथानक
16. भक्त प्रह्लाद की कथा
17. जैन कथाएँ, जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ तथा विविध लोककथाएँ

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

संगोष्ठी-आलेख

सूचना का अधिकार : भ्रष्टाचार-निरोध और सुशासन

श्री चतरसिंह मेहता

सूचना का अधिकार, 2005 विधेयक संसद में प्रस्तुत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा था कि इस विधेयक के पारित होने पर हमारी शासन प्रणाली में एक नये युग का प्रारम्भ होगा। एक ऐसे युग का जिसमें विकास के लाभ सभी क्षेत्रों के जनसाधारण को आवश्यक रूप से प्राप्त होंगे, जिसमें भ्रष्टाचार के दानव को खत्म करने में मदद मिलेगी, तथा यह आम आदमी की दिलचस्पी को हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था के मध्य में स्थापित करेगा और यह युग हमारे राष्ट्र की संस्थापक विभूतियों की उम्मीदों को सही मायने में पूरी करेगा। वास्तव में इस अधिनियम से भारत में एक नये युग का सूत्रपात हुआ है। अब तक संसद एवं राज्यों की विधानसभा में चुने हुए जनप्रतिनिधियों को ही अपने सदनों में सरकारी कामकाज के बारे में सूचनाएँ प्राप्त करने का अधिकार था और वह भी तब जब कि सदन चल रहा हो, परन्तु इस अधिनियम ने भारत के हर नागरिक को ये सूचनाएँ सरकार से सीधी प्राप्त करने का अधिकार दे दिया है और वह भी वर्ष के हर कार्य दिवस में कितनी ही बार। इस अधिनियम ने अब जन साधारण को प्रभुसत्ता सम्पन्न बना दिया है, जो भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में अभूतपूर्व घटना है।

आरम्भ- सूचना का अधिकार तो सन् 2005 में मिला, परन्तु इस तक पहुँचने का इतिहास काफी लम्बा रहा। प्रथम बार सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तरप्रदेश बनाम राजनारायण के मामले में सन् 1975 में यह व्यवस्था दी कि संविधान की धारा 19 (1) के वाक्-स्वातन्त्र्य और अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य के मूल अधिकार के अन्तर्गत जानकारी का अधिकार आता है। लोक अधिकारी जो भी करे उसे जानने का अधिकार जनता को है। उत्पीड़न और भ्रष्टाचार रोकने के लिये गोपनीयता जनहित में नहीं है। फिर पीपल्स यूनियन ऑफ सिविल लिबर्टीज बनाम भारत सरकार के वाद में 2003 में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

जनतन्त्र में लोगों की भागीदारी जरूरी है और उसे बढ़ाने के लिये जानकारी का अधिकार जनतन्त्र का स्तम्भ है। केवल वोट डालना ही जनतन्त्र की इति श्री नहीं है, सही निर्णय एवं वोट का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग सरकार के हर कार्य की जानकारी बिना संभव नहीं है। सूचनाएँ प्राप्त करना संविधान की धारा 19 (1) के अन्तर्गत नागरिक का मूल अधिकार माना गया। सूचना के अधिकार के लिये जन-आन्दोलन भी हुए, अन्य देशों के सूचना के अधिकार कानूनों का भी सहारा लिया गया। संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन की सरकार ने इसे साझा कार्यक्रम का भाग बनाया और अन्त में 2005 में भारतीय संसद ने सूचना का अधिकार अधिनियम को कानून का रूप दिया।

उद्देश्य एवं विशेषताएँ

अधिनियम की प्रस्तावना में कहा गया है कि प्रत्येक लोक अधिकारी के कार्य करने के तरीकों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिये सूचना आयोगों का गठन किया गया है, ताकि भ्रष्टाचार पर रोक लगे और अन्ततः सुशासन की स्थापना हो। यह 30 धाराओं वाला छोटा सा अधिनियम होते हुए भी इसकी अनुपालना हेतु कारगर और अनोखी व्यवस्था की गई है। पहली बात प्रत्येक लोकअधिकारियों को प्रथम सौ दिनों के भीतर सभी कार्यालयों में लोक सूचना अधिकारियों को पदाभिहित करने के निर्देश दिये। दूसरी बात- प्रत्येक सूचना के आवेदन को निस्तारित करने की अधिकतम समय सीमा तय की गई और निस्तारित न करने पर प्रथम अपील करने का प्रावधान किया गया और उसे भी निस्तारित करने की समय सीमा निश्चित की गई। तीसरी महत्त्वपूर्ण बात कि अधिनियम के प्रावधानों की अवहेलना करने पर लोक सूचना अधिकारी पर आर्थिक दण्ड या अनुशासनात्मक कार्यवाही की व्यवस्था की गई। साथ ही अन्य कई प्रावधानों के अनुसार इस अधिनियम को नागरिक हितैषी बनाया गया ताकि नागरिकों को सूचना से वंचित नहीं रखा जा सके। भारत के इस कानून की यह भी एक विशेषता है कि इसमें सभी लोक प्राधिकारियों को इस कार्य के लिए बाधित किया गया है कि अपने विभाग से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ अपने आप प्रकाशित करें और अलग-अलग प्रणालियों से नेटवर्क से जोडें ताकि उन तक नागरिकों की पहुँच सुगम हो सके।

आसान तरीका

सरकार या उससे सहायता प्राप्त करने वाले संगठनों से सूचना प्राप्त

करने का तरीका भी बिल्कुल आसान रखा गया है। सूचना के लिये आवेदन सम्बन्धित विभाग के कार्यालय को भेजा जाता है जिसके लिये कोई प्रपत्र निर्धारित नहीं है, पर आवश्यक है कि उसमें सूचना चाहने वाले का नाम व पता और जो सूचना चाही जाती है उसे क्रमबद्ध एवं स्पष्ट शब्दों में लिखा जाए। प्रत्येक आवेदन का शुल्क मात्र दस रुपये है जो उस कार्यालय में रोकड़ जमा कराया जा सकता है अथवा आवेदन के साथ दस रुपये के पोस्टल आर्डर संलग्न कर भी भेजा जा सकता है, पर यह जरूरी है कि इसका उल्लेख आवेदन में कर दिया जाए। लोक सूचना अधिकारी के लिये आवेदन का निस्तारण 30 दिन में करना जरूरी है। इसके बाद प्रथम अपील उसके प्रथम उच्च अधिकारी को की जा सकती है। यह अपील तब की जाती है जबकि या तो सूचना न मिले या फिर सूचना प्राप्त हो उससे आवेदक असन्तुष्ट हो। प्रथम अपील के लिये कोई फीस नहीं है। पर जो सूचनाएँ मांगते हैं उसके प्रति पृष्ठ दो रुपये के हिसाब से लोक सूचना अधिकारी राशि की मांग कर सकता है। यदि निर्धारित अवधि में सूचना नहीं मिलती है तो फिर निःशुल्क देय होती है। प्रथम अपील के निस्तारण की अवधि भी 30 दिन निश्चित की गई है, पर विशेष परिस्थितियों के उल्लेख सहित यह 45 दिन भी हो सकती है। इसके बाद 90 दिनों के बाद फिर सूचना आयोग में द्वितीय अपील होती है जिसका प्रारूप नियमों के अन्तर्गत निर्धारित है। द्वितीय अपील की कोई फीस नहीं है।

सूचना का अर्थ

अधिनियम में सूचना स्पष्टतः परिभाषित की हुई है। सूचना का तात्पर्य उस सामग्री से है जिसके अन्तर्गत अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, राय, सलाह (जो लिखित में उपलब्ध है) प्रेस रिलीज, परिपत्र, आदेश, लॉग बुक, संविदाएँ, रिपोर्ट, कागजात, नमूने, मॉडल, इलेक्ट्रोनिक रूप में धारित डेटा शामिल होते हैं और किसी प्राइवेट निकाय से सम्बन्धित सूचना जिस तक किसी अन्य विधि के अधीन लोक अधिकारी की पहुँच हो। सूचना के अधिकार के अन्तर्गत दस्तावेजों, अभिलेखों एवं संकर्म का निरीक्षण भी किया जा सकता है। सामग्री के प्रमाणित नमूने भी लिये जा सकते हैं, डिस्क, फ्लोपी, टेप, वीडियो केसेट, इलेक्ट्रोनिक प्रिन्ट आउट प्राप्त किये जा सकते हैं। सूचना का अधिकार अभिलेखों आदि की प्रतियाँ लेने का अधिकार देता है, जिससे स्थिति जानकर उसके आगे की कार्यवाही सुगम हो सके।

थोडे से अपवाद

सरकारी कामकाज के बारे में सूचना मांगने का क्षेत्र यों तो असीमित है, पर कुछ सीमाएँ दी गई हैं जिसकी सूचना देय नहीं है। यह छूट अधिनियम की धारा 8 में वर्णित है। ऐसी सूचना जिससे भारत की एकता, सुरक्षा, गौरव, वैज्ञानिक या आर्थिक हितों तथा विदेशी राज्यों के सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े, किसी न्यायालय या अधिकरण की अवमानना हो, संसद या विधान मंडल के विशेषाधिकार का हनन हो, वाणिज्यिक गोपनीयता या बौद्धिक संपदा को हानि पहुँचाए, काल्पनिक सम्बन्धों पर असर डाले, विदेशी सरकार से गोपनीय रूप से प्राप्त हुई हो, व्यक्ति के जीवन या शारीरिक सुरक्षा पर प्रभाव डाले, अपराधियों के अभियोजन में अड़चन पैदा करे और ऐसी व्यक्तिगत सूचना जो व्यक्ति की एकान्तता को बचाने के लिये आवश्यक हो वह देय नहीं है। इसके अतिरिक्त किसी भी सूचना के लिये मना नहीं किया जा सकता है।

सूचना के कतिपय क्षेत्र

ऐसी कई सूचनाएँ हैं जिनसे हर नागरिक का सामान्य वास्ता होता है और वह जानना चाहता है, जैसे जनता के लिये सरकारी योजनाएँ उन पर होने वाला खर्च एवं उनसे लाभन्वित लोग; राशनकार्ड, बिजली, पानी, सड़क, गन्दगी, अतिक्रमण, परीक्षा, भर्ती, फीस, बैंक, एम.पी./एम.एल.ए. कोष का उपयोग, किसी कार्यालय को भेजे पत्र/शिकायतों पर की गई कार्यवाही, ठेके, खरीद, एल.पी.जी.गैस, मकान आबंटन राशि का जमा खर्च, सरकारी आदेश एवं उनकी पालना से सम्बन्धित समस्याएँ, कर्मचारियों के भुगतान, पदोन्नति, स्थानान्तरण, विभागीय कार्यवाही, कर-आरोपण एवं वसूली, भू-आवंटन, नियमितीकरण आदि कई विषय। उद्देश्य यह होता है कि वह स्वयं स्थिति को जाने और यदि कार्य विधि एवं नियमानुसार न हो रहा हो तो वह उस कार्यालय एवं लोकसेवक के लिये भी आईना बने और स्व-प्रेरणा से सुधार की बाध्यता आए। भ्रष्टाचार भी तभी पनपता है जबकि गोपनीयता रहती है, समय सीमा में निपटारा नहीं किया जाता। सूचना का अधिकार गोपनीयता भंग कर पारदर्शिता लाने का अमोघ अस्त्र है।

अनगिनत लाभ

भ्रष्टाचार को उजागर करने एवं अन्याय रोकने में इस अधिनियम ने काफी योगदान भी दिया है। बिहार के धीरेन्द्र कुमार ने न्यायिक सेवा में परीक्षा

दी, जिसमें वे फेल कर दिये गये। आर.टी.आई.(सूचना के अधिकार) के मार्फत नम्बर पूछे तो गलती सामने आ गई। आयोग को फिर परिणाम निकालना पड़ा और अब धीरेन्द्र कुमार सिविल जज हैं। बुराडी के राजेश ने 2005 में फ्लेट खरीदा, उन्होंने आर.टी.आई के मार्फत निर्माण की वैधता की जांच कराई तो निर्माण कमजोर निकला। राजेश सहित कई परिवारों को लाभ मिला। शान्ति नगर रेजिडेन्ट्स डवलपमेन्ट एसोशियेसन बैंगलोर में मजप्पा रोड से चर्च रोड तक की सीवर लाइन ठीक कराने के सिलसिले में वह बैंगलोर के जल मंडल के दफ्तर के चक्कर लगा रहा था। उसने आर.टी.आई. के अन्तर्गत बोर्ड से इसकी स्थिति रिपोर्ट मांगी। थोड़े ही समय में यह काम शुरु कर दिया गया और पूरा भी हो गया। श्रीमती अन्नपूर्णा मिश्रा का म्यूटेशन प्रमाणीकरण के अभाव में चार वर्ष से लम्बित था, आयोग में आर.टी.आई. के अन्तर्गत सूचना न मिलने के कारण अपील करने पर तहसीलदार नाचना द्वारा फौरन प्रमाणीकरण कर दिया गया। आर.टी.आई से भ्रष्टाचार रुकने एवं जबाबदेही और कार्य फौरन होने की घटनाएँ हर शनिवार प्रातः 10.30 से 11 बजे तक दूरदर्शन (डी.डी. न्यूज) के 'जानने का हक' कार्यक्रम में दिखाई जाती है। कामनवेल्थ खेल के घोटाले, आदर्श फ्लेट्स बम्बई और थ्री.जी. के घोटाले भी आर.टी.आई. आवेदनों से उजागर हुए हैं और उन पर कार्यवाही अमल में लाई गई है। सैकडों, हजारों को अपनी पी.एफ. खातों, बीमा खातों एवं जमा कराई गई अन्य राशियों की जानकारी वर्षों चक्कर के बाद भी नहीं मिल रही थी, वह आर.टी.आई. से मिली है।

सूचना न दें तो दंड

सूचना के अधिकार को प्रभावी बनाने में क्षतिपूर्ति एवं आर्थिक दण्ड के प्रावधान ने भी कार्य किया है। जो लोक सूचना अधिकारी अधिनियम में निर्धारित समय सीमा में चाही गई सूचना उपलब्ध नहीं कराए, आवेदन लेने से मना करे, तोड़-मरोड़ कर भ्रमित करने वाली सूचना दे, गलत सूचना दे, सूचना नष्ट कर दे तो शास्ति का प्रावधान है। प्रतिदिन के रुपये 250/- की दर से अधिकतम रुपये 25000/- तक लोक सूचना अधिकारी पर आर्थिक दण्ड आयोग आरोपित कर सकता है बशर्ते कि लोक सूचना अधिकारी आयोग को आश्वस्त न कर दे कि उसने युक्तियुक्त व तत्परता पूर्वक कार्य किया है। आयोग ऐसे अधिकारी के विरुद्ध लागू सेवा नियमों के तहत अनुशासनिक कार्यवाही की

सिफारिश भी कर सकता है।

सारा कार्य नागरिक हितार्थ

सूचना मांगने का और प्राप्त करने का कार्य सरल एवं नागरिक हितार्थ बनाया गया है कि हर नागरिक सूचना प्राप्त करने से हिचकिचाए नहीं और एक जागरूक नागरिक की भूमिका आसानी से अदा कर सके। आवेदन का निर्धारित प्रारूप नहीं, लिखना न आए तो लोक सूचना अधिकारी की मदद, आवेदन की 10 रुपये फीस, गरीबी की रेखा से नीचे वाले के लिए वह भी नहीं, सूचना मांगने का कारण बताने की आवश्यकता नहीं, अभिलेख की फोटो कॉपी की फीस मात्र दो रुपये प्रति पृष्ठ, तीस दिन में सूचना न दे तो फिर अभिलेखों की प्रति का कोई शुल्क नहीं, अस्वीकृति के कारण बताना जरूरी, असन्तुष्ट होने पर अपील कहाँ करे यह जानकारी देना आवश्यक, विभाग में असम्बद्ध लोक सूचना अधिकारी के पास आवेदन आ जाए तो 5 दिन में उसका अन्तरण करने की उसकी जिम्मेदारी, अपीलों की कोई फीस नहीं, पेशी में जाना जरूरी नहीं, प्रतिनिधि भी पैरवी कर सकता है, सूचना देने की समय सीमा एवं न दे तो स्वतः अस्वीकृति मानने की व्यवस्था आदि ऐसे प्रावधान हैं जो इस अधिनियम को नागरिक हितैषी बनाते हैं और सरकारी कामकाज में पारदर्शिता तथा जबाबदेही की भावना को बढ़ावा देते हैं।

राह के रोड़े

यद्यपि अधिनियम की सफलता की अनेक कहानियाँ हैं, पर बाधाएँ भी अभी बहुत हैं। यह कानून भारत के प्रत्येक नागरिक को सूचना प्राप्त करने का और देश में सुशासन लाने में योगदान का अधिकार देता है। इसमें सरकार के कार्मिक भी सम्मिलित हैं जो भारत के नागरिक पहले हैं और सरकारी कार्मिक बाद में। उनकी भी अपनी, परिवार की निजी समस्याएँ हैं और जन समस्याओं से भी पीड़ित होते हैं, जिन सभी का हल इस अधिकार के प्रयोग से संभव है। फिर भी सूचना उपलब्ध कराने से सम्बन्धित कई सरकारी कार्मिक पूर्व मनोभावना की बात को अप्रकट रखते हुए कार्मिकों की कमी, कार्यभार की अधिकता, सूचना के अधिकार का नया कार्य आ जाने और वित्तीय समस्याएँ बताकर कानून की पालना में दिक्कतें खड़ी करते हैं। वास्तव में इन समस्याओं का हल यदि कोई है तो प्रशासन के स्तर पर ही संभव है जो विभाग या सरकार का आन्तरिक मामला है। इनको आधार बना कर नागरिकों के अधिकारों का हनन

किसी भी हालत में जायज नहीं ठहराया जा सकता। दूसरी ओर अधिकांश नागरिक भी इस कानून की सुविधा से अपरिचित हैं। जो थोड़े बहुत परिचित भी हैं वे भी गहराई तक नहीं उतर पाते, जिस कारण उनके उद्देश्य में सफलता नहीं मिल पाती। बहुत कम जानकार लोग ही सही रूप से सही समय में सूचना प्राप्त कर पाते हैं। कौन परेशानी में पड़े, जो हो रहा है मुझ अकेले से तो बदलने वाला नहीं जैसी भावनाएँ भी भ्रष्टाचार मिटाने एवं सुशासन लाने में बाधा उत्पन्न करती हैं। सूचना आयोगों के स्तर पर भी सूचना आयुक्तों की एवं स्टाफ की संख्या में कमी भी त्वरित न्याय देने में बाधक है। इसी कारण अपीलों के निपटाने में इतना समय लग जाता है कि निर्णय की उपयोगिता ही नहीं रहती। ऐसे में आम नागरिक का हतोत्साहित होना स्वाभाविक है। फिर देश भर में सूचना आयुक्तों की अधिकांश नियुक्तियाँ सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारियों में से हो रही हैं, जिनकी पृष्ठभूमि सरकारी अधिकारी के अनुभव की होने से नागरिक हितार्थ कम और सरकारी अधिकारी हितार्थ स्वभावतः ज्यादा होती है जो अधिनियम के समय पर सूचना देने के प्रावधान सहपठित शास्ति की धाराओं के शिकंजों को कमजोर करती है। इस कारण अधिनियम की त्वरित एवं प्रभावी क्रियान्वयन की भावना में अवरोधक का काम करती है। पूर्व पृष्ठ भूमि के कारण प्रावधानों की न्यायिक व्याख्या तथा उसी अनुरूप सही निर्णय भी नहीं हो पाते। आयोग का निर्णय अन्तिम होता है, अतः उससे असन्तुष्ट होने पर बिरला ही उच्च न्यायालय में याचिका दायर करने की हिम्मत कर सकता है।

सफलता निश्चित

सफलताएँ भी हैं और बाधाएँ भी। पर बाधाएँ ऐसी नहीं जिन पर काबू नहीं पाया जा सके। थोड़ा समय जरूर लग सकता है। सरकार और सारा देश भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है और इसमें सूचना के अधिकार का महत्त्व स्वीकार कर चुका है। सूचना के लिये तीनों अंग- नागरिक, लोक अधिकारी और सूचना आयोग उत्तरोत्तर अधिक जागरूक, क्रियाशील होने का प्रयत्न करते रहें तो निश्चित ही देश में भ्रष्टाचार खत्म करने और सुशासन लाने में यह कानून मील का पत्थर सिद्ध होगा।

-सेक्टर-2, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

जैन धर्म में नारी का गरिमामय स्थान

श्री दुलीचन्द जैन

जैन धर्म में अनादिकाल से नारी को उच्च स्थान प्रदान किया गया है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे- भगवान ऋषभदेव। शिक्षा के क्षेत्र में उनका विशेष योगदान माना जाता है। उनकी दो पुत्रियां थीं- ब्राह्मी और सुन्दरी। उन्होंने अपनी पुत्रियों को अनेक विद्याओं की शिक्षा प्रदान की। ब्राह्मी को लिपिविद्या में तथा सुन्दरी को अंकविद्या में निष्णात किया। अन्य 23 तीर्थंकरों ने भी नारियों को उच्च स्थान प्रदान किया। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म आज से 2610 वर्ष पूर्व हुआ था। उस समय स्त्रियों को हीन दृष्टि से देखा जाता था तथा उनको दासी भी बनाया जाता था। तीर्थंकर महावीर ने दासी प्रथा को दूर किया। उन्होंने कैवल्य प्राप्त करने के बाद धर्म प्रचार प्रारम्भ किया तथा स्त्री-पुरुष दोनों वर्ग को, दीक्षा लेने का समान अवसर प्रदान किया। उन्होंने चतुर्विध धर्मसंघ की स्थापना की, जिसके चार अंग थे- श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका। उनके संघ में 14000 श्रमण, 36000 श्रमणियां, 159000 श्रावक और 318000 श्राविकाएँ थीं। संघ 9 गणों में विभक्त था, जिसकी व्यवस्था 11 गणधर देखते थे। श्रमणी संघ के कार्यभार का दायित्व निर्वहन, महाश्रमणी चंदनबाला ने किया। आज से 2550 वर्ष पूर्व महिलाओं को साध्वी बनने का अधिकार प्रदान करना, भगवान् महावीर का अत्यन्त क्रांतिकारी कदम था। जैन धर्म में 16 महान् श्रमणियों का विवरण आता है, जिनका जीवन अत्यन्त त्यागमय तथा प्रेरणाप्रद था। उनकी महिमा से मंडित निम्न श्लोक का प्रतिदिन स्मरण किया जाता है-

ब्राह्मी चंदनबालिका भगवती, राजीमती द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवा।
कुंती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि।
पद्मावत्यपि सुन्दरी दिनमुखे कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

इनमें से द्रौपदी, कौशल्या, सीता एवं कुन्ती का वर्णन अन्य धर्मग्रन्थों में भी मिलता है। इन सभी का जीवन श्रेष्ठ मूल्यों एवं वैराग्य भावना का अनुपम आदर्श उपस्थित करता है। भगवान महावीर ने श्रमणियों को गणिनी, प्रवर्तिनी,

महत्तरा, आर्या, उन्नेता, स्थविरा आदि पदों से विभूषित किया था। श्रमणी संघ की प्रमुख साध्वी को महत्तरा कहा जाता था। महत्तरा साध्वी मां के समान वात्सल्यभाव से धर्म का उपदेश देने वाली होती है। अनेक ग्रन्थों के प्रणेता आचार्य हरिभद्र सूरि को साध्वी याकिनी महत्तरा ने बोध प्रदान किया था।

इसी प्रकार संघीय समस्याओं को सुलझाने में स्थविरा साध्वी का उल्लेखनीय योगदान होता है। मूल आगमों में राजीमती और रथनेमि का आख्यान आज भी उपलब्ध है। रथनेमि जो तीर्थंकर अरिष्टनेमि का लघु भ्राता था, एक दिन रैवताचल पर्वत की गुफा के एकांत स्थान में राजीमती के अद्भुत सौंदर्य को निहार कर मुग्ध हो जाता है, वह अपनी साधना को भूल जाता है और वासना का दास बन कर साध्वी राजीमती से प्रणय की याचना करने लगता है। राजीमती ने उस समय उसे जो उद्बोधन दिया, वह जैन इतिहास का गौरवमय प्रसंग है। राजीमती ने रथनेमि से कहा- "रथनेमि! मेरी तुम्हारे ही भाई अरिष्टनेमि से सगाई हुई थी। वे बारात लेकर विवाह मण्डप के निकट आ रहे थे, उस समय उन्हें बाड़ों और पिंजरों में बंद पशु-पक्षियों का करुण-क्रंदन सुनाई दिया, जिनकी हत्या कर उनका मांस बरातियों को परोसा जाना था। यह सुनकर अरिष्टनेमि का हृदय दहल उठा और वे बिना विवाह किये वापिस लौट आये तथा जैन मुनि बन गए। उनका अनुसरण कर मैं और तुम भी दीक्षित हो गए।... और अब तुम मुझसे विवाह करना चाहते हो? क्या करना चाहते हो? क्या यह वमन किए हुए को फिर से चाटने के समान, घृणास्पद नहीं है? तुम अपने और मेरे कुल के गौरव को स्मरण करो! तुम्हें इस प्रस्ताव पर लज्जा आनी चाहिए। राजीमती के बोधपूर्ण वचनों को सुनकर रथनेमि को होश आया और वह पुनः संयम पथ पर आरुढ़ हुआ। उत्तराध्ययन सूत्र के 21 वें अध्ययन में भी इस घटना का रोमांचकारी वर्णन उपलब्ध है।

भारतीय संस्कृति के प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि भगवान महावीर और तथागत बुद्ध दोनों समता के प्रतिपादक थे तथा उन्होंने महिलाओं को पुरुषों के तुल्य ही समान अधिकार प्रदान किये थे। भगवान महावीर के काल की आर्या चन्दना, मृगावती, चेलना और राजकुमारी जयन्ती-इतिहास की ज्योतिर्मयी तारिकाएँ हैं। आर्या चन्दना का जीवन-कर्म, ज्ञान और भक्तियोग की पवित्र त्रिवेणी है, जो युग-युगान्तर तक जन-जन को अखण्ड प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। उनका जन्म एक राजपरिवार में हुआ, जहाँ सुख के सभी साधन

उपलब्ध थे। परिस्थितिवश आगे चलकर वह एक श्रेष्ठी के यहाँ गृह-दासी बन जाती है। लेकिन वहाँ पर भी वह अपना संतुलन स्थिर रखती है तथा घर के छोटे-बड़े सब काम बड़ी प्रसन्नता से करती है। घर में किसी को पता नहीं चलता कि वह कभी राजकुमारी थी। यही चन्दनबाला आगे चलकर भगवान् महावीर के सम्पर्क में आती है तथा महावीर द्वारा संस्थापित 36 हजार साध्वियों के बृहत् संघ का नेतृत्व करती है। यह वह श्रमणी संघ था, जिसमें मगधाधिपति श्रेणिक जैसे सम्राटों की अनेक उच्चकुलीन रानियां भी थीं। आर्या चन्दना ने जिस कुशलता, सद्भावना एवं सद्विवेक से इस संघ का संचालन किया, वह इतिहास का एक अनुपम उदाहरण है।

जैन साहित्य में नारी के विविध रूप देखने को मिलते हैं। कभी वह पतिव्रता बन कर आदर्श बन जाती है तो कभी श्रमणी बन कर आध्यात्मिक आलोक से भर जाती है। जब ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली कठोर तपस्या में लीन थे लेकिन फिर भी उनका अहंकार नष्ट नहीं हुआ, तब उनकी बहनों-ब्राह्मी और सुन्दरी ने उनको सद्बोध प्रदान कर, उनका अहंकार दूर किया। इसी प्रकार राजा दधिवाहन और करकण्डु को युद्ध के मैदान में बोध देकर, शांतिपूर्ण समझौता कराने का कार्य पद्मावती ने किया। कविरत्न उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म.सा. के शब्दों में नारी की संस्तुति इस प्रकार है-

ज्योतिर्मयी नारी तेरी गरिमाओं के शुष्क न दिव्य स्रोत होंगे।
तेरी महिमाओं के उज्ज्वल नक्षत्र, कभी न धूमिल होंगे।।
सरस्वती तू लक्ष्मी तू है, चण्डी तू है कभी भवानी।
शिव-संवर्धक, अशिव नाशिनी, तेरी लीला जन कल्याणी।।

भगवान ने जाति प्रथा का विरोध किया तथा कहा कि मनुष्य कर्म से ही श्रेष्ठ बनता है। उनकी वाणी का अमृत रस सबसे ज्यादा महिलाओं ने ग्रहण किया और वे परिवार में सौहार्द भावना की प्रचारक बनीं। उन्होंने अपने पति, पुत्र एवं अन्य परिजनों को धर्म से संस्कारित किया। उपासकदशांग सूत्र में भगवान ने नारी के अनुपम आदर्श को निम्न शब्दों में अभिव्यक्त किया है-

भारिया धम्म सहाइया, अधम्म विवज्जिया।
धम्माणुरागरत्ता, सम सुह-दुक्ख सहाइया।।

पत्नी धर्म में सहायता करने वाली, अधर्म का विवर्जन करने वाली, धर्म में सदा अनुराग रखने वाली तथा सुख-दुःख में समान रूप से पति को

सहयोग करने वाली होती है।

स्थानांग सूत्र में धर्म के चार द्वार बताये गये हैं- चत्तारि धम्मदारा-खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे। धर्म के चार द्वार-क्षमा, संतोष, सरलता और नम्रता हैं। प्रत्येक व्यक्ति को सप्त कुव्यसनों- जुआ, चोरी, मांसाहार, शराब, वेश्यागमन, शिकार और परस्त्री का सहवास से दूर रहना चाहिए। एक गृहस्थ की न्यायार्जित आजीविका होनी चाहिए। अर्जन के साथ विसर्जन का भाव भी रखना चाहिये। उसका भोजन शुद्ध होना चाहिये तथा उसे अभक्ष्य खान-पान का त्याग करना चाहिये। उसे दान, शील, तप और भावना को अपने जीवन का आदर्श बनाना चाहिये। महिलाओं ने धर्म के इन सद्गुणों को अधिक मात्रा में ग्रहण किया।

जैन धर्म के अनुसार नारी को पुरुष के समान ही सभी धार्मिक एंव आध्यात्मिक अधिकार प्राप्त है। श्रमण के समान श्रमणी भी पाँच महाव्रतों का पालन कर मोक्ष प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार श्रावकों की तरह श्राविकाएँ भी बारह अणुव्रतों का पालन कर आत्मसाधना में प्रगति कर सकती हैं। श्राविकाओं को धर्मनिष्ठ, तपोनिष्ठ जीवन जीना चाहिये तथा स्व-पर कल्याण में निरत रहना चाहिये।

वर्तमान समय में भी जैन नारियों ने श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त कर अनेक उच्चस्थ पद प्राप्त किये हैं। लेकिन आज जितना भौतिकवाद बढ़ रहा है, उतने ही नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कार शिथिल हो रहे हैं। टी.वी., इंटरनेट एवं सेलफोन भी हमारी मान्यताओं एवं उच्च विचारों को क्षीण करने में भागीदार हैं। इसलिए नारी को अपने गरिमामण्डित भूतकाल को जगाकर भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए, उच्च संस्कारों को जागृत करना होगा।

अंत में एक कवि के शब्दों में-

भावना का हर सुखद अनुमान है जिसकी लगन में।
प्रीत प्रेरित प्राण जैसी गंध रहती है सुमन में।।
विश्व जिसकी ज्योति से निज राह को पाता रहेगा।
रख दिये भगवान ने दो दीप नारी के नयन में।।

नारी के नयनों से नर न केवल सौंदर्य और सुख प्राप्त करेगा, किन्तु उसके चरित्र की उज्ज्वलता से वह अपने जीवन के मार्ग को भी ज्योतिर्मय करता रहेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

-70, शम्बुदास स्ट्रीट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

नववर्ष गीत

हर किसी की ज़िंदगी में, अमन चैन हो

श्री मोहन कोठारी "विनर"

हर किसी की ज़िंदगी में, अमन चैन हो,
खुशियां भरी हो भोर और सुखों की रैन हो।
हर किसी की ज़िंदगी में.....।।टेर।।

आज इस जहां में, है बेचैन आदमी,
सिर्फ तनाव तनाव है, तनाव हर कहीं।
हट जाये धूप क्लेश की और मन में छांव हो,
हर किसी की ज़िंदगी में.....।।1।।

खोया खोया है आदमी, देखो जहां कहीं,
अम्बार साधनों का है, न दौलत की है कमी।
साधनों को छोड़ सिर्फ धर्म मुख्य हो,
हर किसी की ज़िंदगी में.....।।2।।

धर्म साधना से ही, समाधि मिलती है,
प्रभु की बंदगी से, पुण्य क्यारी खिलती है।
आराधना का हर किसी से, अनुपम मेल हो,
हर किसी की ज़िंदगी में.....।।3।।

जो भी मिले इस भाग्य से, संतोष हो सदा,
दीन और दुःखियों की, मिट जाये आपदा।
दुःखियों की सेवा करने में, कभी न देर हो,
हर किसी की ज़िंदगी में.....।।4।।

भाईचारा, प्रेम का, बढ़ता रहे सिला,
नैतिकता के मूल्यों का, न ध्वस्त हो किला।
कड़वी जुबां न हो कभी, बस मीठे बैन हो,
हर किसी की ज़िंदगी में.....।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (11)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

यश,

प्राप्त इस मानवजीवन को सार्थक एवं सफल करने के लिए,
मन को सदैव प्रसन्न रखने के लिए,
जीवों के प्रति दुर्भाव से मन को मुक्त रखने के लिए,
आत्मा की सद्गति निश्चित कर देने के लिए और
परमगति निकट लाने के लिए
जिन चार महत्त्वपूर्ण सोपानों की ओर मैं तुम्हारा ध्यान
आकर्षित करना चाहता हूँ उनमें प्रथम सोपान है-
''सत्यनिष्ठ बनिए।''
आदमी चाहे दरिद्र हो, परन्तु
उसकी निष्ठा तो धनाढ्यता में ही होती है।
रोगी चाहे रोगग्रस्त हो, परंतु
उसकी निष्ठा तो तंदुरूस्ती में ही होती है।
कप्तान चाहे मैच हार जाए, परंतु
उसकी निष्ठा तो विजय में ही होती है।
बस, इसी प्रकार श्रद्धा की कमी के कारण,
सत्त्व की कमी के कारण,
उत्साह के अभाव के कारण,
संयोगों की प्रतिकूलता के कारण,
जीवन में चाहे असत्य का आचरण है,

गलत का सेवन है,
असम्यक् का दर्शन है, परंतु हमारी निष्ठा तो सत्य के प्रति ही होनी चाहिए,
शुभ तथा सम्यक् के प्रति ही होनी चाहिए।
क्या तुम जानते हो?
निष्ठा की एक जबरदस्त फलश्रुति यह है कि
मौका मिलने पर,
अनुकूल संयोग मिलने पर वह आचरण में प्रकट हुए बिना नहीं रहती।
क्या तुम्हें लगता है कि धनाढ्यता के प्रति निष्ठा रखने वाला दरिद्र आदमी,
धनवान बनने का मौका मिलने पर भी उसकी उपेक्षा करेगा?
नहीं। धनवान बनने के मौके का वह लाभ उठा ही लेगा और
यदि ऐसा मौका नहीं मिला तो वह खुद होकर ऐसा मौका पैदा करेगा।
बस, मैं तुम्हें यही कहना चाहता हूँ।
चकोर पक्षी चाहे धरती पर होता है, फिर भी उसकी नज़र तो
चाँद की ओर ही होती है, वैसे ही
किसी कमज़ोरी अथवा कमी के कारण तुम्हारे जीवन में
दुष्कार्यों का आचरण जारी हो, दोषों का आचरण जारी हो
फिर भी तुम निष्ठा तो सत्कार्यों और सद्गुणों में ही रखना।
मौका मिलते ही तुम अपने जीवन को
सत्कार्यों और सद्गुणों से सुगंधित बना सकोगे
और यदि निष्ठा की पराकाष्ठा होगी तो
सत्कार्यों के सेवन और सद्गुणों के प्रादुर्भाव के लिए
तुम खुद होकर मौके ढूँढने लगोगे।
क्या लिखूँ तुम्हें?
इस जगत् के बहुजनवर्ग की निष्ठा
संपत्ति पर है,
या सत्ता पर!
स्वास्थ्य पर है
या प्रतिभा पर!
स्वजनवर्ग पर है

या मित्रवर्ग पर,
परंतु सत्य पर निष्ठा?
गिनती के लोगों को भी होगी या नहीं इसमें संदेह है।
सत्य पर निष्ठा होना अत्यन्त दुर्लभ है।
मैं चाहता हूँ कि तुम इस दुर्लभ निष्ठा के स्वामी बन जाओ।
जो एक बार इसका स्वामी बन जाता है
उसमें लाखों-करोड़ों रुपये छोड़ देने की ताकत भी पैदा हो जाती है और
स्वयं द्वारा माने गए सत्य को छोड़कर पारमार्थिक सत्य को
पाने का सौभाग्य भी उसे प्राप्त हो जाता है।
क्या तुमने यह वाक्य पढ़ा है? You live only once, Live it right.
तुम्हें एक ही बार जीना है। अच्छी तरह जीओ।
महाराज साहब,
सत्यनिष्ठा क्या देती है
मुझे उसका अनुभव हाल ही में तो हुआ है।
एक ऐसा सत्य मेरे पक्ष में था कि
जो मुझे केवल इस जन्म में ही काम आने वाले 'पदार्थ' को
प्राप्त कराने की क्षमतावाला था
और दुःखद आश्चर्य तो यह था कि मैं उसी सत्य को
अंतिम सत्य मान बैठा था।
जीवन के इतने वर्षों में मैंने इसी सत्य को सम्हालने एवं
विजयी बनाने के प्रयास किये और परिणामस्वरूप मुझे मिले
चिंता और उद्विग्नता,
निराशा और क्लेश,
व्यथा और वेदना,
प्रपंच और शत्रुता,
वैर और विरोध,
आवेश और पीड़ा।
यह तो मेरा परम सौभाग्य था कि मेरे और बड़े भैया के संबंधों में
पैदा हुई कटुता से त्रस्त होकर मैंने आपके साथ पत्रव्यवहार शुरु किया

और जीवन में कभी नहीं सुने ऐसे पारमार्थिक सत्य की ओर
आपने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

''एकबार पूरी दुनिया की उपेक्षा करनी पड़े तो कर देना,
अभिमान चूरचूर हो रहा हो तो होने देना,
करोड़ों की संपत्ति छोड़नी पड़े तो छोड़ देना,
लोकदृष्टि में अपमानित होना पड़े तो हो जाना, परंतु
पारमार्थिक सत्य को छोड़ने की गलती अथवा मूर्खता तो कभी मत करना।''

इस बात को आपने मेरे मस्तिष्क में
इस हद तक बिठा दिया है कि आज मैं ऐसा कह सकता हूँ कि
प्रलोभनों की भरमार के बीच अथवा
प्रतिकूलताओं के तूफान के बीच भी उस सत्य के प्रति
मेरे लगाव अथवा आकर्षण में जरा-सी कमी नहीं होगी।
अलबत्ता, मन में एक संदेह उठता है कि मुझे रहना है इस संसार में,
जीना है व्यवहार में,
संपर्कों को सम्हालना है,
संबंधों को बनाए रखना है,
समाधि को सुरक्षित रखना है।
यदि मैं सदैव-सर्वत्र ''पारमार्थिक सत्य'' को ही प्रधानता
देता रहूँगा तो ऐसा तो नहीं होगा ना कि
समाज से मैं दूर हो जाऊँगा!
स्वजनों की नज़रों से गिर जाऊँगा!
जगत् जिसे सुख-समृद्धि मानता है उससे मैं वंचित रह जाऊँगा!

महाराज साहब,
आप संयमजीवन अंगीकार करके साधुजीवन जी रहे हैं
इसलिए हमारे संसारीजीवन की मजबूरियों का शायद आपको
पता नहीं होगा, समाज किस हद तक क्रूर बन सकता है,
इसका शायद आपको अंदाज नहीं होगा,
परिवार के सदस्य किस हद तक दुःख दे सकते हैं,

इसकी शायद आपको कल्पना नहीं होगी,
'सत्यनिष्ठ' बने रहकर जीवन जीने में
आस-पास वालों के कैसे ताने सुनने पड़ते हैं
इसका आपको थोड़ा-बहुत भी पता नहीं होगा।

किन्तु, यह वास्तविकता है कि इस वातावरण और इस समाज में
धर्मी होकर जीने के लिए, सदाचरण को टिकाने के लिए,
मूल्यों के प्रति वफादार रहकर जीवन जीने के लिए
विपरीत प्रवाह में सागर तैर जाने की हिम्मत जुटानी पड़ती है।
सीने में ताकत के बिना और पर्वत जैसे मजबूत बने बिना
जहाँ कोई मूल्य की बात भी नहीं की जा सकती,
वहाँ 'मूल्य' को दृढ़ रखने में सफलता मिलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।
आपको शायद लगेगा कि 'यश' पानी में कहाँ बैठ गया?
परंतु अगले पत्र में मैं आपको इस विषय में कुछ नग्न वास्तविकताएँ
बताना चाहता हूँ। वह जानकर आप ही निर्णय कीजिएगा कि यश सच्चा है या झूठा? (क्रमशः)

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2011] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'क्यों करें रात्रि भोजन का त्याग' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 24 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 30 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	कविता लोढ़ा-भदेसर	30
द्वितीय पुरस्कार-200/-	रत्नेश बोहरा-जोधपुर	30
तृतीय पुरस्कार- 150/-	प्रणत धींग-उदयपुर	30
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	वंदना गेलड़ा-भदेसर	30
	दीप्ति जैन-कोटा	29
	भव्यता जैन-सांघीपूरम	28
	आरती तातेड़-जोधपुर	28
	राहुल जैन-इन्दौर	28

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 73)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(निर्ग्रन्थ का स्वरूप)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ साधु के संयम-स्थान कितने होते हैं?

समाधान– चारित्रिक स्थानों की शुद्धि की उत्कर्षता-अपकर्षता के आधार पर बनने वाले स्थान संयम-स्थान कहलाते हैं। निर्ग्रन्थ साधु ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थानवर्ती होने से पूर्ण वीतरागी होते हैं। इनमें चारित्रमोह का लेश मात्र भी उदय नहीं होने के कारण इनके संयम में बिल्कुल भी अन्तर नहीं होता है। अर्थात् सभी निर्गन्थों का संयम-स्थान एक समान ही होता है।

यद्यपि पुलाक, बकुश, प्रतिसेवनाकुशील, कषायकुशील साधुओं के संयम-स्थान असंख्यात-असंख्यात होते हैं। किन्तु इनकी अपेक्षा निर्ग्रन्थ साधु वीतरागी होने से निर्ग्रन्थों में शुद्धि अधिक होती है, इसलिए पुलाकादि से निर्ग्रन्थों का संयम स्थान अत्यधिक विशुद्ध एवं उत्कृष्ट होता है। निर्ग्रन्थ के चारित्र पर्याय पुलाकादि से अनन्त गुण अधिक विशुद्ध होते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ में योग तथा उपयोग कौन-कौनसे होते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थों में 4 मन के, 4 वचन के तथा 1 काया का (औदारिक काय योग) इस प्रकार 9 योग होते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि इन नौ योगों में से किसी एक निर्ग्रन्थ में एक समय में तीन योग ही मिलेंगे। अर्थात् मन के चार योगों में से कोई एक योग, वचन के चार योगों में से कोई एक योग तथा काया का एक औदारिक काय योग, इस प्रकार तीन योग ही मिलेंगे। समुच्चय की अपेक्षा 9 योग कहे जाते हैं।

निर्ग्रन्थों में उपयोग अधिकतम 7 तथा न्यूनतम 4 मिलते हैं। अर्थात् ज्ञानोपयोग में से किसी में दो, किसी में तीन तथा किसी में चार उपयोग मिलते हैं तथा दर्शनोपयोग में से किसी

में दो तथा किसी में तीन उपयोग मिलते हैं। दूसरे शब्दों में मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्याय ज्ञान इन चारों में से दो, तीन, चार ये तीन विकल्प रहते हैं तथा चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन में से दो अथवा तीन दर्शन, ये दो विकल्प मिलते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों में कौन-कौनसे परिणाम पाये जाते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थों में वर्धमान तथा अवस्थित ये दो परिणाम ही पाये जाते हैं। हीयमान परिणाम नहीं मिलता है। इनमें भी विशेषता यह है कि ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थों में एक मात्र अवस्थित परिणाम ही पाया जाता है। अर्थात् जब तक साधु ग्यारहवें गुणस्थान में रहता है तब तक उसके परिणामों में उतार-चढ़ाव बिल्कुल भी नहीं आता है। प्रश्न यह उठता है कि जब ग्यारहवें गुणस्थान में परिणामों में हीनता नहीं आती तो फिर वहाँ से नीचे क्यों गिरता है? इसके समाधान में यही कहना होगा कि परिणामों की हीनता से ग्यारहवें गुणस्थान से नीचे नहीं गिरता- अपितु ग्यारहवें गुणस्थान की उपशम की अन्तर्मुहूर्त की स्थिति पूर्ण हो जाने के कारण नीचे गिरता है।

बारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थों में एक मात्र वर्धमान परिणाम ही पाया जाता है। इनमें हीयमान और अवस्थित ये दोनों ही परिणाम नहीं मिलते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों के वर्धमान व अवस्थित इन परिणामों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति कितनी होती है?

समाधान– निर्ग्रन्थों में वर्धमान परिणाम की स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती है। अवस्थित परिणामों की स्थिति जघन्य एक समय तथा उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की होती है। एक समय की जघन्य स्थिति ग्यारहवें गुणस्थान में आते ही कोई साधु प्रथम समय में ही मरण को प्राप्त हो जाय, उस अपेक्षा से घटित होती है। बारहवें गुणस्थान में मरण नहीं होता, अतः जघन्य स्थिति एक समय न होकर अन्तर्मुहूर्त ही होती है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ साधु निर्ग्रन्थपने को छोड़कर किन-किन स्थानों को प्राप्त करता है?

समाधान– निर्ग्रन्थ साधु निर्ग्रन्थपने को छोड़कर कषाय कुशील, स्नातक अथवा असंयम को प्राप्त करता है।

ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थ उपशमश्रेणि वाला होता है। यदि उस गुणस्थान में अन्तर्मुहूर्त रहकर उस गुणस्थान की स्थिति पूर्ण हो जाने पर नीचे गिरकर दसवें गुणस्थान में आता है तो वह कषायकुशील साधु बन जाता है। यदि ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती साधु अनुत्तर वैमानिक देवों की आयु बान्धा हुआ है तथा उसका ग्यारहवें गुणस्थान में रहते ही वर्तमान की आयु पूर्ण हो जाने के कारण मरण हो जाता है तो वह पाँच अनुतर वैमानिक देवों में जाकर उत्पन्न होता है। अनुत्तर विमान में एक मात्र चौथा ही गुणस्थान होने से वह असंयमपने को प्राप्त कर लेता है।

यदि निर्ग्रन्थ बारहवें गुणस्थानवर्ती है तो अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् वह निश्चित ही तेरहवें गुणस्थान को प्राप्त कर स्नातक पद को पा लेता है। अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ग्यारहवें गुणस्थान से नीचे गिरने पर कषाय कुशील, ग्यारहवें गुणस्थान में काल करने पर असंयमपना तथा बारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थ की अपेक्षा वह स्नातकपने को प्राप्त करता है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों में संज्ञा व आहारक-अनाहरकपन किस प्रकार होते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थों में आहार, भय, मैथुन और परिग्रह ये चारों ही संज्ञाएँ नहीं होती हैं। ये अभिलाषा एवं मूर्च्छा भाव से रहित होने के कारण नो संज्ञी कहलाते हैं।

निर्ग्रन्थ साधु अनाहरक न होकर आहारक ही होते हैं। क्योंकि ये रोमाहार तो निरन्तर ग्रहण करते ही रहते हैं, यदा-कदा कवलाहार भी ग्रहण हो सकता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

सूचना

'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के कतिपय आलेख दिसम्बर-2011 की जिनवाणी में प्रकाशित किए गए थे, कुछ आलेख इस अंक में प्रकाशित हैं। सम्भव है कतिपय आलेख आगामी अंक में भी पठनार्थ प्राप्त हों। नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। **-सम्पादक**

युवा-स्तम्भ

Happy New Year का सन्देश

श्री पवन कुमार जैन

हममें गुणों का विकास हो, इसके लिए हमारे सामने 'नववर्ष' उपस्थित है। सभी जानते हैं कि हम सभी अपने चिर परिचितों को बधाई के रूप में Happy New Year कहते हैं। लेकिन गहराई से कभी हमने इन शब्दों पर विचार नहीं किया। Happy New Year के एक-एक शब्द में हमारे लिए संदेश छुपा हुआ है, जैसे-

(1) H से Humility (नम्रता)- इससे हमें संदेश मिलता है कि हमारे जीवन में नम्रता का गुण होना चाहिए। नम्रता के बिना हमारा जीवन अधूरा है। नम्रता से व्यक्ति चाहे जो सफलता प्राप्त कर सकता है। नम्र व्यक्ति कठोर हृदय को भी पिघला सकता है। अकड़पन मुर्दे की पहचान होती है। अतः हमें सभी के प्रति नम्र भाव रखना चाहिए। क्योंकि जो काम धन से नहीं होता, वह नम्रता से हो जाता है।

(2) A से Ambition (महत्त्वाकांक्षा)- अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महत्त्वाकांक्षा बहुत जरूरी है। आध्यात्मिक क्षेत्र हो या सांसारिक क्षेत्र, दोनों ही क्षेत्रों में महत्त्वाकांक्षा होनी चाहिए। क्योंकि महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति ही पुरुषार्थ कर सकता है। बिना रुचि के कोई कार्य नहीं होता। अतः अपने आपको हीन नहीं मानते हुए, अपने आपके प्रति सकारात्मक भाव रखते हुए आगे बढ़ेंगे तभी हमारी महत्त्वाकांक्षा फलीभूत होगी। इस महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में हमें दूसरों का अनादर नहीं करना चाहिए।

(3) P से Patience (धैर्य)- जीवन को सफलता की चरम सीमा पर पहुँचाने के लिए हमारे भीतर धैर्य का गुण होना चाहिए। धैर्य एक बड़ा वरदान है। जो धैर्यवान है, वह अपने आप में एक प्रकार का विजेता होता है। धैर्य से कमजोर को भी बल मिलता है।

(4) P से Peaceful (शांति)- जीवन में सुखी रहने का सरल उपाय है- शांति। अशांत व्यक्ति सदा दुःखी रहता है। उन्नति के लिए शांति आवश्यक है, क्योंकि शांत मस्तिष्क ही विवेक बुद्धि का दूसरा सरल

पहलू है। शांत मन के द्वारा लिया गया निर्णय व्यक्ति को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ा सकता है।

(5) Y से Youth (यौवन)- यौवन का अर्थ है हम विचारों से सदा जवान रहें। विचारों के माध्यम से व्यक्ति जवान या बूढ़ा होता है, यदि सकारात्मक विचार होंगे तो हम उम्र के किसी भी पड़ाव पर हों अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सदा सजग बने रहेंगे। विचारों में यदि नकारात्मक या प्रमादी भाव हैं तो हम जीवन में सफल नहीं हो सकते हैं। क्योंकि प्रमाद या आलस्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हानि पहुँचाने वाला है। प्रमादी व्यक्ति को कितना ही समय या मौका मिल जाए, मगर वह अपनी उन्नति नहीं कर सकता है। कहा भी है-

आलस्य किसी का आदर्श नहीं होता है,
संघर्ष के बिना कभी हर्ष नहीं होता है।
उन्नति का महान् शत्रु है 'प्रमाद' मित्रों,
प्रमादी जीवन के लिए नया वर्ष नहीं होता है।।

(6) N से Noble (कुलीन, उदात्त)- हमने जैन कुल में जन्म लिया है। उसके अनुसार ही हमारे जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति होनी चाहिए, तभी हमारी कुलीनता सुरक्षित रह सकती है। जैन संस्कृति का भारतीय संस्कृति में अपना एक विशिष्ट स्थान है। हमारे पूर्वजों की अपनी एक अलग ही छाप थी। उन्हें कहने की जरूरत नहीं पड़ती थी कि वे जैन हैं, उनका आचरण ही बता देता था कि वे जैन हैं। उनके रात्रि भोजन, जमीकन्द, सप्तव्यसन आदि का त्याग होता था। पर हम कहाँ खो गए? आज हम अपनी जैन संस्कृति को कितना भूल गए? जिन बुराइयों को अन्य लोग छोड़ते जा रहे हैं उन्हीं को हम अपना रहे हैं। इसलिए हमारी साख दिनों दिन घट रही है। अतः नववर्ष में हमें यह संकल्प लेना है कि हमें हमारी कुलीनता को बचाना है।

(7) E से Earnest (गम्भीरता)- सफलता की नींव है अपने लक्ष्य एवं कर्त्तव्य के प्रति गम्भीरता। जो गम्भीर होता है वह प्रयत्नशील होता है। चाणक्य ने कहा है- 'अप्रयत्नात् कार्यविपत्तिर्भवति' अर्थात् प्रयत्न न करने से कार्य बिगड़ जाता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि गम्भीरता पूर्वक निर्णय लेना और फिर उस निर्णय पर दृढ़तापूर्वक कायम रहना, सफलता का एक प्रमुख आधार स्तम्भ है। अतः नववर्ष में हम अपने

कर्तव्य एवं लक्ष्य के प्रति गम्भीर बनें।

(8) W से Winner (विजेता)- सदा विजेता रहें। यहाँ विजेता का अर्थ है अपने विचारों में सदा विजेता बने रहें। जीवन में एक दो असफलता से अपने भावों को निर्बल मत करो। यह सकारात्मक सोच का आधार है। आत्म-विजय के मार्ग में प्रत्येक व्यक्ति स्वाधीन है।

(9) Y से Yesterday (बीता हुआ कल)- इसका अर्थ हुआ बीते हुए कल (यानी भूतकाल) से शिक्षा ग्रहण करें एवं वर्तमान का पूरा सदुपयोग करें। जो वर्तमान में जीता है वह वर्धमान बन जाता है।

(10) E से Earn (कमाना)- यहाँ कमाने का अर्थ है हमें सद्गुणों की कमाई करनी है। अधिक से अधिक अपनी योग्यता को बढ़ाना, क्योंकि योग्यता का कोई सानी नहीं होता और न ही इसमें बंटवारा होता है। प्रत्येक मानव में एक विशेषता होती है जो उसे सभी से अलग पहचान देती है। हमें ऐसी विशेषता की पहचान कर उसे विकसित करना है।

(11) A से Acredition (विश्वास)- स्वयं पर आत्म-विश्वास आवश्यक है। आत्म-विश्वास वह गुरु मंत्र है, जिसके बलबूते पर सफलता को हम प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि आत्मविश्वासी व्यक्ति के सम्मुख बाधाएँ सिर झुकाकर खड़ी हो जाती हैं। जो आत्म-विश्वासी नहीं है उसे काल्पनिक बाधाएँ भी भयानक दैत्य की भांति दिखाई देती हैं। वह जीवन भर उनसे भयभीत रहता है और दीन-हीन ज़िन्दगी जीने को विवश होता है। नैतिक दृष्टि से भी उसी पर विश्वास किया जाता है, जिसे स्वयं पर विश्वास हो। जिसे स्वयं पर विश्वास न हो, उस पर दूसरे भी विश्वास नहीं करते। यह सच है कि नैतिक पतन स्वयं से ही होता है। अतः हम आत्म-विश्वासी बनें।

(12) R से Respect (सम्मान)- हम गुणीजनों का सम्मान करें। आज की युवापीढ़ी में यह गुण बहुत कम देखा जाता है। हम अपने आपको सर्वेसर्वा मान लेते हैं। हम वृद्धजनों को एवं उनकी सलाहों को पुराणपन्थी मानकर नज़र अंदाज कर जाते हैं, न ही उनको सम्मान देते हैं। जिसका हमें नुकसान हो रहा है। परिवारों में अलगाव की स्थितियाँ, एकाकी जीवन आदि कई नई परेशानियाँ हमारे सामने आ रही हैं। अतः हम सबके प्रति सम्मान की भावना रखें। 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।' यह

एक कहावत है, जो वास्तविक है। हमें सफलता प्राप्त करने के लिए सहयोग की आवश्यकता होती है। यह तभी मिल सकता है जब हम सभी के प्रति सम्मान की भावना रखें। प्रत्येक व्यक्ति का आत्म-सम्मान होता है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। यदि हम उसके आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाकर उससे सहयोग की अपेक्षा रखें तो यह हमारी सबसे बड़ी भूल होगी। अतः सभी को सम्मान देना चाहिए।

इस प्रकार Happy New Year के प्रत्येक अक्षर का संदेश हमारे जीवन में नई ऊर्जा एवं नई रोशनी प्रदान कर सकता है।

रहा होगा अतीत, विषाद हर्ष का,
पथ हो प्रशस्त अब भविष्य के उत्कर्ष का
वर्तमान में जीनें का संकल्प लेकर,
करें स्वागत 'अभिनंदन' नव वर्ष का।।

-द्वारा-सपना टाइपिंग एवं फोटो कॉपी सेन्टर,
6 यू जी, आदेश्वर टॉवर, तीसरी चौपासनी रोड़, जोधपुर (राज.)

हम भोजन में जूठा नहीं छोड़ते

श्री आर. प्रसन्नचंद चोरडिया

शायद आपको मालूम न हो कि आपके आस-पास की बस्तियों में ऐसे लोग भी बसते हैं जिनको एक वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता है। जो जूठा खाना आपने फेंका है उससे वे अपनी भूख मिटा सकते हैं। मगर आपने तो इस खाने को इस लायक भी नहीं छोड़ा कि वह किसी को दिया जा सके। किसी को खिलाया जा सके और उससे किसी की भूख मिटाई जा सके। यह अन्याय नहीं तो और क्या है? कृपया ऐसा अन्याय नहीं करें और कड़े शब्दों में कहें तो ऐसा अत्याचार नहीं करें।

कृपया आप ऐसा अत्याचार नहीं करें,
आप अपने खाने में जूठा न छोड़ा करें।

आप अपने परिवार के सदस्यों को तो इतना सभ्य अवश्य बनायें कि वे भोजन में जूठा नहीं छोड़ें। और आप गर्व से कह सकें कि- हम भोजन में जूठा नहीं छोड़ते, समाज के बने नियम को नहीं तोड़ते।

-52, कालाथीं पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

बाल-स्तम्भ

न्यायप्रिय राजा धर्मशील

श्री एन.एस.आर. मूर्ति

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 फरवरी 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

तक्षशिला के समीप एक आश्रम में गुरु रामतीर्थ अपने शिष्यों को एक कथा सुना रहे थे-

एक समय में करूर राज्य में राजा धर्मशील का राज्य था। उषीनगर उसकी राजधानी थी। राजा धर्मशील अपने नाम के अनुरूप न्यायप्रिय राजा था। वह बुद्धिमान और साहसी राजा था।

उसका प्रधानमंत्री सुबुद्धि उसी के अनुरूप था। राजा के बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों और प्रधानमंत्री की समयानुकूल सलाहों के कारण राज्य का प्रशासन बहुत सुगमता से चल रहा था। राज्य की प्रजा सुख शान्ति से जीवन-यापन कर रही थी।

नगर में एक जाना-माना सुनार था। उसका नाम था रत्नाकर। वह अपने व्यवसाय से लाखों कमा रहा था। उसके पूर्वजों द्वारा कमाई गई धन-संपदा से भी उसे अपना व्यवसाय बढ़ाने में मदद मिली थी। उसके शुरू किये प्रत्येक व्यवसाय में उसे ऐसी सफलता मिली जैसे उसके पास कोई जादुई छड़ी हो। लेकिन उसकी सारी दौलत और सफलता के बावजूद, रत्नाकर बहुत विनम्र आदमी था। वह सभी के साथ मित्रता का व्यवहार करता और जरूरतमंदों की मदद करता था।

एक बार उस राज्य में बहुत लंबे समय तक वर्षा नहीं हुई। फसलें खराब हो गई। उस साल अन्न का उत्पादन बहुत कम हुआ। अकाल की

स्थिति बन गई। राज्य के अन्न के भंडार में जमा पूरा अन्न समाप्त हो गया। लेकिन परेशानी इतने पर ही समाप्त नहीं हुई। राज्य के लोग भूखे मरने लगे। आस-पड़ोस के राज्यों से मदद माँगने का भी कोई परिणाम न निकला।

ऐसे समय में, रत्नाकर ने बहुत दूर के देशों से अन्न खरीदा। फिर उसने वह अनाज अपने देश के लोगों को बहुत कम दामों पर बेचा। गरीब लोगों को उसने कुछ अनाज निःशुल्क बाँटा। इससे लोगों को भुखमरी का सामना करने में मदद मिली। राजा ने एक विशेष समारोह करके रत्नाकर का सम्मान किया और उसकी प्रशंसा की। कुछ दिन बीते। अचानक, राज्य में एक अजीब सी बीमारी ने अपने पैर पसारे।

सारे चिकित्सालय मरीजों से भर गए। राज्य में जितने चिकित्सालय थे, वे सभी मरीजों का ध्यान रखने के लिये नाकाफी थे। रत्नाकर ने फिर से प्रयास किये और अपने पिता के बनावाए अस्पतालों में विशेषज्ञ चिकित्सकों को आमंत्रित किया। उसी ने औषधियाँ खरीदीं और निःशुल्क इलाज की व्यवस्था की। कुछ समय में इस अजीब सी बीमारी पर काबू पा लिया गया।

इस बार, राजा ने न केवल रत्नाकर का सम्मान किया, बल्कि उसे नगर का सर्वश्रेष्ठ नागरिक माना।

उस वर्ष, रत्नाकर द्वारा बेचे जाने वाले आभूषणों की माँग राज्य में और उसके बाहर बहुत बढ़ी। उसने इतना लाभ कमाया जितना उसने कभी सोचा भी न था। रत्नाकर ने अपने पिता की याद में पूरे राज्य के नगरों और गाँवों में सरायें बनवाईं। उसने प्रबन्ध किया कि वहाँ आने वाले राहगीरों को दिन-रात हर समय भोजन मिल सके। ये सरायें जाने-माने पारमार्थिक स्थान बन गए।

लोग रत्नाकर के दान-पुण्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे। उसकी बढ़ती लोकप्रियता के बारे में जानकर राजा ने उसे बुलवाया। उसके दरबार में आने पर प्रधानमंत्री ने उसे बैठने का स्थान दिया। फिर उसने पूछा, "मैंने सुना है कि आप कई सरायें चला रहे हैं। ऐसा लगता है कि आपकी आय काफी बढ़ गई है। क्या आपने पूरे कर चुकाएँ हैं?"

रत्नाकर ने विनम्रता और आत्मविश्वास से उत्तर दिया, "महाराज! मैंने अपनी आय का पूरा विवरण राजस्व विभाग को दिया था और

निर्धारित तिथि से पहले ही अपना पूरा कर चुका दिया था। इन सरायों को मैं अपने विरासत में मिले धन से चलाता हूँ।''

फिर भी,आपको नए नियमों के आधार पर कर चुकाना होगा, प्रधानमंत्री ने कहा। फिर उसने राज्य के खजाने के प्रभारी राजस्व अधिकारी को बुलवाया। उसने उसे बकाया राशि की गणना करने को कहा।

वह राशि इतनी निकली कि रत्नाकर को सुनकर चक्कर सा आ गया। ''महाराज! मुझसे मेरी आय के दुगुने से भी अधिक कर चुकाने को कहा जा रहा है। इतना कर देने के बाद तो मैं इन सरायों को नहीं चला सकता,'' रत्नाकर ने दुःख भरे स्वर में कहा।

तो ठीक है, उन्हें हमारे लिये छोड़ दीजिये। हम उनकी देख-रेख कर लेंगे,'' राजा ने कहा।

''महाराज,'' रत्नाकर ने कुछ कहना आरम्भ किया ही था, पर राजा उसकी बात सुनने के लिये वहाँ न रुका और उठकर चला गया। रत्नाकर असहाय सा वहाँ खड़ा रह गया। प्रधानमंत्री सुबुद्धि ने उसके कंधे थपथपाकर कहा, ''चिन्ता न करें, वे आपके पिता के ही नाम पर चलेंगी।''

और कोई चारा न देखकर रत्नाकर ने एक प्रपत्र पर हस्ताक्षर कर दिये जिसमें लिखा था कि वह सभी सरायों का प्रबन्धन राजा के नाम हस्तांतरित कर रहा है और वहाँ से चला गया। अगले दिन, राजा की ओर से एक घोषणा हुई कि अब से उन सरायों में केवल अपाहिजों के लिये निःशुल्क भोजन मिलेगा।

राज्य के लोग राजा की बुराई करने लगे। लेकिन राजा ने उन बातों पर ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार कुछ समय बीत गया।

एक शाम, एक बूढ़ा आदमी एक विनति लेकर राजा और प्रधानमंत्री के पास पहुँचा। उसने कहना आरम्भ किया, ''महाराज! मेरा नाम धर्मा है। मैं आपके राज्य का नागरिक हूँ। मैं आपके दरबार में काम करके हाल ही में सेवानिवृत्त हुआ हूँ। नौकरी करते हुए मैंने अपने दो बच्चों को अपने वेतन से पाला। अब मुझमें उतनी शक्ति नहीं रही कि स्वयं कमा सकूँ। मैं यह सोचकर उनके पास गया कि अब वे मेरा ध्यान रख सकेंगे। लेकिन उन्होंने कहा कि वे मुझे अपने साथ नहीं रख सकते।''

राजा ने धर्मा के बेटों को बुलवाया और उनसे पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, ''महाराज! हमारे परिवार बड़े हैं। वेतन उनके लिये पर्याप्त नहीं है। घर का खर्च चलाने के लिये हमें उधार लेना पड़ता है।''

राजा ने कुछ देर सोचकर धर्मा को रत्नाकर से मिलने का सुझाव दिया। रत्नाकर ने धर्मा की बात सुनकर कहा, "अपने बेटों से कहो कि मेरे लिये काम करें। मैं उन्हें इस शर्त पर उनकी वर्तमान पगार से दुगनी पगार दूँगा कि वे तुम्हारा ध्यान रखें।" धर्मा के बेटे सहर्ष तैयार हो गए। धर्मा फिर राजा के पास गया, उसे धन्यवाद दिया और लौट गया।

इतनी कहानी को सुनाने के बाद गुरुजी ने शिष्यों से पूछा, "हे शिष्यों! मुझे राजा के व्यवहार पर कुछ शंका हो रही है। उसने रत्नाकर की प्रशंसा की और राज्य के प्रति उसकी सेवाओं के लिये उसे पुरस्कृत किया। लेकिन इसके साथ ही उसने रत्नाकर द्वारा चलाए जा रहे मुसाफिरखानों की व्यवस्था अपने हाथ में ले ली। उसने ऐसा क्यों किया? और फिर, उसने धर्मा को रत्नाकर के पास क्यों भेजा? बुद्धिमान माने जाने वाले उस राजा ने इतनी मूर्खता का काम क्यों किया? इन प्रश्नों के उत्तर तुम में से कौन दे सकता है?"

इस पर विश्वानन्द ने उत्तर दिया-"इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है। प्रजा की भलाई राजा धर्मशील के लिये सर्वोपरि थी। इस कारण उसने अकाल के समय और राज्य में बीमारी फैलने के समय रत्नाकर द्वारा की गई मदद की प्रशंसा की। लेकिन पारमार्थिक सरायों की शृंखला आरंभ करने से पहले रत्नाकर को राजा की सलाह लेनी चाहिये थी।"

"यदि सभी को रोज निःशुल्क भोजन मिल जाए, तो कौन मेहनत करना चाहेगा? अनाज तभी उत्पन्न होगा जब किसान खेती करेगा और कपड़ा तब होगा जब जुलाहा उसे बुनेगा। यदि रत्नाकर इस प्रकार निःशुल्क भोजन देता रहता, तो नौजवान भी मेहनत करके कमाने की आवश्यकता महसूस नहीं करेंगे।"

"राज्य में मेहनत का कोई मूल्य नहीं रहेगा, लोग, विशेषकर युवा आलसी हो जाएँगे। परिणामस्वरूप, वस्तुओं का उत्पादन कम हो जाएगा।"

"राज्य के विकास की गति और उसकी भलाई में परेशानियाँ आएँगी। युवा अनुत्साहित होंगे। उनकी बुद्धि मंद हो जाएगी। कोई भी राज्य उपजाऊ और धनवान तभी रह सकता है जब तक उसके नागरिक अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट काम करते हुए मिल-जुलकर रहें। कुछ अपनी बुद्धि का प्रयोग करें। कुछ अपनी शारीरिक क्षमताओं और हुनर का प्रयोग करें। जब तक वे नियम न तोड़ें, प्रत्येक का अपना एक स्थान

होगा। राजा को लोगों को काम करने और अपने पैरों पर खड़े होने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। यही कारण था कि राजा ने यह निर्णय किया। यह राजा के कर्तव्य के लिहाज से बहुत अच्छा निर्णय था।''

''जहाँ तक धर्मा के बेटों की बात है, राजा स्वयं ही उनका वेतन नहीं बढ़ा सकता था। उसके कार्यालयों और कर्मचारियों के निश्चित वेतनमान होते हैं। उसे पता था कि रत्नाकर उदार व्यक्ति था। इसी कारण उसने धर्मा को इस समस्या के हल के लिये उसके पास भेजा।''

''मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि राजा सच्चा, न्यायप्रिय, और बुद्धिमान था।'' -संकलित

प्रश्नः-

1. रत्नाकर के व्यक्तित्व को 5 पंक्तियों में रेखांकित कीजिए।
2. रत्नाकर से दुगुना कर लेना क्या ठीक था?
3. विश्वानन्द के उत्तर आपको कैसे लगे?
4. इस कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिली?
5. सन्धि-विच्छेद कीजिए- समयानुकूल, रत्नाकर, हस्तान्तरित, अनुत्साहित, चिकित्सालय।
6. अर्थ बताइए- पूर्वज, पारमार्थिक, सेवानिवृत्त, मुसाफिरखाना, हुनर।

(माह नवम्बर-2011 का परिणाम पेज नं. 92 पर प्रकाशित किया गया है।)

हास्य-व्यंग्य क्षणिकाएँ

प्रज्ञामहर्षि राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

उपाय	असर
आपने कल पत्र दिया	डॉक्टर ने रोगी से कहा-
और आज काम हो गया	आप मेरी दवा लीजिए
मैं दो बरस से	दस दिन में आपका
एक काम के लिए मर रहा हूँ	चेहरा बदल जाएगा
रात-दिन	रोगी ने कहा- हजूर!
दफ्तर व घर एक कर रहा हूँ।	आप दवा भले ही
वे बोले-आप,	बीस दिन चलायें।
मैं कहूँ वैसा कर लिया करो	मगर चेहरा इतना बदल जाये कि
प्रार्थना-पत्र पर	मुझसे उधार माँगने वाले
कुछ वजन रख दिया करो।	मुझे पहचान भी न पायें।

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (22)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह दसवी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 फरवरी 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 451 से 500 तक से प्रश्न)

निम्नलिखित पंक्तियों को पूर्ण कीजिए:-

1. जैनत्व के प्रति राजा सम्प्रति के हृदय में.....।
2. बौद्ध ग्रंथों में अशोक का राज्यकाल.....।
3. श्रमणाचार से परिचित कराते हुए उन अनार्य देशों को.....।
4. पुष्य नक्षत्र का.....।
5. यह तुम्हारे एक दिवस के श्रमण जीवन का.....।
6. आर्य श्याम के आचार्यकाल में पुष्यमित्र ने.....।
7. आर्य सुहस्ती अपने शिष्य परिवार सहित.....।
8. अयोध्या के सूर्यवंशी राजा बाहुक पर.....।
9. ऊहापोह करते हुए राजा सम्प्रति को.....।
10. एक समय महाविदेह क्षेत्र में सीमंधरस्वामी.....।
11. इस प्रत्यक्ष अनुभव और प्रमाण से अश्वमित्र की.....।

12. तदनुसार पुष्यमित्र के राज्य में श्रमणों की.....।
13. नन्दी स्थविरावली की मूल गाथाओं के अनुसार.....।
14. प्रायः सर्वत्र यही उल्लेख मिलता है कि आर्य सुहस्ती ने.....।
15. आर्या पोड़णी आदि 300 साध्वियाँ भी.....।
16. मुझे आमरण अनशन पूर्वक साधना.....।
17. किसी ग्रंथ में पुष्यमित्र की जाति के सम्बन्ध में.....।
18. शासनसेवा के कार्यों से जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ.....।
19. भगवान महावीर के निर्वाणानन्तर 300 वर्ष.....।
20. शृगालिनी लहुपान के साथ-साथ मुनि के पैर को.....।

सही मिलान कीजिए:-

1.	आर्य शय्यंभव	-	आर्य लौहित
2.	स्थविर धनाढ्य	-	आर्य यशोभद्र
3.	नक्षत्र	-	स्थविर नागामित्र
4.	शालिशूक	-	सोमशर्मा
5.	आर्य भूतदिन्न	-	हस्ती

Views of Reader

Sh. S.S. Karnavat

I am extremely delighted to see your editorial in 'Jinwani' of the month of December, 2011, Wherein you have very aptly summarized the views of the learned speakers on the subject "Adhyatma, Samaj and Bhrastachar" in the seminar held under the auspicious presence of Acharya Shri Hirachandji Maharaj Sa. On 5 & 6th November at Jodhpur. Further its heartening to note that the views of various speakers have found sufficient space in Jinwani of December, 2011. The views expressed by all the speakers are extremely illuminating and illustrative, which are an eye-opener to the mankind in the present century.

Once again my sincere thanks to you personally for getting an opportunity to read the views of the learned speakers and also hope the same in future.

-Karnavat & Co. Chartered Accountants, 24 Kitab Mahal, Dr. D.N. Road, Mumbai-400001 (Mh.)

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(27 दिसम्बर, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	पीपाड़ शहर में धर्म-प्रभावना कर साथिन होते हुए रतकुड़िया पधारे हैं। यहाँ से होते हुए भोपालगढ़ पधारने की संभावना है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	नोखा से विहार कर पारवा, राशीसर, देशनोक, सिपाणी, भीनासर होते हुए 12 दिसम्बर को बीकानेर पधारे। कुछ दिन यहीं विराजने की सम्भावना है।
तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	आगोलाई से विहार कर शुभम फार्म एवं जोधपुर होते हुए 13 दिसम्बर को भोपालगढ़ पधारे।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 8	:	श्री जैन सिद्धान्तशाला, पावटा विराज रहे हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	गुलाबपुरा (जिला-भीलवाड़ा) सुख शाता पूर्वक विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	सिहोर से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए 12 दिसम्बर को आष्टा पधारे। कुछ दिन विराजकर शाजापुर की ओर विहार संभावित है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	पाली के विभिन्न उपनगरों को फरसते हुए हाउसिंग बोर्ड, पाली पधारे। 28 दिसम्बर को विहार कर घुमटी पधारे हैं, जोधपुर की ओर विहार सम्भावित है।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	बजाज नगर, जयपुर से विहार कर बापू नगर, लालकोठी फरसते हुए रत्न स्वाध्याय भवन, जयपुर विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	बारणी से विहार कर आचीणा होते हुए नागौर पधारे। यहाँ से चिमनाणी, सोयला, मेलाना होते हुए बिराई पधारे हैं, भोपालगढ़ की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	आसोप से कुमारा, नाडसर होते हुए भोपालगढ़ पधारे। कुछ दिन यहीं विराजने की सम्भावना है।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	देई से विहार कर देवली, सरवाड़, नसीराबाद होते हुए अजमेर पधारे। अजमेर कुछ दिन विराज कर थावला, मेड़ता होते हुए 27 दिसम्बर को गोटन पधारे हैं।
सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	आसोप से विहार कर कुमारिया पधारे हैं। भोपालगढ़ की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11	:	स्वाध्याय भवन, चेन्नई में सुख-शांति पूर्वक विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	इन्दौर के विभिन्न उपनगरों में विचरण कर रहे हैं।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	गंगापुर सिटी से विहार कर करौली होते हुए बरगमा पधारे। हिण्डौन सिटी की ओर विहार सम्भावित है।
महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	मेड़ता सिटी से विहार कर पुष्कर, अजमेर, थांवला, मेड़ता होते हुए गोटन पधारे हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.	:	होलनांथा से विहार कर शिरपुर

आदि ठाणा 4	पधारे। कुछ दिन यहां विराज कर अग्र विहार सैंधवा (म.प्र.) की ओर है।
सेवाभावी महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा 4	: पीपाड़ शहर से विहार कर साथिन, रतकुड़िया होते हुए 27 दिसम्बर को भोपालगढ़ पधारे।
व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3	: दूदू से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए जयपुर पधारे। पोरवाल भवन, मानसरोवर विराज रहे हैं।

उपाध्याय प्रवर के बीकानेर में प्रथम पदार्पण पर अपूर्व उत्साह

उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 के बीकानेर में प्रथम पदार्पण से आबाल-वृद्ध सभी धर्माराधन में सन्नद्ध हैं। जब से गुरु भगवंतों का बीकानेर की ओर प्रस्थान हुआ, बीकानेरवासियों का आगमन की सूचना मात्र से रोम-रोम पुलकित हो गया । नोखा मण्डी, देशनोक आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों में जब तक गुरु भगवंतों का प्रवास रहा, समस्त क्षेत्रवासियों ने मुनिप्रवरों के दर्शन, वन्दन एवं प्रवचन का लाभ लिया। 12 दिसम्बर को उपाध्यायश्री गंगाशहर, भीनासर पधारे और स्थानीय लोगों ने कुछ दिन विराजने की पुरजोर विनती की, मगर उपाध्यायश्री ने फरमाया कि बीकानेर में विराजित आचार्यश्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्ती महाश्रमणी रत्न इन्द्रकंवर जी म.सा. का संथारा चल रहा है, अभी वहां बीकानेर सेठिया कोटडी जाने का विचार है, अत: अभी रुकना संभव नहीं है। अगले दिन उपाध्यायश्री बीकानेर सेठिया कोटडी पधारे। अनेक उत्साही लोगों के जय-जयकारों के साथ भव्य प्रवेश हुआ, साथ ही यहां विराजित रमेश मुनिजी म.सा., वीरेन्द्र मुनिजी म.सा. आदि संतों ने आपकी अगवानी करके आगमन की खुशी जाहिर की। मालू कोटडी में सन्थारा समाधि में लीन महासती जी को दर्शन देकर मंगल पाठ सुनाया । तीन दिन सेठिया कोटडी विराज कर मुनि भगवंत सार्दुलगंज स्थित डागा परिवार की भावनाओं का सम्मान करते हुए उनके निवास स्थान पर पांच दिन विराजे। वहां से 20 तारीख को विहार कर रानी बाजार औद्योगिक क्षेत्र स्थित सुराणा स्वाध्याय भवन में पधारे । अभी गुरु भगवंत यहीं पर विराजमान हैं तथा नियमित प्रवचन चल रहा है। लोगों में विशेष उत्साह का

नजारा देखने को मिला, यही कारण है कि मौसम में तो सब जगह फल लगते हैं, लेकिन गुरु हस्ती के अतिशय से बेमौसम में भी फल लग रहे हैं अर्थात अब तक चार अठाईयां, एक नौ की तपस्या और चार, तीन, बेला, उपवास आदि अनेक संख्या में तपस्याएँ जारी हैं। एक बहन के आठ से ऊपर की तपस्या चल रही है। तपस्या की इस रौनक को देखकर लोगों के मुंह से बरबस ही निकल पडा कि मानो सावन-भादवा के साथ चातुर्मास लगा हो।

आगामी पौष शुक्ला चतुर्दशी (आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 102वाँ जन्म-दिवस) तक उपाध्यायप्रवर के बीकानेर विराजने की संभावना से यहाँ विशेष धार्मिक आराधना की तैयारियों का प्रयास अभी से चालू है। मध्याह्न काल में शास्त्र वाचना के साथ हर कोई नूतन ज्ञानार्जन, ज्ञान चर्चा, संत सानिध्य का बढ-चढ कर भाग ले रहा है। दिन भर भक्तों की भीड लगी रहती है। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन जारी है। बीकानेरवासी पूर्ण तन्मयता के साथ किसी भी प्रकार के लाभ उठाने में कसर नहीं छोड रहे हैं।

सम्पर्क सूत्रः- महेन्द्र सुराणा मोबाईल नं. 09413106724, नवीन डागा, मोबाईल नं. 09829250797

वीतराग ध्यान साधना शिविर सम्पन्न

भोपालगढ- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सम्प्रेरणा से उनके आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 17 से 25 दिसम्बर 2011 तक वीतराग ध्यान साधना शिविर भोपालगढ़ के श्री जैन रत्न विद्यालय के सभा भवन में आयोजित हुआ। शिविर में जयपुर, जोधपुर,चेन्नई, बैंगलोर, गंगापुर सिटी, भरतपुर, बीकानेर, गोटन, कानपुर, भोपाल, हुबली आदि 18 क्षेत्रों से 70 साधकों ने भाग लिया, जिनमें 40 श्राविकाएँ एवं 30 श्रावक लाभान्वित हुए। प्रातः 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक आर्य मौन के साथ साधना का जो क्रम चला, वह सबके लिए आनन्ददायी रहा। शिविर संयोजक शान्ता जी मोदी के अनुसार शिविर में ध्यान का अभ्यास तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा एवं श्री संजय जी अग्रवाल ने करवाया। ध्यान शिविर में पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल सुराणा-चेन्नई, श्री नवरतन भंसाली-बैंगलोर, श्री अशोक कवाड़-चेन्नई, डॉ. मंजुला बम्ब-जयपुर, श्री निहालचन्द ढड्ढा, डॉ. रामगोपाल-जोधपुर आदि ने भी पूरे नौ दिन ध्यान साधना की। दोपहर के सत्र में तत्त्वचिन्तक श्री

प्रमोदमुनि जी द्वारा आगमों के आधार पर वीतराग ध्यान साधना की सैद्धान्तिक समीक्षा की जाती थी। इस ध्यान शिविर से सबने शान्ति, प्रफुल्लता एवं ऊर्जा का अनुभव किया। प्राचीन कर्म-संस्कारों को काटने की यह एक अच्छी विधि है। ध्यान साधकों में सेबी के पूर्व अध्यक्ष श्री डी.आर.मेहता ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि यदि इस ध्यान-साधना को सामायिक एवं स्वाध्याय के साथ जोड़ दिया जाए तो इससे आत्मिक उत्कर्ष हो सकता है। यह अपने जीवन के दुःखों को मिटाने की सर्वश्रेष्ठ साधना है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखारमल सुराणा ने कहा कि मुझे इस ध्यान-साधना से परम आनन्द की प्राप्ति हुई है। एक साधक ने कहा कि मुझे इससे अनित्यता का बोध हुआ। साधकों की शंकाओं का समाधान रात्रि में 7.30 से 8 बजे तक होता था। श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा ने प्रत्येक साधक से व्यक्तिगत परिचय कर अनुभूत संवेदनाओं के बारे में जानकारी ली, जिससे साधकों को मार्गदर्शन मिला। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधना से समता पुष्ट होती है, अतः यह सच्ची सामायिक है। इस शिविर का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत हुआ तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ भोपालगढ़ ने आतिथ्य सत्कार का पूरा लाभ लिया।

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण एवं स्नेह-मिलन समारोह 21-22 जनवरी को

जयपुर- अध्यात्मयोगी, युगमनीषी परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से जैन विद्वान्, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं संस्कारवान व्यक्तित्व का निर्माण करने के उद्देश्य से 19 नवम्बर, 1973 को श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान की स्थापना की गई, जिसका नाम अब 'आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान' रखा गया है। इस संस्थान से विगत 38 वर्षों में संघ एवं समाज में चरित्रात्माएँ, जैन विद्वान्, वरिष्ठ स्वाध्यायी, प्रशासनिक अधिकारी, राजपत्रित अधिकारी, सी.ए. एवं सफल व्यवसायी तैयार हुए हैं। यहाँ वर्तमान में 21 विद्यार्थी अपने जीवन-निर्माण हेतु अध्ययनरत हैं। आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण एवं संस्थान के पूर्व एवं वर्तमान छात्रों का स्नेह-मिलन समारोह 21-22 जनवरी, 2012 को आयोजित है। उक्त कार्यक्रम में संस्थान के पूर्व छात्र सहित संघ के सभी महानुभावों से निवेदन है कि वे कार्यक्रम में पधारकर अनुगृहीत करें। आपके पधारने की अग्रिम सूचना प्राप्त होने से

हमें सुविधा रहेगी। **कार्यक्रम स्थलः-** आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान मार्ग, बजाज नगर, जयपुर (राज.) फोन नं. 2710946, विनयचन्द डागा-संयोजक-9314506509, दिलीप जैन-अधिष्ठाता-9460456489

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 22 जुलाई को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 22 जुलाई 2012, रविवार को दोपहर 12 से 3 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि आवेदन-पत्र एवं पाठ्यपुस्तकों की प्राप्ति हेतु शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें। **सम्पर्क सूत्रः-** सुशीला बोहराः-संयोजक-9414133879, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार-9351589694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय-0291-2630490, Email-info@jainratnaboard.com, Website-www.jainratnaboard.com

रात्रि-भोजन त्याग के प्रति पोरवाल समाज में जागृति

सवाईमाधोपुर- सवाईमाधोपुर क्षेत्र में रात्रिभोजन-त्याग का अभियान जोर-शोर से चल रहा है। यहाँ मुणोत भवन में 27 नवम्बर 2011 को पोरवाल संघ के पूर्व मंत्री श्री रतनलाल जी जैन की अध्यक्षता में प्रमुख लोगों की विशेष सभा सम्पन्न हुई, जिसमें इन्दौर से श्री बाबूलाल जी भूरी पहाड़ी वाले तथा श्री जिनेश्वर जी जैन सहित स्थानीय चारो संघ के अध्यक्ष-मंत्री एवं विशिष्ट लोगों ने भाग लिया। सभा का संचालन श्री कुशलजी गोटेवाले ने किया। सभा में श्री बाबूलाल जी कुण्डेरा वाले, पारसचंद जी बोहरा, श्रीचंद जी झण्डेवाले, श्री दौलत जी बजाज, श्री कपूरचन्द जी पटेल, श्री मनमोहन जी चौधरी, श्री राजमल जी चौधरी, श्री नरेन्द्र जी गोयल झण्डेवाला, श्री यशवन्त जी लोहिया, श्री धर्मचन्द जी पान वाले, श्री बाबूलाल जी समीधी वाले, श्री मदनलाल जी करेला वालों ने अपने विचार रखे तथा सभी ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि वे अपने घर-परिवार में आयोजित होने वाले शादी-समारोह सहित सभी भोज दिन में आयोजित करेंगे। इस सभा के अनन्तर इन्दौर में भी पोरवाल समाज की बैठक की गई, जिसमें श्री चौथमल जी जैन आदि सभी गणमान्य महानुभावों की यह राय रही कि पोरवाल समाज में सामूहिक रात्रि-भोज त्याग की महती आवश्यकता है। सवाईमाधोपुर एवं आस-

पास के क्षेत्रों में रात्रि-भोजन के त्याग के सम्बन्ध में संकल्प पत्र भरे जा रहे हैं, जिनमें प्रमुख संकल्प इस प्रकार हैं-

1. मैं एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष.....वर्ष/आजीवन रात्रि-भोजन का त्याग करता हूँ/ करती हूँ।
2. मैं सामूहिक रात्रि भोजन का त्याग करता हूँ/ करती हूँ।
3. मैं सामूहिक रात्रि भोजन के आयोजन का त्याग करता हूँ/ करती हूँ।
4. मैं रात्रि भोजन त्याग के लिए अन्य को प्रेरित व संकल्पित करने में यथेष्ट योगदान दूँगा/दूँगी।

'जैनाचार्य हस्ती फाउण्डेशन' का गठन

हैदराबाद- प्रतिवर्ष 'आचार्य हस्ती सेवा सम्मान' एवं पारमार्थिक कार्य हेतु 'जैनाचार्य हस्ती फाउण्डेशन-हैदराबाद (आ.प्र.) का गठन किया गया। फाउण्डेशन के **अध्यक्ष-** श्री हस्तीमल गुन्देचा, **कार्याध्यक्ष-**श्री तेजराज जैन, **उपाध्यक्ष-**श्री स्वरूपचन्द कोठारी, श्री निर्मलकुमार सिंघवी, श्री सुरेश गुगलिया, श्रीमती अल्का चौधरी, **महामंत्री-**श्री श्रीपाल देशलहरा, **सहमंत्री-**श्री पारस डोसी, **प्रचारमंत्री-** कल्पना सुराणा, सज्जन गाँधी, रिद्धेश जागीरदार, प्रवीण पाण्डया बनाए गए।

महिला आध्यात्मिक चेतना शिविर सम्पन्न

सवाईमाधोपुर शहर स्थित महावीर भवन में महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के पावन पदार्पण पर 5 दिवसीय "महिला एवं बालिका आध्यात्मिक चेतना शिविर" का आयोजन किया गया, जिसमें 110 महिलाओं एवं 15 वर्ष से अधिक उम्र की बालिकाओं ने भाग लिया। जिन्हें महासती श्री इन्दुबालाजी ने रूपी-अरूपी का थोकड़ा, उपयोग का थोकड़ा, सण्णे ठाणे का थोकड़ा, महासती श्री मुदितप्रभा जी ने 25 बोल परिभाषा सहित, महासती श्री देवांगना जी ने सामायिक-प्रतिक्रमण प्रश्नोत्तरी, महासती श्री तितिक्षा जी ने सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण का थोकड़ा का अध्ययन करवाया तथा जलगांव विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी ने उत्तराध्ययनसूत्र के चतुर्थ अध्ययन, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, जयपुर ने देव-गुरु-धर्म के विषय में तथा स्थानीय श्राविका श्रीमती रजनी जी जैन ने चौदह गुणस्थानों का बासठिया के विषय में अध्यापन कार्य किया।

संक्षिप्त-समाचार

नई दिल्ली- श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के जैनदर्शन विभाग एवं इंटरनेशनल स्कूल फॉर जैन स्टडीज के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन न्याय पर दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। परीक्षामुख सूत्र पर आयोजित इस विशिष्ट कार्यशाला में निदेशक डॉ. शुगन जैन तथा प्रो. एस.आर.भट्ट ने जैन न्याय के इतिहास पर प्रकाश डाला। इसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. शशिप्रभा जैन ने की तथा मुख्यातिथि दर्शन संकायाध्यक्ष प्रो. शुद्धानंद पाठक रहे। परीक्षामुख सूत्र का अध्ययन विभागाध्यक्ष प्रो. वीरसागर जैन ने करवाया। संयोजन डॉ. अनेकान्त कुमार जैन तथा डॉ. कुलदीप कुमार ने किया। इस कार्यशाला में देश-विदेश के तीस प्रतिभागियों ने भाग लिया।

जलगॉव- आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी म.सा. के पावन निश्रा में 19 जनवरी 2012 को श्री सुदर्शन जी मेहता, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शुचिता जी एवं उनके पुत्र श्री अनेकान्त जी जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करेंगे।

जयपुर- धर्मपरायण, उग्र तपस्वी सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी दुगड द्वारा अब तक 24 मासखमण तप पूर्ण किये जा चुके हैं। आप 80 वर्ष की दीर्घ अवस्था में भी चातुर्मास काल में पूज्य संत-सतियों के नेश्राय में रहकर विगत 24 वर्षों से प्रतिवर्ष निरंतर मासखमण तप की उग्र तपस्या पूर्ण करते आ रहे हैं। इस वर्ष परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के पावन नेश्राय में नागौर (राज.) में आपने 24 वाँ मासखमण तप पूर्ण किया है। मासखमण की तपस्या में भी आप प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करना, सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पौषध व्रत आदि की विभिन्न धर्माराधनाएँ नियमित रूप से करते आ रहे हैं।

उदयपुर- 11 दिसम्बर, 2011 को श्री राम वाटिका, आलोक संस्थान में सम्पन्न श्री गणेश गुरु ज्ञान गंगा महोत्सव में श्री गणेशमुनि शास्त्री का नागरिक अभिनन्दन किया गया तथा उन्हें 'साहित्य दिवाकर' अलंकरण प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुनि जी द्वारा लिखित "आओ जैन श्रावक बनें, समय के शिलालेख, संकल्प के सारथी, महके मन का आंगन, सम्बोधि, सुबह के भूले, सागर और तूफान, प्रीत की परिणति, चरित्र का चमत्कार, फिर खिला बंसत, पुनर्जन्म की अनुभूति" पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

बधाई/चुनाव

डॉ. गोलेच्छा प्रभावशील व्यक्तियों में शामिल

दिल्ली- प्रसिद्ध मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ धर्मनिष्ठ डॉ. महावीर गोलेच्छा का नाम

इण्डिया टुडे ग्रुप के द्वारा अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में शामिल किया गया है। ऐसे लोगों में अन्ना हजारे, राहुल गाँधी, सीएजी विनोद राय, बिहार मुख्यमंत्री नितिश कुमार आदि के भी नाम सम्मिलित हैं। डॉ. गोलेच्छा का नाम राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मस्तिष्क रोग-चिकित्सा एवं स्वास्थ्य नीति अवदान के लिए सम्मिलित किया गया है।

उदयपुर- सुश्री सुरभि पुत्री श्रीमती (डॉ.) चन्दनबाला एवं श्री एस.एल. मारु ने

कृषि अभियान्त्रिकी में महाराणा प्रताप विश्वविद्यालय कृषि एवं अभियान्त्रिकी, उदयपुर से प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। सम्प्रति हैदराबाद में एम.बी.ए. का अध्ययन कर रही हैं। आप प्रो. श्री चांदमल जी कर्णावट की दौहित्री हैं।

जयपुर- श्री एन.के.खीचा (पूर्व आर.ए.एस.) को राजस्थान विश्वविद्यालय

जयपुर से पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है। आपने भगवान महावीर के अर्थशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर जैन अनुशीलन केन्द्र के पूर्व निदेशक डॉ. पी.सी. जैन के निर्देशन में शोध कार्य सम्पन्न किया है।

Views of Reader

Sh. Vijay Singh Paliwal

I have gone through your's Jinvani Dec. issue. It was an in-depth analysis of 'Corruption' and it's impacts on the society.I found this issue of Jinvani very useful for the whole society and feel that it should reach to all politicians and to those also who want "Anna Hazare's Janlokpal Bill". to eradicate corruption from this holy land. We thanks and pay our respect to Acharya Shree Heera Chandra Ji Maharaj,for initialising for such seminars and programs for the society. Thank to you too and your entire team for conducting such programs for the betterment of the society.

-India Against Corruption,
'Aangan', Paliwal Compound, Chhawani,Kota-324007

श्रद्धाञ्जलि

राजाजी का करेड़ा- मेवाड़सिंहनी महासती श्री यशकंवर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री प्रेमकंवर जी म.सा. का देवलोकगमन हो गया।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री खेतमल जी लुणावत पुत्र स्व. श्री सुगनचन्द जी

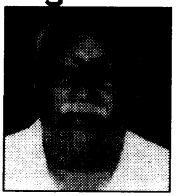

लुणावत का 74 वर्ष की वय में 19 दिसम्बर 2011 को देहावसान हो गया। आपके पिछले 15 वर्षों से रात्रिभोजन त्याग था। आप नियमित रूप से चार सामायिक, संवर साधना, अष्टमी व चतुर्दशी को एकाशन करते थे। आपने शीलव्रत अंगीकार किया था। आपके भ्राता श्री मूलचन्द जी लुणावत संघ के सह-कोषाध्यक्ष रहे हैं एवं दामाद श्री वीरेन्द्र जी भंसाली श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष रहे हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

बैंगलुरु- संघनिष्ठ,समर्पित युवारत्न श्री विनोदकुमार जी डोसी सुपुत्र श्री

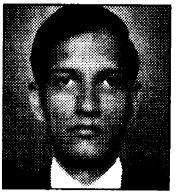

हुक्मीचन्द जी डोसी का 16 नवम्बर, 2011 को अल्पवय में आकस्मिक निधन हो गया। आप श्री जैन रत्न युवक परिषद् बेंगलूरु शाखा के मंत्री पद को सुशोभित कर रहे थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर चातुर्मास में तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के नागौर चातुर्मास में आप अपने भ्राता श्री संतोष कुमार जी डोसी के साथ गुरु दर्शन एवं प्रवचन श्रवण हेतु उपस्थित हुए थे। बैंगलुरु के सन् 2004 के चातुर्मास में आपने संघ-सेवा और विहार सेवा में विशेष लाभ लिया था। महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सन् 2009 के शांतिनगर बैंगलूरु चातुर्मास एवं विचरण प्रवास में श्री डोसी जी की सेवाएँ अनुकरणीय रहीं। आपकी स्मृति में 18 नवम्बर को लुणावत जैन स्थानक में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

नारनौल- सुश्रावक श्री पारसमल जी वैद का 18 अक्टूबर 2011 को आकस्मिक

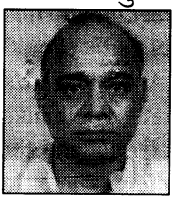

निधन हो गया। आप एक धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी होने के साथ सदैव हँसमुख रहने वाले व्यक्ति थे। आप नारनौल श्री एस.एस.जैन सभा के उपाध्यक्ष पद पर आसीन थे तथा समाज सेवा व धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहते थे। साधु-सन्तों की सेवा करने में सदैव तत्पर रहते थे। आप धर्मनिष्ठ एवं सेवाभावी परिवार छोड़कर गए हैं।

हिण्डौन- कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक श्री निरंजनलाल जी पुत्र स्व. नत्थीलाल जी जैन

(मूल निवासी ग्राम ढिंढ़ोरा) का 20 नवम्बर 2011 को 61 वर्ष की आयु में परलोकगमन हो गया। आप एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। वर्तमान में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हिण्डौन के अध्यक्ष पद पर आसीन थे। आपने समय-समय पर सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को सहयोग किया। आप नित्यप्रति एक सामायिक करते थे।

मदनगंज- धर्मानुरागी श्रमणोपासक श्री जब्बरसिंह जी बरड़िया सुपुत्र स्व. श्री

रामसिंह जी बरड़िया (रूपनगढ़ वाले) का 3 दिसम्बर 2011 को देहावसान हो गया। आप विनम्र, सरल, शांत, शीलव्रती सिद्धांतशील, सहनशील आदि कई श्रेष्ठ गुणों से युक्त सुश्रावक थे। आप रूपनगढ़ श्री संघ, छात्रावास के अध्यक्ष पद का कार्य देख रहे थे। संत-दर्शन एवं सेवा हेतु आपकी उत्कृष्ट भावना रहती थी। आपके मरणोपरान्त नेत्रदान किए गए।

मदनगंज-किशनगढ़- सुश्रावक श्री रूपचन्द जी मोदी सुपुत्र श्रावकरत्न श्री

बादरमल जी मोदी का 28 नवम्बर 2011 को स्वर्गलोक गमन हो गया। आपने इसी पर्युषण पर्व में सजोड़े अठाई तप की आराधना की एवं निधन से पूर्व आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. की शिष्या रुचिता जी म.सा. के श्रीमुख से 15 कर्मादान, 18 पापस्थान के त्याग एवं शीलव्रत की आराधना के व्रत नियम ग्रहण किये। आपकी देव, गुरु, धर्म एवं संघ के प्रति अटूट आस्था थी।

हनुमानगढ़- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती लज्जादेवी धर्मपत्नी श्री बहादुरचंद जी जैन का 74 वर्ष की आयु में 28 नवम्बर 2011 को लुधियाना में देहावसान हो गया। आप संयमी आत्माओं की सेवा में समर्पित महिला रत्न थीं।

जोधपुर- सेवानिष्ठ एवं कर्मठ सुश्रावक डॉ. महावीर चन्द जी पारख सुपुत्र स्व. श्री

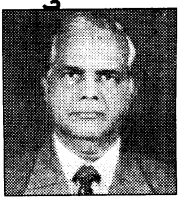

मिश्रीमल जी पारख का स्वर्गारोहण 13 दिसम्बर, 2011 को हो गया। आप एस.एन. मेडिकल कॉलेज के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष रहे तथा जोधपुर के मथुरादास अस्पताल के अधीक्षक रहे। आप आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के अनन्य भक्त थे एवं साधु-संतों के प्रति सेवाभाव में तत्पर रहते थे। आपकी माताजी

श्रीमती सूरजकंवर जी पारख तपस्वी हैं तथा मासखमण के साथ अठाई आदि तपस्याएँ भी कर चुकी हैं।

शिरपुर- संघ-सेवी, वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्राविका श्रीमती बदाम बाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाबचन्द जी चोरडिया का 12 अक्टूबर 2011 को तीन दिवसीय संथारे सहित समाधिमरण हो गया। त्यागी-वैरागी संत-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आपने 20 साल तक स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रेरणा से आप सदैव गुरु भगवन्तों के चरणों में उपस्थित होकर उनसे त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर साधनामय जीवन जीने में अग्रणी रहती थीं। आप प्रतिदिन सामायिक साधना की आराधना करती थीं।

जयपुर- सन्तसेवी, वीरमाता श्रीमती मीमकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मदनराज जी

सिंघवी का स्वर्गवास 96 वर्ष की उम्र में 12 दिसम्बर 2011 को हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपने अपने पूरे परिवार को धार्मिक संस्कार दिए। आपके सुपुत्र श्री शीतलराज जी ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। आप नित्य सामायिक, स्वाध्याय, संवर आदि करती थीं। आपने अपने जीवनकाल में तीन, पाँच, आठ, नौ, दस की तपस्याएँ कीं। तीस वर्ष की लघुवय में आजीवन चौविहार का त्याग कर दिया। आपका पूरा परिवार धर्म-ध्यान के साथ समाज को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

कोटा- समाजसेवी श्री सूरजमल जी जैन (सुनारीवाले) का 81 वर्ष की आयु में 28

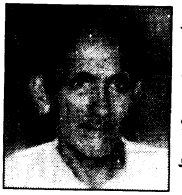

नवम्बर, 2011 को परलोकगमन हो गया। आपका जीवन धर्मपरायणता, सरलता, मधुर व्यवहार एवं सहजता से परिपूर्ण था। हँसमुख स्वभाव एवं मधुरवाणी के गुण से आप सभी के प्रिय थे एवं धार्मिक व सामाजिक कार्यों में सदैव तत्पर रहते थे।

समीधि-बून्दी- सुश्रावक श्री भंवरलाल जी सुपुत्र स्व. श्री राजमल जी जैन का

स्वर्गवास 11 अक्टूबर 2011 को 79 वर्ष की उम्र में हो गया। आप नित्य सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आजीवन शीलव्रत धारण करने के साथ आप जीव दया प्रेमी थे। रत्नवंश के प्रति आपका जीवन पूर्णतः समर्पित था। आप महासती श्री वृद्धि प्रभा जी के सांसारिक ताऊजी थे।

सिरसा- दयालु हृदय, धर्मशील सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन 'नाहटा' सुपुत्र लाला कृपाराम जैन का 72 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप मृदुभाषी होने के साथ अल्पभाषी भी थे। आप एस.एस. जैन सभा, सिरसा के प्रधान रह चुके हैं। आप श्रमणसंघीय आचार्य भगवन्त श्री शिवमुनि जी के सांसारिक फूफा थे।

सुलतानपुर लोधी- श्रीमती सुनीता जी जैन का 26 नवम्बर 2011 को 50 वर्ष की उम्र में अचानक हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया। आप बहुत मिलनसार, सरल-स्वभावी तथा धार्मिक विचारों वाली श्राविका थीं।

जोधपुर- सरल स्वभावी सुश्रावक श्री प्रकाशमल जी पुत्र स्व. श्री जसवन्तराज जी ललवाणी का 29 नवम्बर, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप मृदुभाषी, सेवा भावी, नेक और निर्भय व्यक्तित्व के धनी थे। आप प्रतिदिन सामायिक करते थे। आपका जीवन सदैव संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा।

बाबई- सुश्राविका श्रीमती बजरंगी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामदेव जी जैन का 85 वर्ष की वय में प्रत्याख्यान सहित 16 दिसम्बर 2011 को निधन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक एवं रात्रि भोजन का त्याग, नवकारसी एवं कई प्रत्याख्यान करती थीं। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज सा एवं समस्त संत सती वृंद के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपने अपने जीवन में वर्षी तप, पन्द्रह, अठाई, पचोले, तेले एवं बेले की तपस्याएँ कीं।

बालोतरा- श्रीमती भाग्यवन्ती देवी धर्मपत्नी श्री नेनमल जी श्रीश्रीमाल का 16 दिसम्बर, 2011 को 68 वर्ष की उम्र में परलोकगमन हो गया। आप नित्य सामायिक करती थीं। आपने जीवन में अनेक व्रत, प्रत्याख्यान किये थे।

बालोतरा- श्री महेन्द्रकुमार जी सालेचा सुपुत्र स्व. श्री मोहनलाल जी सालेचा (खेड़ावाला) का 25 दिसम्बर, 2011 को 52 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आपने आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री के बालोतरा प्रवास पर सेवा का पूरा लाभ लिया। आप अपने पीछे संस्कारी परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

13284 Shri Rajendra S. Jain ji, Dahisar (East), Mumbai (M.H.)
13285 श्री विजय जी दलाल, उपरेली सेहरी नाई, उदयपुरसिटी (राजस्थान)
13286 श्री रमेशचन्द जी जैन, प्लॉट नं. 56, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.)
13287 श्री कमलेश कुमार जी जैन, न्यू सांगानेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13288 Shri P. K. Jain ji, Malavia Nagar, Jaipur (Rajasthan)
13289 श्रीमती मोनिकाजी जैन, गीता नगर, नई आबादी, होशियारपुर (पंजाब)
13290 श्रीमती सोनिलाजी जैन, सदरबाजार, सुल्तानपुरलोधी,कपूरथला(पंजाब)
13291 श्री प्रसन्नराज जी जैन, तनखुशल रोड़, अहमदाबाद (गुजरात)
13292 श्री धर्मेन्द्रराज जी सिंघवी, किलवनी नाका, सिलवासा (दादर हवेली)
13293 श्री आचार्य कलाप्रभसागरसूरि जी,साकर बाजार,अहमदाबाद (गुजरात)
13294 Shri Suresh Kumar ji Bhurat, Naguar (Rajasthan)
13295 Shri Harikishan ji Sharma (Nepalwala), Naguar (Raj.)
13296 Shri Vinod Kumar ji Roah, Bikaner (Rajasthan)
13297 श्री प्रवेश जी जैन, मिश्री मौहल्ला, शहर सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13298 श्री पी. सी. गंगवाल जी, बरकत नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13299 Shri M. Kanak Raj ji Bamboli, SECUNDERABAD (A.P.)
13300 Shri RameshChand ji Bohra,Kamareddy,Nizamabad(A.P.)
13301 Shri Jagdish ji Chopra, Tardeo, Mumbai (M.H.)
13302 Shri Risbha Kumar ji Jain, Bhiwadi, Distt. Alwar (Raj.)
13303 श्री दिनेश जी कोठारी, आदित्यपुरम्, शमुपुरा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
13304 श्रीमती अनिता जी कोठारी, 103, आदर्श नगर, जयपुर (राजस्थान)
13305 Shri Sumit ji Kataria, Govandi, MUMBAI (M.H.)
13306 Shri Ronak ji Lodha, Nallasopara(E), Thane (M.H.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

5001/- श्री ज्ञानेशकुमार जी, रणजीतसिंह जी मुणोत, नवसारी, स्वर्गीय श्री अंकित जी ज्ञानेश कुमार जी मुणोत की पुण्य-स्मृति में भेंट।

2100/- श्री पी.सी.पारख, जोधपुर, श्रीमती सूरजकंवर धर्मपत्नी श्री मिश्रीमल जी पारख के द्वारा 92 वर्ष के उम्र में मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया (न्यायाधीश-कोटा), कोटा सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रतनलाल जी, रविकान्त जी जैन (एण्डवा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. शशिकान्त जी का शुभविवाह दिनांक 19 नवम्बर, 2011 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुभाष कुमार जी, अशोक कुमार जी, राजकुमार जी, मनोज कुमार जी बरड़िया, मदनगंज-किशनगढ़, श्रीमान् जब्बरसिंह जी सुपुत्र स्व. श्री रामसिंह जी बरड़िया (रूपनगढ़ वाले) का 03 दिसम्बर 2011 को आकस्मिक स्वर्गवास हो

जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री अरविन्द कुमार जी, अजीत कुमार जी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, श्रीमान् रूपचन्द जी सुपुत्र श्री बादरमल जी मोदी का दिनांक 28 नवम्बर 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

551/- श्री नेमीचन्द जी (भ्राता), रमेशचन्द जी, पदमचन्द जी, मनोज कुमार जी (सुपुत्र) एवं समस्त परिवारिकजन बजाज खाना-कोटा, पूज्य श्री सूरजमल जी जैन (सुनारी वाले) का 28 नवम्बर 2011 को 81 वर्ष की आयु में परलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री जगदीश प्रसाद जी, चन्दन कुमार जी जैन (सुमेरगंज मंडी वाले), कोटा, चि. कपिल कुमार जी का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रमेशचन्द जी, दुलीचन्द जी जैन, पारसचन्द जी, बुद्धिप्रकाश जी एवं बच्छराज जी जैन (समिधि वाले), आवासनमंडल-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री भंवरलाल जी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

501/- श्री महावीर प्रसाद जी पारसचन्द जी जैन, बाबई-जिला-बूंदी, अपनी पूज्य माताजी श्रीमती बजरंगी देवी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, मानसरोवर-जयपुर सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती निर्मला भण्डारी धर्मपत्नी श्री महावीरचन्द जी भण्डारी, जोधपुर, अपने पुत्र चि. आदेश्वर का शुभ विवाह सौ. का. निधि के संग 18 दिसम्बर, 2011 को संपन्न होने की खुशी में।

500/- डॉ. नीतू ओस्तवाल धर्मपत्नी डॉ. राकेश ओस्तवाल, जोधपुर, अपने नवनिर्मित गृह प्रवेश पर शांति जाप कराने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री कमलकिशोर जी, पीयूष कुमार जी, ध्वज कुमार जी कटारिया, रायपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन व प्रवचन श्रवण के लिए सपरिवार उपस्थित होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री चम्पालाल जी, संतोष कुमार जी, विजयराज जी बोरून्दिया, चेन्नई, पूज्य महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई चातुर्मास में (एक कदम धर्म की ओर की) सुन्दर सफलता के उपलक्ष्य में।

500/- श्री गौतमचन्द ओस्तवाल, बैंगलोर, अपनी पुत्री दीपिका का शुभविवाह चि. अनुपम सुपुत्र श्री विनोद जी सुराणा के संग 30 नवम्बर, 2011 को सम्पन्न होने एवं डांगियावास में आचार्यप्रवर के दर्शनलाभ लेने पर भेंट।

500/- श्रीमती रतनदेवी जी सालेचा, जोधपुर, अपने पुत्र सुन्दरलाल जैन के पौत्री के जन्म के उपलक्ष्य में भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

11111/- श्री अजीतराज जी कर्णावट, जोधपुर, संघ सहायतार्थ

2100/- श्री जितेन्द्र जी जैन, जोधपुर, संघ सहायतार्थ

2100/- श्री नौरतनमल जी कुशलचन्द जी मेहता, जोधपुर, पल्लीपट निवासी श्री राजेन्द्र जी मेहता की सुपुत्री सौ. कां. आरती का शुभविवाह चित्तूर निवासी श्री कन्हैयालाल जी फूलफगर के सुपुत्र चि. विशाल के संग 11 दिसम्बर, 2011 को सानन्द संम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

50000/- श्री आशीष जी चौधरी, मुम्बई, मंडल से प्रकाशित पुस्तक उत्तराध्ययन सूत्र हिन्दी भावार्थ के पुन: प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग।

30000/- श्री संदीप जी भाण्डावत, श्रीमती किशोरबाई जी सिंघवी एवं पारिवारिकजन, जोधपुर, मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'कुलक कथाएँ' के पुन: प्रकाशन हेतु श्रीमान् (डॉ.) सम्पतसिंह जी भाण्डावत की स्मृति में आर्थिक सहयोग।

21000/- श्री संदीप जी भाण्डावत, श्रीमती किशोरबाई जी सिंघवी एवं पारिवारिकजन, जोधपुर, मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'रत्नसंघ के धर्माचार्य' के पुन: प्रकाशन हेतु श्रीमान् (डॉ.) सम्पतसिंह जी भाण्डावत की स्मृति में आर्थिक सहयोग।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

1100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, आजादनगर, भीलवाड़ा, पर्युषण सहायता हेतु।

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त सहायता

1101/- श्री रतनलाल जी रविकान्त जी जैन एण्डवा वाले, सवाईमाधोपुर, श्री सौभाग्यमल जी जैन गाडोली वाले व बजरिया सवाईमाधोपुर, उनके पुत्र श्री शशिकान्त जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई को प्राप्त पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
15000	तिरुवनमल्लै	11000	पल्लीपट	5555	आरकाट
5501	शिवाकाशी	5101	मिरसाहिबपेठ	5100	कलिकट
3100	नुगम्बाकम	3100	श्रीकालाहस्ती	3100	पाड़ी
3100	वैलाचेरी	3100	छेयर	3000	कृष्णगिरी
2500	उत्तरामैयुर	2100	चिदम्बरम	2100	कोलिडम
2100	क्रोमपेट	2100	नेलीकुप्पम	2100	होसुर
2100	चुल्लईमेडु	2000	टिण्डीवनम	2000	गुडवान्चेरी
1101	उलुन्दुरपेठ	1100	पेरम्बाकम	1100	कदम्बातुर
1100	चितुर				

आगामी पर्व

माघ कृष्णा 4	शुक्रवार	13.01.2012	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 78 वाँ जन्म-दिवस
माघ कृष्णा 8	सोमवार	16.01.2012	अष्टमी
माघ कृष्णा 14	रविवार	22.01.2012	चतुर्दशी, पक्खी
माघ शुक्ला 8	मंगलवार	31.01.2012	अष्टमी
माघ शुक्ला 14	सोमवार	06.02.2012	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन कृष्णा 8	बुधवार	15.02.2012	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14	सोमवार	20.02.2012	चतुर्दशी

श्री मोहनलाल जी मूथा

बधाई/चुनाव

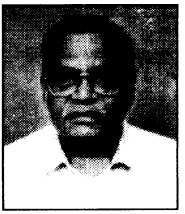

श्री विमल चन्द जी डागा

जयपुर : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ जयपुर की कार्यकारिणी 2012-14 के चुनाव श्री आर. सी. शाह चुनाव अधिकारी की देखरेख में दिनांक 31.12.2011 को सम्पन्न हुये। जिसमें निम्न पदाधिकारियों व सदस्यों को सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया।

01. श्री मोहनलाल जी मूथा	-	अध्यक्ष
02. श्री विमल चन्द जी डागा	-	संघ मंत्री
03. श्री सुरेश चन्द कोठारी	-	संयुक्त संघ मंत्री
04. श्री अशोक कुमार सेठ	-	कोषाध्यक्ष

सदस्य : श्री विनयचन्द जी बम्ब, श्री सरदार सिंह जी बोथरा, श्री अशोक जी रांका, श्री सुरेन्द्र कुमार जी महता, श्री प्रकाशचन्द जी जामड़, श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा, श्री प्रमोद जी लोढा, श्री विनय कुमार जी कोठारी, श्री विरदराज जी सुराणा, श्री सुरेश जी जैन, श्री प्रकाशचन्द जी हीरावत।

जैन छात्रों के लिए चेन्नई में आवास-व्यवस्था

जो प्रतिभाशाली जैन छात्र चेन्नई में रहकर अपना अध्ययन करना चाहते है, उनके लिए चेन्नई महानगर में आवास-व्यवस्था की गई है।

कमजोर वित्तीय स्थिति वाले उन धर्मनिष्ठ मेधावी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है जो अपने जीवन में अच्छा पढ़-लिखकर संघ-समाज, देश व जिनशासन की सेवा के साथ अपने जीवन को सजाना चाहते है। चयन में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा अन्य धार्मिक जानकारी व योग्यता रखने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी। पारिवारिक, शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक और अन्य आवश्यक तथ्यों के साथ पूर्ण विवरण सहित निम्न पते पर आवेदन करें। आधे-अधूरे आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

Dr. Dileep Dhing
Surana & Surana International Attorneys
61-63, Dr. Radhkrishnan Salai
Mylapore, Chennai-600004
Phone : 044-28120000/28120002

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती   जयगुरु हीरा   जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845120407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

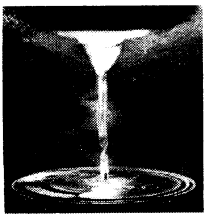
Electric Arc Furnace

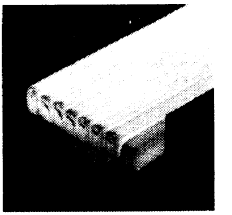
Billets

Rolling Mill

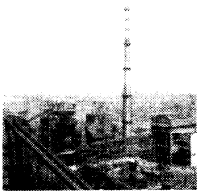
Captive Power Plant

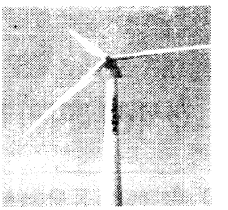
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओ प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनानें के लिए व्रत नियम का पालन अत्यन्त आवश्यक है। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है - **व्रत नियम**। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत नियम को ग्रहण कर सफल बना सकें, इस उद्देश्य के लिए ही अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा "आओ प्रत्याख्यान करें" पुस्तक का प्रकाशन विगत वर्षो से किया जा रहा है। इस वर्ष भी किया गया है। आप अपने क्षेत्र में आओ प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें - **राजकुमार गोलेच्छा,** पाली (9829020742), **मनोज कांकरिया,** जोधपुर (9414563597), **मनीष जैन,** चैन्नई (09543068382/044-42728476)

ज्ञान का दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइये आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाइये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** -

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097),
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729),
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164),
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065),
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597),
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932),
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411),
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जनवरी, 2012 ★ माघ, 2068

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर
से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन